શુભ લાભ

खबरें जो सोच बदल दे

शुभ लाभ DAILY

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

Postal Regd.No. HQ/SD/523/2023-25 | मंगलवार, 18 मार्च, 2025 | हैदराबाद और नई दिल्ली से प्रकाशित | website : https://www.shubhlabhdaily.com | संपादक : गोपाल अग्रवाल | पृष्ठ : 14 | मूल्य-6 रु. | वर्ष-7 | अंक-75

भाजपा ने हमारी गारंटी की नकल की है: सीएम सिद्धारमैया @ नम्मा बेंगलूरु

▶10 पर

खास एजेंडा लेकर बांग्लादेश पहुंचे संयुक्त राष्ट्र महासचिव

ईसाई देश बनाने की गुटरगूं कर रहे गुटेरेस

दक्षिण एशिया के भू-राजनीतिक परिदृश्य को नया आकार देने वाले एक गुप्त कदम में, बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख मुहम्मद यूनुस के साथ मिलकर संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने बांग्लादेश, म्यांमार और भारत के कुछ हिस्सों को काट कर एक अलग ईसाई राज्य स्थापित करने के लिए कदम उठाए हैं। रोहिंग्या शरणार्थियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और उनके वतन में उनकी सुरक्षित वापसी की सुविधा के नाम पर, संयुक्त राष्ट्र कॉक्स बाजार और मौंगडॉ में अड्डे स्थापित कर रहा है। गुटेरेस एक ऐसे अभियान पर बांग्लादेश पहुंचे हैं, जो दूरगामी क्षेत्रीय एजेंडे का एक हिस्सा है। यह एजेंडा है ईसाई देश की स्थापना का, जिसे लेकर बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना बार-बार भारत से कहती

बांग्लादेश, म्यांमार व भारत को काट कर ईसाई देश बनाने का कुचक्र

रहीं और मदद मांगती रहीं, लेकिन मोदी सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया और शेख हसीना का तख्तापलट हो गया। ऐसे ही तख्तापलट की साजिश भारत में थी और यूनुस की तरह राहुल गांधी को तख्त पर बिठाने का कुचक्र चल रहा था, लेकिन फिलहाल कामयाब नहीं हो पाया।

ईसाई देश बन जाने के बाद जॉर्ज सोरोस और डीप स्टेट जैसे वैश्विक पावर-प्लेयर्स द्वारा समर्थित संयुक्त राष्ट्र के वास्तविक उद्देश्य सामने आ जाएंगे। इस कुचक्र से प्रभावित होने वाले देशों के

शुभ-लाभ चिंता

हस्तक्षेप के लिए बहुत देर होती जा रही है। कॉक्स बाजार में संयुक्त राष्ट्र का अड्डा स्थापित करने की प्रक्रिया इस साल के अंत तक शुरू होने की उम्मीद है। गुटेरेस और यूनुस पूरी तरह समझते हैं कि इन शिविरों की स्थापना के पीछे की वास्तविक रूपरेखा तब तक गुप्त रहनी चाहिए जब तक कि अंतिम चरण का खुलासा न हो जाए। वे और डीप स्टेट में उनके समर्थक जानते हैं कि अधिकांश बांग्लादेशी नागरिक संयुक्त राष्ट्र के कदम का

भारतवर्ष को बहुत नुकसान पहुंचाने वाली है मोदी सरकार की चुप्पी

समर्थन करेंगे, क्योंकि वे रोहिंग्याओं की शीघ्र वापसी के लिए उत्सुक हैं।

एक बार जब दोनों ठिकाने स्थापित हो जाएंगे, तो संयुक्त राष्ट्र का असली एजेंडा सामने आ जाएगा, हालांकि तब तक बांग्लादेश, म्यांमार और भारत के लिए हस्तक्षेप करने में बहुत देर हो चुकी होगी। संयुक्त राष्ट्र, जॉर्ज सोरोस और डीप स्टेट के प्रत्यक्ष संरक्षण में, ये ठिकाने टेकनाफ, बांग्लादेश में हिल ट्रैक्ट्स के कुछ हिस्सों, म्यांमार में अराकान राज्य और भारत के कुछ पूर्वोत्तर राज्यों में एक अलग ईसाई राज्य स्थापित करने के लिए लॉन्चपैड के रूप में काम करेंगे। संयुक्त राष्ट्र ढाका कार्यालय के एक अधिकारी ने कहा कि एंटोनियो गुटेरेस के रोहिंग्या शिविरों के दौरे से प्रभावित देशों की खुफिया एजेंसियों के बीच पहले से ही खतरे की घंटी बज जानी चाहिए थी। ▶10 पर

पोलैंड के उप विदेश मंत्री बार्टोस्जेवस्क का अहम बयान

मोदी की वजह से पुतिन ने नहीं चलाए परमाणु हथियार

नई दिल्ली, 17 मार्च (एजेंसियां)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 21वीं सदी के बड़े वैश्विक नेता (स्टेट्समैन) बन कर उभरे हैं। रूस और यूक्रेन के तीन वर्ष तक चले संघर्ष के बीच प्रधानमंत्री मोदी की पहल के चलते लाखों निर्दोष मारे जाने से बचे हैं। इस बात की पुष्टि रूस के पड़ोसी देश पोलैंड ने की है। पोलैंड के मंत्री ने कहा कि पीएम मोदी के चलते ही रूस ने संघर्ष के दौरान परमाणु हथियार नहीं इस्तेमाल किए।

एक प्रमुख समाचार चैनल सीएनएन-न्यूज18 को दिए इंटरव्यू में पोलैंड के उप विदेश मंत्री व्लाडिसलाव टेओफिल बार्टोस्जेवस्क ने कहा, प्रधानमंत्री मोदी की वारसॉ यात्रा बहुत सफल रही। प्रधानमंत्री मोदी ने पुतिन को परमाणु हथियारों का इस्तेमाल ना करने के लिए राजी किया। हम स्थायी शांति चाहते हैं। हम यूक्रेन में स्थिरता और शांति बहाली चाहते हैं। मंत्री

मोदी की पहल के कारण बच गए लाखों निर्दोष

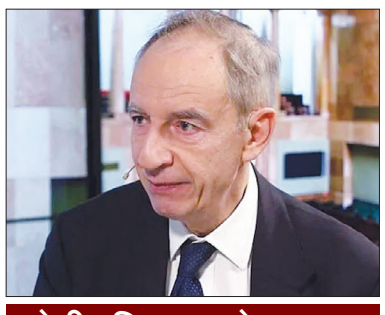

बार्टोस्जेवस्क वर्तमान में भारत की यात्रा पर हैं। याद रहे कि यूक्रेन-रूस संघर्ष के बीच स्थितियां काफी बिगड़ गईं थी और डर था राष्ट्रपति पुतिन परमाणु हथियार भी उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल (आईसीबीएम) लॉन्च करने की पूरी तैयारी कर ली थी। यह मिसाइल काफी घातक होती हैं और हजारों किलोमीटर तक हमला करने में सक्षम होती हैं।

इसके बाद परमाणु हमले का खतरा बढ़ गया था। इस संदर्भ का जिक्र करते हुए पोलैंड के मंत्री ने पीएम मोदी की रूस, यूक्रेन और पोलैंड यात्रा के विषय में बात की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी 21-22 अगस्त को पोलैंड के दौरे पर गए थे। पीएम मोदी का यह दौरा रूस-यूक्रेन संघर्ष की दृष्टि से अहम था। इस दौरान पीएम मोदी यूक्रेन भी गए थे। पीएम मोदी इससे पहले जुलाई 2024 में रूस गए थे। वे राष्ट्रपति पुतिन से मिले थे। इन दोनों बैठकों में पीएम मोदी ने दोनों नेताओं को शांति का प्रयास करने के लिए मनाया था। इस विषय में हाल ही में पीएम मोदी ने इस पहल की आधिकारिक जानकारी सार्वजनिक की है।

▶10 पर

राजनाथ सिंह ने तुलसी गबार्ड के समक्ष उठाया अहम मसला

आतंकी संगठन एसएफजे पर सख्त कार्रवाई करे अमेरिका

नई दिल्ली, 17 मार्च (एजेंसियां)।

अमेरिका की डायरेक्टर ऑफ नेशनल इंटेलिजेंस (डीएनआई) तुलसी गबार्ड की भारत यात्रा के दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अमेरिका में सक्रिय खालिस्तानी संगठन सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे) की भारत-विरोधी गतिविधियों का मुद्दा उठाया। भारत ने इस गैरकानूनी संगठन पर अमेरिका से सख्त कार्रवाई की मांग की है। रक्षा मंत्री ने अमेरिकी प्रशासन से इस मामले में ठोस कदम उठाने का आग्रह किया है।

तुलसी गबार्ड भारत की ढाई दिन की यात्रा पर रविवार तड़के राष्ट्रीय राजधानी आईं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन के किसी शीर्ष अधिकारी की भारत की यह पहली उच्चस्तरीय यात्रा है। सोमवार को, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड ने कई अहम मुद्दों पर चर्चा की। मुलाकात के दौरान रक्षा

अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया निदेशक भारत के दौरे पर

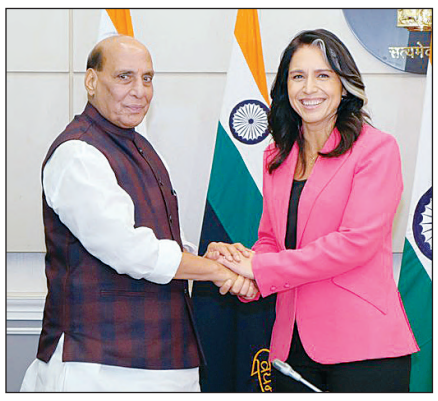

और सूचना साझा करने के क्षेत्रों में भारत व अमेरिका के बीच सामरिक संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। राजनाथ सिंह ने कहा कि उन्हें अमेरिकी राष्ट्रीय खुफिया प्रमुख से मिलकर खुशी हुई और उन्होंने भारत-अमेरिका साझेदारी को और मजबूत बनाने के तरीकों पर चर्चा की। रक्षा मंत्री ने कहा, हमने भारत-अमेरिका साझेदारी को और गहरा करने के उद्देश्य से रक्षा और सूचना साझा करने समेत कई मुद्दों पर चर्चा की।

इससे एक दिन पहले, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजित डोभाल और तुलसी गबार्ड ने रविवार को द्विपक्षीय चर्चा की थी और दुनियाभर के शीर्ष खुफिया अधिकारियों के एक सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। ऐसा माना जा रहा है कि डोभाल और गबार्ड ने आमने-सामने की बैठक में भारत-अमेरिका वैश्विक रणनीतिक साझेदारी के अनुरूप मुख्य रूप से खुफिया जानकारी साझा करने के तंत्र को मजबूत करने और सुरक्षा क्षेत्र में मिलकर काम करने के तरीकों पर चर्चा की।

पीएम मोदी के बयान पर गदगद चीन ने कहा

हाथी और ड्रैगन के बीच सहयोग ही एकमात्र विकल्प

नई दिल्ली, 17 मार्च (एजेंसियां)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले दिनों लेक्स फ्रिडमैन पॉडकास्ट में कई अहम मुद्दों पर बात की थी। इस दौरान उनसे चीन को लेकर भी सवाल पूछा गया था, जिस पर पीएम मोदी ने जो जवाब दिया, वह पड़ोसी देश चीन को काफी पसंद आया है। चीन के मुखपत्र ग्लोबल टाइम्स ने विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता के बयान का हवाला देते हुए पीएम मोदी की जमकर तारीफ की है। पीएम मोदी के बयान को लेकर चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ विंग ने कहा, हम पीएम मोदी के बयान की सराहना करते हैं। उन्होंने भारत-चीन संबंधों को स्थिर और मजबूत बनाने की दिशा में सहयोग जारी रखने की बात कही है। इतना ही नहीं, माओ विंग ने भारत के साथ संबंधों को लेकर कहा कि भारत और चीन को ऐसे साझेदार बनना चाहिए, जो कि एक दूसरे की सफलता में योगदान दें। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के लिए हाथी और ड्रैगन के बीच का सहयोग ही एक सही विकल्प है। चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता ने कहा कि चीन राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ को अवसर के रूप में लेकर भारत के साथ संबंधों को और मजबूत करना चाहता है। उन्होंने कहा कि दोनों देश स्थिर और ठोस विकास की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। ▶10 पर

स्टालिन की भाषाई घृणा पर चंद्रबाबू का करारा जवाब

हिंदी राष्ट्रीय भाषा है, इसे सीखना चाहिए : नायडू

अमरावती (आंध्र प्रदेश), 17 मार्च (एजेंसियां)।

तमिलनाडु में जारी भाषा विवाद के बीच आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री और टीडीपी के मुखिया चंद्रबाबू नायडू ने एमके स्टालिन को बड़ा झटका देते हुए कहा है कि हिंदी भाषा से नफरत नहीं की जानी चाहिए। सीएम ने कहा कि जो लोग अपनी मातृभाषा में पढ़ते हैं, वे दुनिया भर में बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आम धारणा है कि ज्ञान केवल इंग्लिश से ही आता है, लेकिन वे इससे सहमत नहीं हैं।

सीएम नायडू ने विधानसभा में कहा कि लोगों को अपनी मातृभाषा को बनाए रखते हुए काम के लिए कई भाषाएं सीखनी चाहिए। हिंदी सीखने से परस्पर संवाद (कम्युनिकेशन) स्थापित करने में मदद मिलेगी। जापान और जर्मनी जैसे देशों की यात्रा करने वाले लोगों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में उन भाषाओं को सीखने से उन्हें विदेश जाने में आसानी होगी।

अमरावती में विधानसभा को संबोधित करते हुए नायडू ने कहा, भाषा केवल कम्युनिकेशन के लिए होती है। ज्ञान भाषा से नहीं आएगा। केवल वे लोग जो अपनी मातृभाषा में पढ़ते हैं, वे दुनिया भर में बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। मातृभाषा के जरिए सीखना काफी आसान है। इतना नहीं उन्होंने कहा कि मैं आपसे यह बहुत साफ तौर पर कह रहा हूं कि ▶10 पर

बांग्लादेश में हिंदुओं पर प्रताड़ना का दौर जारी

वीएचपी नेता गिरफ्तार, हिंदू प्रोफेसर को बंधक बनाया

ढाका, 17 मार्च (एजेंसियां)।

कपिल कृष्ण मंडल

बांग्लादेश में हिंदुओं की प्रताड़ना जारी है। बांग्लादेश में विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के महासचिव कपिल कृष्ण मंडल को पुलिस ने शनिवार 15 मार्च की रात गिरफ्तार कर लिया। उन पर राजद्रोह और देश विरोधी साजिश करने के गंभीर आरोप लगाए गए हैं। यह गिरफ्तारी बागेरहाट जिले के चितलमारी उपजिला में हुई। कपिल कृष्ण मंडल बांग्लादेश अश्विनी सेवाश्रम के अध्यक्ष भी हैं। पुलिस ने उनके घर पर छापा मारा और दावा किया कि उनके मोबाइल में संदिग्ध बैठकें करने के सबूत मिले, जिसमें देशी-विदेशी एजेंट शामिल थे। चितलमारी थाने के ओसी शाहदत हुसैन ने बताया कि खुफिया जानकारी के आधार पर यह कार्रवाई की गई। उनके मुताबिक, कपिल 5-6 साथियों के साथ मिलकर बांग्लादेश की सुरक्षा को कमजोर करने की साजिश रच रहे थे। उन्हें 2009 के कठोर आतंकवाद विरोधी कानून के तहत गिरफ्तार किया गया। शनिवार को ही कपिल को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें हिरासत में भेज दिया गया। पिछले साल नवंबर में भी इस्कॉन के पूर्व पुजारी चिन्मय कृष्ण दास प्रभु को राजद्रोह के झूठे आरोपों में गिरफ्तार किया गया था। दूसरी तरफ, बांग्लादेश की राजधानी ढाका में ▶10 पर

सर्राफ़ा बाज़ार

(24 कैरेट गोल्ड)

सोना : 90,720/- (प्रति 10 ग्राम)

चाँदी : 1,02,490/- (प्रति किलोग्राम)

मौसम बेंगलूरु

अधिकतम : 37^0

न्यूनतम : 24^0

भारत-न्यूजीलैंड के बीच हुए कई अहम समझौते

आतंकवाद के खिलाफ मिलकर लड़ने की घोषणा

नई दिल्ली, 17 मार्च (एजेंसियां)।

भारत और न्यूजीलैंड के बीच सोमवार को नई दिल्ली में कई अहम समझौते हुए। इस दौरान दोनों देशों के प्रधानमंत्री मौजूद रहे। समझौते के बाद प्रेसवार्ता में बताया गया कि दोनों देशों ने रक्षा साझेदारी को मजबूत और संस्थागत बनाने का फैसला किया है।

प्रधानमंत्री मोदी और न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन दिल्ली में दोनों देशों के बीच हुए कई समझौतों के साक्षी बने। न्यूजीलैंड के पीएम क्रिस्टोफर लक्सन के साथ संयुक्त प्रेस वक्तव्य के दौरान पीएम मोदी ने कहा, मैं पीएम लक्सन और उनके मंत्रिमंडल का भारत में स्वागत करता हूं। पीएम लक्सन भारत से जुड़े हुए हैं। हमने देखा कि उन्होंने हाल ही में होली कैसे मनाई। हमें खुशी है कि उनके जैसा युवा नेता रायसीना डायलॉग 2025 में हमारे मुख्य अतिथि हैं। ▶10 पर

अमेरिका की खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड ने कहा

गीता के उपदेश से शक्ति और शांति मिलती है

नई दिल्ली, 17 मार्च (एजेंसियां)।

अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड ने कहा कि भगवद् गीता में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दी गईं शिक्षाएं उन्हें पूरे दिन शक्ति, शांति और आराम देती हैं। भारत दौरे पर आईं तुलसी ने भगवान श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति और अपनी आध्यात्मिक साधना के बारे में कई बातें कहीं। तुलसी गबार्ड ने कहा, मैं अपने अच्छे और बुरे समय में श्रीमद् भगवद गीता में भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षाओं का अनुसरण करती हूं। भगवान के साथ मेरा व्यक्तिगत संबंध मेरे जीवन का केंद्र है। मैं हर दिन ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीने की पूरी कोशिश करती हूं। ऐसा करने का इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता है कि मैं ईश्वर की संतानों की सेवा करने की पूरी कोशिश करूं।

उन्होंने कहा, मेरे जीवन के अलग-अलग समय में चाहे वह दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में युद्ध क्षेत्रों में सेवा करना हो या फिर आज हमारे सामने आने वाली चुनौतियां हो, मैं भगवद् गीता में अर्जुन को दिए गए कृष्ण के उपदेशों का ही सहारा लेती हूं। वे मेरे सबसे अच्छे और सबसे बुरे समय में मेरे काम आते हैं। ▶10 पर

कार्टून कॉर्नर

शुभ लाभ DAILY खबरें जो सोच बदल दे हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

साहित्यिक गोष्ठी सह होली स्नेह मिलन का आयोजन

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

प्रेरणा महिला साहित्यिक मंच के तत्वावधान में एक साहित्यिक गोष्ठी सह होली स्नेह मिलन का आयोजन रविवार को गूगल मीट पर संपन्न हुआ। इस आयोजन में प्रेरणा लोक मंच एवं प्रेरणा बाल प्रतिभा मंच ने साथ निभाई। कार्यक्रम दो सत्रों में हुआ। प्रथम सत्र में साहित्यिक चर्चा जिसका विषय परीक्षा में उच्च प्राप्तांक के लिए बच्चों पर पड़ता दबाव था। विषय जितना ज्वलंत था उतना ही आवश्यक भी। दूसरे सत्र में काव्य गोष्ठी हुई जिसका विषय होली था। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार भगवती

सक्सेना गौड़ ने की तो बतौर मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार गीता सिन्हा गीतांजलि सादर आमंत्रित थी। बतौर विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार अनीता रश्मि एवं गीता चौबे गूँज सादर उपस्थित रहे। अतिथियों सहित सभा का स्वागत वीणा मेदनी ने किया तो कुशलता पूर्वक संचालन निर्मला कर्ण ने किया। मधु मनमौजी की सरस्वती वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अतिथियों के आशीर्वचन के साथ विषय पर चर्चा शुरू हुई। चर्चा में गीता चौबे गूँज, अनीता रश्मि, मधु मनमौजी, मुकेश कुमार दुर्लभ, वीणा मेदनी, कमल पुरोहित अपरिचित, लता चौहान ने भाग लिया। यह सत्र इतना प्रभाव पूर्ण रहा कि करीब यह सत्र दो घंटे चला। जिसका सार यह रहा कि उच्च प्राप्तांक के लिए बच्चों पर स्कूल/ माता-पिता द्वारा एक दबाव डाला जा रहा है। यह दबाव प्रतिस्पर्धा को लेकर भी तनाव में परिवर्तित हो जाता है।

बच्चे परीक्षा के आते ही तनाव ग्रस्त हो जाते हैं, जो शारीरिक रोग द्वारा भी परिलक्षित हो रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण माता-पिता की तरफ से पड़ता दबाव है। बच्चों में नाकामयाबी के कारण मृत्यु दर आत्महत्या भी बढ़ रहा है जो मानसिक पीड़ा/ यातना को दर्शाता है। सरकार को चाहिए बच्चों के शिक्षा नीति में बदलाव लाए जिससे बच्चों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ अन्य क्षेत्र का भी समुचित ज्ञान प्राप्त हो। दूसरे सत्र के कविता पाठ में रमा बहेड, गीता चौबे गूँज, गीता सिन्हा गीतांजलि, निर्मला कर्ण, भावना तोमर, भगवती सक्सेना गौड़, मधु मनमौजी, वीणा मेदनी, मुकेश कुमार दुर्लभ, खुशबू बरनवाल, अनुराधा के, कमल पुरोहित अपरिचित, शिवालिक अमर कुशवाहा, अनीता रश्मि, लता चौहान, पल्लवी, बृजेंद्र मिश्रा ने भाग लिया।

रियायती दर पर डायबिटीक हेल्थ चेक-अप का आयोजन

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में सोमवार प्रातः शासन माता साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी की तृतीय वार्षिक पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए रियायती दर पर डायबिटीक हेल्थ चेक-अप का आयोजन किया गया।

सर्व प्रथम नमस्कार महामंत्र का सामूहिक उच्चारण करते हुए गुरुदेव द्वारा प्रदत्त ''शासन माता'' के जप से कैम्प की शुरुआत हुई। डायबिटीक हेल्थ चेक-अप के अंतर्गत फास्टिंग ब्लड शुगर, पोस्ट प्रैंडियल ब्लड शुगर, तीन महीने की औसत ब्लड शुगर, लिपिड प्रोफाइल- कोलेस्ट्रॉल, सिरम क्रिएटनीन, इलेक्ट्रो कॉर्डियोग्राम जांच सम्मिलित किए गये। इस कैम्प से 47 सदस्य लाभान्वित हुए। तेयुप सदस्यों द्वारा उपस्थित लाभार्थियों को एटीडीसी श्रीरामपुरम द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाएं एवं विशेषज्ञ डॉक्टरों की उपलब्धता से अवगत कराया गया। सभी लाभार्थियों ने एटीडीसी द्वारा किए जा रहे हैं काम की सराहना की। शिविर को अर्थ सहयोग के रूप में माणिकचंद विनोदकुमार, सुरेंद्र कुमार, किशोर कुमार सकलेचा ने अपनी स्वीकृति प्रदान की। शिविर को सुव्यवस्थित आयोजन करने में एटीडीसी स्टॉप दीपाश्री, स्मिता, सहेली, श्यामला एवं दीपा का विशेष श्रम नियोजित हुआ। तेयुप से जयंतीलाल गाँधी, राजेश देरासरीया, मिलन गाँधी, साहिल सहलोत एवं अभिषेक पीपाडा ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

आचार्य अरिहंत सागरजी का बसवनगुड़ी दादावाड़ी में प्रवेश

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट आराधना भवन में आचार्य भगवन्त पंडित श्री युगभूषण जी के सुशिष्य, कुशल प्रवचनकार, सन्मार्ग प्रवाहक, श्री अरिहंत सागर सूरीश्वरजी का पावन पदार्पण बसवनगुड़ी आराधना भवन में सोमवार को हुआ। ट्रस्ट के प्रवक्ता अरविन्द कोठारी ने सकल संघ के साथ गुरुवन्दन किया और संचालन करते हुए संघ के सौभाग्य से गुरुदेव के पदार्पण पर खुशी जाहिर की।

प्रचार प्रसार संयोजक ललित डाकलिया ने जानकारी देते हुए बताया कि चतुर्विध संघ सहित गुरु भगवन्तों का सामैय्या पांचीबाई जब्बरचंद, प्रसन्न चंद पगारिया के निवास स्थान से

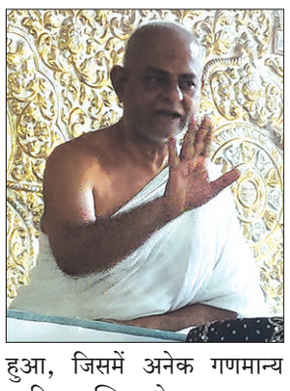

हुआ, जिसमें अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। खरतरगच्छ संघ के महामंत्री राजेन्द्र गुलेच्छा ने गुरुदेव को समर्पित स्वागत गीत प्रस्तुत किया। गुरुदेव ने अपने प्रवचन में फरमाया कि कर्म राजा के आगे किसी की एक नहीं चलेगी। हमने जो कर्म किए हैं उन्हें अकेले ही भुगतना ही होगा। पाप हमेशा हमें दुख ही प्रदान करेगा और पुण्य हमें दुख के समय में राहत प्रदान करेगा। वहीं धर्म करने से हमें पुण्य की प्राप्ति होगी। हमें देवगुरु धर्म का आलंबन लेकर अपने पुण्य में वृद्धि और अपनी आत्मा का उत्थान करना है।

मंगलवार से प्रतिदिन प्रातः वांचना और जिनवाणी प्रवचन आयोजित होंगे। गुरुदेव के पदार्पण के अवसर पर दादावाड़ी ट्रस्ट के संघवी तेजराज गुलेच्छा, पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र कुमार रांका, कोषाध्यक्ष रणजीत ललवानी, अरविन्द कोठारी, धर्मेन्द्र संकलेचा, रमेश गुलेच्छा, ललित डाकलिया के साथ दादावाड़ी ट्रस्ट से जुड़ी समस्त संस्थाओं के पदाधिकारी और सदस्य उपस्थित थे।

फाग उत्सव के रूप में एक अनूठे ढंग से होली स्नेह मिलन आयोजित

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

मारवाड़ी युवा मंच बेंगलूरु स्टार्स ने होली स्नेह मिलन, फाग उत्सव के रूप में एक अनूठे ढंग से हरयाणा भवन में आयोजित किया।

इस उत्सव में तकरीबन 330 स्टार सदस्यों और परिवारजनों ने साथ मिलकर होली का त्योहार खूब उत्साह से मनाया। हरयाणा भवन के प्रांगण को विशेष तौर पर फूलों से सजाया गया और श्री कृष्णा की मूर्ति स्थापित कर दरबार सजाया गया। सर्वप्रथम शाखा अध्यक्ष राहुल गोयनका ने सभी शाखा सदस्यों और परिवारजनों को होली की हार्दिक बधाई दी। मंच की बागडोर

उपाध्यक्ष अमित अग्रवाल ने बखूबी संभाली और सभी को उत्सव से बांधे रखा।

उत्सव में सभी को म्यूजिकल हाऊजी खिलवाया गया, जिसके लिए खास तौर पर सूरत से सुप्रसिद्ध गायक सुरेश जोशी और पूनम चोपड़ा को बुलवाया गया। होली के रंगारंग गीतों और श्री कृष्णा के फाग के मनमोहक भजनों से गायकों ने होली का अनोखा समा बाँध दिया। होली मिलन में बच्चों के लिए खास तौर पर खेल रखे गए जिसे बच्चों ने बेहद रोमांचक तरीके से खेला और विजेताओं को उपहार भी दिए गए। अंत में सभी ने फूलों की होली खेली। सर्वप्रथम कान्हा जी के साथ और फिर एक दूसरे पर फूल बरसाकर इस बार अनोखे ढंग से होली का त्योहार मनाया गया। गेंदे के फूलों की वर्षा से संपूर्ण प्रांगण एवं लोग महक और चहक उठे। बेहद खूबसूरती से बनाये हुए सेल्फी बूथ पर सभी परिवारजनों ने जमकर फोटो खिंचवाई। शाखा उपाध्यक्ष एवं उत्सव प्रभारी पुनीत गोयल ने बताया कि कार्यक्रम संयोजकों गौरव अग्रवाल और विक्की अग्रवाल ने उत्सव को बेहतरीन रूप से सजाया। एक माह से पूर्व तैयारियों में लगे संयोजकों का कार्यकारिणी समिति के सदस्यों ने खूब हाथ बंटाया और उत्सव को मनमोहक स्वरुप दिया।

बेंगलूरु डिवीजन ने छह रेलवे भवनों के लिए शून्य प्लस प्रमाणन किया प्राप्त

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

दक्षिण-पश्चिम रेलवे के बेंगलूरु डिवीजन ने छह रेलवे भवनों के लिए ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) से प्रतिष्ठित शून्य प्लस प्रमाणन प्राप्त किया है। ये छह भवन देवरापल्ले स्टेशन भवन, मालुगुर स्टेशन भवन, भारतीय रेलवे आपदा प्रबंधन संस्थान/हेज्जला, डिवीजनल रेलवे अस्पताल/बेंगलूरु, नारायणपुरम स्टेशन भवन और ओड्डाराहल्ली स्टेशन भवन हैं। शून्य प्लस या नेट पॉजिटिव एनर्जी बिल्डिंग (एनपीईबी) एक ऐसी इमारत है जो अपनी जरूरत के मुताबिक ऊर्जा का उत्पादन करने के लिए अक्षय स्रोतों पर निर्भर करती है और अतिरिक्त उत्पादित बिजली को ग्रिड को आपूर्ति करती है, जिसे आमतौर पर एक वर्ष के दौरान मापा जाता है। उपरोक्त इमारतों की विद्युत ऊर्जा खपत पूरी तरह से अक्षय ऊर्जा स्रोतों यानी इमारतों की छतों पर स्थापित विभिन्न क्षमताओं के सौर पैनलों के माध्यम से पूरी की जाती है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि ऊर्जा दक्षता, स्थिरता और भवन बुनियादी ढांचे में शुद्ध-शून्य कार्बन उत्सर्जक बनने की प्रक्रिया के लिए बेंगलूरु डिवीजन की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। यह 2030 तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जक बनने के लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में बेंगलूरु डिवीजन का एक कदम आगे है। बेंगलूरु डिवीजन सभी उपलब्ध छतों पर 8 मेगावाट क्षमता की सौर ऊर्जा स्थापित करने की प्रक्रिया में है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित समय सीमा के भीतर लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

कर्नाटक में सबसे बड़ा ड्रग भंडाफोड़

दिल्ली हवाई अड्डे पर मिलीभगत के माध्यम से राज्य में मादक पदार्थों की तस्करी की जा रही: खादर

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

कर्नाटक विधानसभा अध्यक्ष यू टी खादर ने सोमवार को आरोप लगाया कि दिल्ली हवाई अड्डे पर मिलीभगत के माध्यम से राज्य में मादक पदार्थों की तस्करी की जा रही है। हाल ही में बेंगलूरु में 75 करोड़ रुपये की नशीली दवाओं की जब्ती के बाद यह बात सामने आई है। विधानसभा में बोलते हुए खादर ने एक बड़े ड्रग नेटवर्क का भंडाफोड़ करने और मामले के संबंध में दो दक्षिण अफ्रीकी नागरिकों को गिरफ्तार करने में कर्नाटक पुलिस की सफलता की सराहना की। आरोपियों की पहचान 31 वर्षीय बंबा फैंटा के रूप में हुई है, जिसे एडोनिस जबुलिल के नाम से भी जाना जाता है, जो एग्बोविल्ले से है और 30 वर्षीय एबिगेल एडोनिस, जिसे ओलिजो इवांस के नाम से भी

जाना जाता है, जो प्रिटोरिया से है। ये दोनों बेंगलूरु में गिरफ्तारी से पहले दिल्ली में रह रहे थे। इस अभियान का नेतृत्व मेंगलूरु पुलिस ने किया, जिसने कम मात्रा में ड्रग्स की शुरुआती जब्ती के बाद नेटवर्क की उत्पत्ति का पता लगाया। खादर ने कहा मैं मुख्यमंत्री, गृह मंत्री और पुलिस विभाग की नशीली दवाओं की तस्करी से निपटने में उनके अथक प्रयासों के लिए सराहना करता हूं। यह अभियान ड्रग माफिया के खिलाफ एक महत्वपूर्ण हमला है। पुलिस की दृढ़ता और सावधानीपूर्वक जांच से नेटवर्क का पता चला है। उन्होंने आगे जोर दिया कि मेंगलूरु को पहले ड्रग तस्करी का केंद्र माना जाता था, लेकिन जांच से पता चला है कि ड्रग्स की तस्करी दिल्ली से की जा रही थी। उन्होंने कहा अगर ड्रग्स दिल्ली से आ रहे हैं, तो एयरपोर्ट पर मिलीभगत होनी चाहिए। खादर ने तस्करी के मार्गों और इसमें शामिल अधिकारियों की व्यापक जांच का आह्वान किया। उन्होंने कहा अगर हम ऊपर से नीचे तक फैले ड्रग नेटवर्क को खत्म कर दें, तो हम इस खतरे को खत्म कर सकते हैं। हमें इस खतरे को खत्म करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। मेंगलूरु से भाजपा विधायक हरीश पूंजा ने पुलिस को बधाई दी और गृह मंत्री से कर्नाटक को 'नारकोटिक्स-मुक्त राज्य' बनाने के लिए कानून प्रवर्तन एजेंसियों को और सशक्त बनाने का आग्रह किया। कांग्रेस विधायक एस एन नारायणस्वामी ने भी पुलिस की समर्पण भावना की सराहना की और कहा कि इस तरह के व्यापक ड्रग नेटवर्क को तोड़ना उनकी प्रतिबद्धता और साहस का प्रमाण है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और विधायक बी वाई विजयेंद्र ने चेतावनी दी कि ड्रग नेटवर्क ग्रामीण क्षेत्रों तक भी फैल रहा है। उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि जब्त की गई कुछ ड्रग्स फिर से बाजार में आ रही हैं और उन्हें नष्ट करने के लिए सख्त कदम उठाने की मांग की। उन्होंने आग्रह किया ऐसी चूक को रोकने के लिए उचित निगरानी बनाए रखी जानी चाहिए।

होली स्नेह मिलन का आयोजन

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

कर्नाटका मारवाड़ी समाज द्वारा होली स्नेह मिलन का आयोजन होटल अनंता जयनगर में बड़े उत्साह और उमंग के साथ किया गया। इस रंगों के त्योहार में समाज के सभी सदस्यों और उनके परिवारों ने भाग लेकर इसे एक यादगार बनाया। प्रसिद्ध हास्य कवि एवं व्यंग्यकार, डॉ. सुनील तरुण के शानदार काव्य पाठ ने सभी को खुश कर दिया। हास्य और व्यंग्य से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया और पूरे वातावरण में हंसी और उल्लास भर दिया। डॉ. सुनील तरुण का स्वागत एवं सम्मान विमल साराओगी द्वारा किया गया, जिन्होंने उनके शानदार योगदान के लिए कृतज्ञता प्रकट की। कर्नाटका मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष विकास बालोदिया ने सभी सदस्यों का इस शानदार कार्यक्रम में उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया।

रान्या राव मामला

कर्नाटक कांग्रेस ने भाजपा को मंत्रियों के नाम बताने की चुनौती दी

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

कन्नड़ अभिनेत्री रान्या राव से जुड़े सोना तस्करी मामले में दो मौजूदा मंत्रियों की कथित संलिप्तता को लेकर कांग्रेस नीत सरकार और विपक्षी भाजपा के बीच सोमवार को भी टकराव जारी रहा। रान्या राव वर्तमान डीजीपी के. रामचंद्र राव की सौतेली बेटी हैं। भाजपा ने सत्तारूढ़ कांग्रेस पर सोना तस्करी मामले में संलिप्त होने का आरोप लगाया, वहीं कर्नाटक कांग्रेस ने कांग्रेस को दोनों मंत्रियों के नाम उजागर करने की चुनौती दी। भाजपा विधायक बसनगौड़ा पाटिल यतनाल ने दावा किया कि उनके पास दो मंत्रियों की संलिप्तता के बारे में सारी जानकारी है। यतनाल ने रविवार को कहा रान्या राव से कौन जुड़ा है और उसे सुरक्षा किसने मुहैया कराई है - मैं सदन में सब कुछ उजागर करूंगा। उन्होंने मीडिया को संबोधित करते हुए रान्या राव पर आपत्तिजनक टिप्पणी भी की। सोमवार को विधान सौधा में मीडिया से बात करते हुए विपक्ष के नेता आर. अशोक ने कहा कि दो मंत्रियों की संलिप्तता के बारे में अफवाहें फैल रही हैं। उन्होंने कहा सरकार को अब तक स्पष्टीकरण जारी कर देना चाहिए था। जिस तरह से इस मामले को संभाला जा

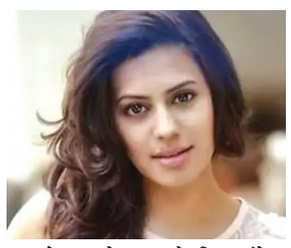

रहा है, उससे स्पष्ट है कि कांग्रेस नीत सरकार इसमें शामिल है। उन्होंने कहा मैं विधायक यतनाल से उनके पास मौजूद जानकारी के बारे में बात करूंगा। मुझे अभी विस्तृत जानकारी नहीं है। बड़े और मध्यम उद्योग मंत्री एमबी पाटिल ने आरोपों का जवाब देते हुए चुनौती दी, अगर विधायक यतनाल या भाजपा नेताओं में हिम्मत है, तो वे उन मंत्रियों के नाम बताएं, जिनके बारे में उनका दावा है कि वे इसमें शामिल हैं। हवा में बेबुनियाद आरोप लगाना बंद करो। उन्हें आज विधानसभा में नामों का खुलासा करना चाहिए। उन्हें मामले में पूर्व विधायकों और केंद्रीय मंत्रियों की संलिप्तता का भी खुलासा करना चाहिए। मंत्री प्रियांक खड़गे ने कहा अगर भाजपा नेताओं के पास ऐसी जानकारी है, जो राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) और केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) जैसी जांच एजेंसियों के पास भी नहीं है, तो उन्हें इसे पेश करना चाहिए। उन्हें सबूतों के साथ बोलना चाहिए। भाजपा नेताओं ने पहले पीएसआई घोटाले के बारे में आरोप लगाए थे, लेकिन जब उनसे सबूत मांगे गए, तो वे पीछे हट गए। अगर उनके पास नाम हैं, तो उन्हें उनका खुलासा करना चाहिए। लेकिन उन्हें सबूत भी देने चाहिए। केवल व्यक्तियों का नाम बताने से कोई फायदा नहीं होगा। परिवहन मंत्री रामलिंगा रेड्डी ने कहा अगर उनके पास कोई सूचना है, तो वे उसे सार्वजनिक करें। हम उन्हें नाम लेने से नहीं रोक सकते। मीडिया और सोशल मीडिया पर दो मंत्रियों के शामिल होने के दावों की भरमार है और विपक्ष अटकलों को हवा दे रहा है। अगर उन्हें नाम पता हैं, तो उन्हें नाम सामने लाने चाहिए। विधायक यतनाल के आपत्तिजनक बयानों पर प्रतिक्रिया देते हुए मुख्यमंत्री सिद्धरामैया के कानूनी सलाहकार ए.एस. पोन्ना ने कहा यह भाजपा की संस्कृति की खासियत है। महिलाओं के बारे में उनके विचार और उनकी पितृसत्तात्मक मानसिकता भाजपा विधायक यतनाल की बातों से स्पष्ट है। उनकी पार्टी में पहले से ही काफी परेशानियां हैं। उनके लिए यह समझदारी होगी कि वे और विवाद न खड़ा करें।

होली स्नेह मिलन का आयोजन

मैसूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

राजपुरोहित समाज मैसूरु के तत्वावधान में होली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन ईदृग गुड स्थित राजस्थान विष्णु सेवा ट्रस्ट भवन में किया गया। सर्वप्रथम आराध्य देव खेतेश्वर दाता की तस्वीर के समक्ष ज्योत प्रचलित कर पंडित राहुल शर्मा ने विधिवत पूजा अर्चना की। दाता के जयकारें लगाए गए। सदस्यों ने एक दूसरे को होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दी। समाजसेवी महेंद्र सिंह राजपुरोहित का सम्मान किया गया। प्रयागराज तीर्थ यात्रियों का बहुमान किया गया। इस मौके पर उपाध्यक्ष नारायण सिंह, सचिव सुरेंद्र सिंह, सलाहकार महेंद्र सिंह राजपुरोहित, कोषाध्यक्ष चंद्र सिंह, सदस्य प्रेम सिंह, बाबू सिंह, नरपत सिंह, श्याम सिंह, राजेश सिंह, भगवान सिंह, देव सिंह, श्रवण सिंह, गजेंद्र सिंह राजपुरोहित सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। मंच संचालन शिव सिंह ने किया।

भाजपा ने हमारी गारंटी की नकल की है: सीएम सिद्धरामैया

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

कांग्रेस सरकार के घोषणापत्रों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा मिली है। मुख्यमंत्री सिद्धरामैया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत सभी भाजपा नेताओं ने हमारी योजनाओं की नकल की है। विधानसभा में राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर हुई बहस का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि गारंटी योजनाओं की संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों ने प्रशंसा की है। विश्व स्तर पर, लोगों की क्रय शक्ति का अनुमान सार्वभौमिक बुनियादी आय के आधार पर लगाया जाता है। भारत में लोगों की क्रय शक्ति कम हो गई है। कर्नाटक में पंचखत्री योजनाओं के माध्यम से लोगों को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के

प्रयास किए जा रहे हैं। जब कांग्रेस पार्टी ने पंचखत्री योजनाओं की घोषणा की तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनकी आलोचना की। सभी भाजपा नेताओं ने योजना का विरोध किया। जब हम सत्ता में आए और पंचखत्री को प्रभावी ढंग से लागू किया, तो भाजपा ने विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में हमारी योजनाओं की नकल करना शुरू कर दिया। उन्होंने महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली सहित जहां भी विधानसभा चुनाव हुए, वहां गारंटी का वादा किया। 2024 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी ने मोदी गारंटी के तौर पर विज्ञापन दिया। यदि गारंटी योजनाओं की नकल की जा रही हैं तो उनकी आलोचना क्यों की जाए? जिसके बाद विपक्ष के उपनेता अरविंद बेलाड ने कहा कि कर्नाटक में कांग्रेस ने दिल्ली में आम आदमी पार्टी द्वारा लागू की गई गारंटी योजनाओं की नकल की है।

उन्होंने कहा कि इसका क्रियान्वयन ठीक से नहीं किया गया। मंत्री एम.बी.पाटिल ने मजाक में कहा कि महाराष्ट्र में हमारी सभी परियोजनाओं की नकल की गई है। सिद्धरामैया ने अपने जवाब को जारी रखते हुए कहा कि आंध्र प्रदेश में सत्तारूढ़ चंद्रबाबू नायडू की सरकार के मंत्रियों और अधिकारियों का एक प्रतिनिधिमंडल, महाराष्ट्र में भाजपा सरकार के परिवहन मंत्री प्रतापसर नाइक और अधिकारियों का एक प्रतिनिधिमंडल, और केरल के मंत्रियों और अधिकारियों का एक प्रतिनिधिमंडल शक्ति योजना सहित विभिन्न गारंटी योजनाओं का अध्ययन करने के लिए कर्नाटक आया है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की अध्यक्षता वाले केंद्र सरकार के संस्थान भारतीय लोक प्रशासक संस्थान ने गारंटी योजनाओं की प्रशंसा की है और कुछ सुझाव दिए हैं। इसके प्रमुख जितेन्द्र सिंह ने गृहलक्ष्मी और शक्ति योजनाओं की सराहना की। इतना सब होने के बावजूद, क्या विपक्षी दलों का कीचड़ में पत्थर ढूंढना सही है? राजनीति से प्रेरित बयान देने के बजाय, कम से कम अब रचनात्मक आलोचना करना सीखें। मुझे विपक्षी दलों की आलोचना से कोई परेशानी नहीं है। उन्होंने कहा कि सरकार को इस समस्या से पीड़ित लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहिए।

अगले पांच वर्षों तक परियोजनाएं बिना किसी रुकावट के लोगों तक पहुंचेंगी: सीएम

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

मुख्यमंत्री सिद्धरामैया ने कहा कि इस वर्ष फरवरी के अंत तक गारंटी योजनाओं के लिए 75,509 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।

उन्होंने आश्वासन दिया है कि सरकार दिवालिया नहीं है और अगले पांच वर्षों तक परियोजनाएं बिना किसी रुकावट के लोगों तक पहुंचेंगी। 11 जून 2023 को शुरू की गई शक्ति योजना के तहत महिलाएं स्वतंत्र घूम रही हैं। लगभग 4.1 अरब लोग यात्रा कर चुके हैं।

वर्ष 2024-25 में गारंटी योजनाओं के लिए 52,900 करोड़ रुपये का अनुदान आवंटित किया गया। उन्होंने कहा कि फरवरी के अंत तक 41,650 करोड़ रुपये खर्च किये जा चुके हैं। गृहलक्ष्मी योजना के लिए 28,608 करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं और 22,611 करोड़

रुपए खर्च किए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि गृहज्योति योजना के लिए 9657 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं और 8389 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं, अन्नभाग्य योजना के लिए 8079 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं और 5590 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं, शक्ति योजना के लिए 5015 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं और 4021 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं, तथा युवानिधि योजना के लिए 650 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं और 240 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। अन्नभाग्य और गृहलक्ष्मी योजनाओं के तहत 1.26 करोड़ परिवार लाभ प्राप्त कर रहे हैं। गृह ज्योति के तहत 1.62 करोड़ परिवारों को मुफ्त बिजली मिल रही है। कांग्रेस सरकार जो कहती है वही करती है। लोगों ने हमें 5 साल की अवधि के लिए आशीर्वाद दिया है। सिद्धरामैया ने घोषणा की कि हम गारंटी योजनाएं 5 वर्षों तक जारी रखेंगे।

एमसीसी ने अवैध प्लास्टिक फ्लेक्स बैनरों पर कार्रवाई की, जुर्माना लगाया

मेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

मेंगलूरु सिटी कॉरपोरेशन (एमसीसी) ने अपने अधिकार क्षेत्र में अवैध प्लास्टिक फ्लेक्स बैनर पर पहले ही प्रतिबंध लगा दिया है, और अब हटाने का अभियान शुरू हो गया है। अधिकारियों ने क्लॉक टॉवर, एमजी रोड और डीसी बंगला क्षेत्र सहित प्रमुख स्थानों पर लगाए गए अनधिकृत प्लास्टिक फ्लेक्स बैनर को हटाना शुरू कर दिया है। एमसीसी के नियमों के अनुसार, प्रतिबंध का उल्लंघन करने वालों को पहली बार में 2,000 रुपये का जुर्माना देना होगा। यदि उल्लंघन दोहराया जाता है, तो जुर्माना बढ़ाकर 4,000 रुपये कर दिया जाएगा। आगे के उल्लंघनों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी, जिसमें प्रिंटिंग प्रेस का व्यापार लाइसेंस रद्द करना और परिसर को सील

करना शामिल है। लोगों को हेल्पलाइन पर कॉल करके अवैध प्लास्टिक फ्लेक्स बैनर की रिपोर्ट करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। नागरिक उल्लंघन की तस्वीरें ले सकते हैं और उन्हें प्रवर्तन प्रयासों में अधिकारियों की सहायता के लिए व्हाट्सऐप के माध्यम से भेज सकते हैं। वर्तमान में, प्रतिबंध केवल प्लास्टिक फ्लेक्स बैनर पर लागू होता है। हालांकि, कपड़े के बैनर और अन्य प्रचार सामग्री को एमसीसी से पूर्व अनुमोदन के साथ अनुमति दी जाती है। कपड़े के बैनर लगाने वालों को 200 रुपये का शुल्क देकर अनुमति लेनी होगी, जो 15 दिनों के लिए स्वीकृति प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, सभी बैनरों पर प्रिंटर का नाम और संपर्क विवरण प्रदर्शित होना चाहिए। अगर शहर में कोई फ्लेक्स या बैनर दिखता है तो लोग शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

सरकारी परियोजनाओं में मुसलमानों के लिए आरक्षण के खिलाफ करेंगे उग्र विरोध प्रदर्शन: विजयेंद्र

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और विधायक बी.वाई. विजयेंद्र ने कर्नाटक कांग्रेस सरकार की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति का कड़ा विरोध किया है। उन्होंने कहा कि हिंदुओं सहित सभी समुदायों में गरीब लोग हैं। उन्होंने सवाल किया कि सरकार हिंदुओं में गरीबों की अनदेखी करते हुए सरकारी परियोजनाओं में मुसलमानों के लिए 4 प्रतिशत आरक्षण क्यों दे रही है। यहां मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा का रुख स्पष्ट है। अगर विधानसभा में मुसलमानों के लिए 4 प्रतिशत आरक्षण देने वाला विधेयक पेश किया जाता है, तो भाजपा सदन के अंदर और बाहर उग्र विरोध करेगी। उन्होंने

चेतावनी दी कि वे इसे लागू नहीं होने देंगे। एक सवाल के जवाब में, विजयेंद्र ने स्वीकार किया कि उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार एक वरिष्ठ नेता हैं और उन्होंने कुवेम्पु के राज्य गान को याद किया, जो सभी समुदायों के बीच सद्भाव की बात करता है। हालांकि, उन्होंने कांग्रेस सरकार पर कर्नाटक में शांति को बढ़ावा देने के बजाय कलह के बीज बोने का आरोप लगाया। उन्होंने चेतावनी दी कि भाजपा सीएम सिद्धरामैया और डी.के. शिवकुमार के नेतृत्व वाले इस विभाजनकारी एजेंडे का कड़ा विरोध करेगी। उन्होंने जैनियों को श्रेणी 2बी में शामिल किए जाने पर भी सवाल उठाए और पूछा कि मुसलमानों के अलावा और किसे इसमें शामिल किया जाएगा। उन्होंने कांग्रेस नेताओं की आलोचना करते हुए उन पर जनता को गुमराह करने का आरोप लगाया। कर्नाटक सरकार ने मुसलमानों के लिए 4 प्रतिशत सरकारी ठेके आरक्षित करने का फैसला किया है, इस फैसले को कैबिनेट की बैठक में मंजूरी दी गई और इसे विधानसभा में पेश किया जाना है। भाजपा ने स्पष्ट कर दिया है कि वे इस कदम का कड़ा विरोध करते हैं। विजयेंद्र ने जोर देकर कहा कि भाजपा मुसलमानों के खिलाफ नहीं है, बल्कि कांग्रेस की वोट बैंक की राजनीति और तुष्टिकरण की नीतियों का विरोध करती है। उन्होंने बताया कि डी.के. शिवकुमार ने हाल ही में भाजपा को विधान परिषद और राज्यसभा में अधिक मुस्लिम नेताओं को नामित करने की चुनौती दी थी। कांग्रेस की लंबे समय से चली आ रही अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की नीतियों की आलोचना करते हुए विजयेंद्र ने याद दिलाया कि कांग्रेस के शासन के दौरान मुस्लिम दंगाइयों ने दलित विधायक अखंड श्रीनिवास मूर्ति के घर पर हमला किया और आग लगा दी। उन्होंने सवाल किया कि कांग्रेस ने तब दलितों के लिए चिंता क्यों नहीं दिखाई और उन पर वास्तविक मुद्दों पर मुस्लिम तुष्टिकरण को प्राथमिकता देने का आरोप लगाया।

युवानिधि योजना को रोकने का सवाल ही नहीं उठता: शरण प्रकाश पाटिल

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

कौशल विकास एवं युवा अधिकारिता मंत्री डॉ. शरण प्रकाश पाटिल ने आश्वासन दिया है कि सरकार विधानसभा चुनाव से पहले की गई घोषणा के अनुसार युवा कोष के माध्यम से डिग्री और डिप्लोमा प्राप्त करने वाले स्नातकों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है और इसे किसी भी कारण से रोकने का कोई सवाल ही नहीं उठता। सोमवार को विधान परिषद में भाजपा के अरुण के एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा हम वादे के मुताबिक काम करेंगे। हम चुनाव से पहले जनता से किये गये वादों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने अफवाहों को खारिज करते हुए कहा कि युवानिधि योजना को रोकने का कोई सवाल ही नहीं है। कुछ तकनीकी कारणों से युवानिधि योजना के अंतर्गत दी जाने वाली वित्तीय सहायता में देरी हो सकती है। किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि हम इसे बंद कर देंगे। अनुदान की कोई कमी नहीं है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह नियमानुसार दिया जाना चाहिए। युवा कोष का लक्ष्य यहीं तक सीमित नहीं है, यह असीमित है, लाभार्थियों की संख्या महीने दर महीने, वर्ष दर वर्ष बढ़ती रहेगी। अगले वर्ष यह 5 लाख हो सकता है। हमने बाद में इसे 10 लाख तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि हर साल हजारों छात्र अपनी डिग्री और डिप्लोमा पूरा करते हैं। जिन छात्रों ने अपनी डिग्री डिप्लोमा पूरी कर ली है, उन्हें इस योजना के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए पहले अपना नाम पंजीकृत कराना होगा। इसके लिए विभाग ने सेवा सिंधु पोर्टल बनाया है। उन्होंने बताया

कि अब तक 1,74181 छात्रों को यह सहायता मिल चुकी है। उम्मीदवारों को अपना नाम पंजीकृत कराने के बाद 181 दिन तक इंतजार करना होगा। इस श्रेणी में 49 हजार लोग हैं। मंत्री ने स्पष्ट किया कि यदि आप आगे की शिक्षा या रोजगार चाहते हैं तो यह सहायता उपलब्ध नहीं होगी। यह उन लोगों पर लागू है जो अपनी डिग्री और डिप्लोमा पूरा करने के तुरंत बाद पात्र हो जाते हैं। पोर्टल पर अपना नाम दर्ज कर आवेदन करने से रजिस्ट्रेशन हो जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए किसी की मदद की जरूरत नहीं है, विभाग ने सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। हमने ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को जानकारी उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक व्यवस्था की है। मंत्री ने विद्यार्थियों से अपील की कि वे घबराएं नहीं, क्योंकि कुछ छोटी-मोटी तकनीकी कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं तथा सरकार से लाभ प्राप्त करने के लिए कदम उठाएं। मंत्री थिप्पनप्पा कनकनूर के एक अन्य प्रश्न का उत्तर देते हुए मंत्री ने कहा कि मैसूरु और कलबुर्गी के मेडिकल कॉलेजों में 7-7 करोड़ रुपये की लागत से निमान्स शैली के संस्थान स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हम इसे शीघ्र ही सार्वजनिक सेवा के लिए समर्पित कर देंगे। हमने कलबुर्गी में सभी को अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए कई कदम उठाए हैं, जैसे जयदेव हार्ट इंस्टीट्यूट, इंदिरा गांधी बाल अस्पताल और कैंसर अस्पताल। उन्होंने कहा कि सरकार सभी को अच्छी स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। भाजपा के शशिल नमोशी के एक अन्य प्रश्न के उत्तर में शरणप्रकाश पाटिल ने कहा कि जयदेव हृदय संस्थान सुधारों पर थॉमस समिति की रिपोर्ट का इंतजार है। उन्होंने रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए छह महीने का समय मांगा था। मैंने उन्हें तीन महीने के भीतर रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। उन्होंने इस रिपोर्ट में की गई सिफारिशों का अधिकारियों के साथ अध्ययन करने और संस्थान को विकसित करने का वादा किया।

कोंकण रेलवे का भारतीय रेलवे में विलय हो: कोटा श्रीनिवास पुजारी

मंत्री को सौंपा ज्ञापन

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

उडुपी-चिकमगलूरु लोकसभा सदस्य कोटा श्रीनिवास पुजारी के नेतृत्व में विधायकों के एक समूह ने राज्य के बुनियादी ढांचा विकास मंत्री एम.बी. पाटिल को कोंकण रेलवे के भारतीय रेलवे में विलय के संबंध में कार्रवाई करने का अनुरोध प्रस्तुत किया। मंत्री एम.बी. पाटिल ने संबंधितों को इस संबंध में कार्रवाई करने के निर्देश दिए। ऐतिहासिक कोंकण रेलवे परियोजना की 30वीं वर्षगांठ है, जिसकी शुरुआत जॉर्ज फर्नांडिस ने तब की थी जब वे केंद्रीय रेल मंत्री थे। एकल-ट्रैक यात्रा सुविधा के कारण अतिरिक्त रेलगाड़ियां चलाना कठिन हो गया है, तथा कोंकण रेलवे में वित्त पोषण की कमी के कारण नए रेलवे स्टेशनों सहित बुनियादी ढांचे के लिए वित्तीय कमी हो रही है। विज्ञप्ति में कहा गया है कि

इसलिए प्रतिनिधिमंडल ने सुझाव दिया कि कोंकण रेलवे को भारतीय रेलवे में विलय कर दिया जाना चाहिए और उसे भारत सरकार से अनुदान लेकर तटीय क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण रेलवे परियोजनाओं को लागू करने की अनुमति दी जानी चाहिए। प्रतिनिधिमंडल ने इस मामले पर मंत्री के साथ लंबी चर्चा की। प्रतिनिधिमंडल ने मंत्री को आश्वस्त किया कि यदि भारतीय रेलवे के साथ विलय कर दिया जाए तो निकट भविष्य में एकल लाइनों के अलावा दोहरीकरण सहित कई विकास परियोजनाओं को क्रियान्वित करने का अवसर उपलब्ध होगा। एक लम्बी चर्चा के बाद एम. बी पाटिल सहमत हुए। उन्होंने विभागीय प्रधान सचिव मंजुला को फोन पर तत्काल फाइल तैयार करने, कैबिनेट से अनुमोदन प्राप्त करने का निर्देश दिया। इस मौके पर विधायक वी. सुनील कुमार, काउप विधायक गुरमे सुरेश शेट्टी, बिंदूर विधायक गुरुराज गंटीहोले, कुंदापुर विधायक किरण कुमार कोडगी और उडुपी विधायक यशपाल सुवर्णा मौजूद थे।

सड़क हादसे में तीन लोगों की मौत

बेलगावी/शुभ लाभ ब्यूरो।

चिक्कोडी-कागवाड़ रोड पर चिक्कोडी तालुक के सिद्धपुरवाड़ी क्रॉस के पास सोमवार सुबह एक कार और ट्रक के बीच हुई टक्कर में दो महिलाओं समेत तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए।

मृतक और घायल महाराष्ट्र के सांगली के रहने वाले हैं। मृतकों में कल्पना अजीत कुमार कोली

(37), महादेव कनप्पा कोली (76) और रुक्मिणी महादेव कोली (60) शामिल हैं। घायलों में अजीतकुमार महादेव कोली (45), आदित्य अजीतकुमार कोली (17) और अनुजा अजीतकुमार कोली (13) शामिल हैं। ये सभी कार में सवार थे। पुलिस ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया। अंकाली पुलिस मामले की जांच कर रही है।

केंद्रीय अनुदान को लेकर भाजपा ने सीएम पर किया पलटवार

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

भाजपा विधायकों ने मुख्यमंत्री सिद्धरामैया के इस आरोप पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की कि केंद्र सरकार ने राज्य को मिलने वाले कर हिस्से में कमी की है। राज्यपाल के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का विस्तृत जवाब देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि कर्नाटक इस वर्ष केंद्र सरकार को 5 लाख करोड़ रुपये का कर दे रहा है। लेकिन बदले में उन्होंने इस बात पर आपत्ति जताई कि राज्य सरकार को करों का उचित हिस्सा नहीं मिल रहा है। भाजपा के सी.सी. पाटिल ने जवाब दिया कि राज्य में केंद्रीय निधि से बहुत सारे विकास कार्य किए

जा रहे हैं। भाजपा के एक अन्य वरिष्ठ विधायक डॉ. सी.एन. अश्वथ नारायण ने जवाब दिया कि मुख्यमंत्री ने बेंगलूरु को बजट में एक भी पैसा नहीं दिया है, जबकि बेंगलूरु से ही 65,000 करोड़ रुपये मिले हैं। तब मुख्यमंत्री ने कहा कि बेंगलूरु कर्नाटक में है। भाजपा के अश्वथ नारायण, सी.सी. पाटिल और अन्य ने तुरंत जवाब दिया कि कर्नाटक भी भारत का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि बेंगलूरु के बारे में आपका तर्क कर्नाटक के साथ-साथ भारत पर भी लागू होता है। यह व्यापक बहस का विषय बन गया। उन्होंने कहा कि जहां कांग्रेस आरोप लगा रही है कि केंद्र सरकार शुरू से ही अनुचित तरीके से कर लगा रही है, वहीं भाजपा इस तर्क को खारिज कर रही है कि करों का वितरण भूगोल के आधार पर किया जाता है।

शुभ लाभ DAILY खबरें जो सोच बदल दे हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

एमसीसी ने बारिश के पानी को सीवेज में बदलने पर भारी जुर्माना और जेल की चेतावनी दी

मेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

मेंगलूरु सिटी कॉरपोरेशन (एमसीसी) ने निवासियों, अपार्टमेंट मालिकों, व्यवसायों और उद्योगों को भूमिगत जल निकासी प्रणाली में वर्षा जल को मोड़ने के खिलाफ कड़ी चेतावनी जारी की है।

एमसीसी आयुक्त रविचंद्र नायक ने एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा कि उल्लंघन करने वालों पर भारी जुर्माने के साथ कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी। कुछ क्षेत्रों में सीवेज नेटवर्क में वर्षा जल छोड़े जाने के मामले देखे गए हैं।

आयुक्त ने कहा कि इसके परिणामस्वरूप जल निकासी प्रणाली में अत्यधिक पानी भर गया है, जिससे मैनहोल से सीवेज ओवरफ्लो हो रहा है, जिससे जनता को असुविधा हो रही है। भूमिगत जल निकासी प्रणाली में वर्षा जल को जोड़ना सख्त वर्जित

है। इमारतों से सीवेज सिस्टम या मैनहोल में किसी भी अनधिकृत कनेक्शन को तुरंत हटाया जाना चाहिए।

उन्होंने चेतावनी दी कि एमसीसी के अधिकारी ऐसे उल्लंघनों की पहचान करने के लिए साइट का निरीक्षण करेंगे और अनुपालन न करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। यदि वर्षा जल को सीवेज सिस्टम में मोड़ने का दोषी पाया जाता है, तो संपत्ति मालिकों को प्रदूषण नियंत्रण अधिनियम के तहत 1 लाख रुपये का जुर्माना और छह साल तक की जेल हो सकती है। नायक ने चेतावनी देते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण अधिनियम के तहत उल्लंघन करने वालों पर एक लाख रुपये का जुर्माना और पांच साल की सजा हो सकती है। पहली बार उल्लंघन करने वालों पर 5,000 रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा। अगर नोटिस के बाद भी अनधिकृत कनेक्शन नहीं हटाया जाता है, तो प्रतिदिन 1,000 रुपये का अतिरिक्त जुर्माना लगाया जाएगा। एमसीसी उल्लंघन करने वालों की पानी की आपूर्ति भी काट सकती है। अनधिकृत कनेक्शन को निगम मालिक के खर्च पर हटाएगा, जिस पर 25,000 रुपये का अतिरिक्त जुर्माना लगेगा। अनधिकृत ड्रेनेज कनेक्शन देखने वाले नागरिकों से 0824-2220306 पर कॉल करके या 9449007722 पर व्हाट्सऐप के जरिए रिपोर्ट करने का आग्रह किया जाता है। एमसीसी ने लोगों से स्वच्छ और सुरक्षित शहर बनाए रखने में सहयोग करने की अपील की है। एमसीसी ने ऐसे मामलों पर भी ध्यान दिया है, जहां सीवेज का पानी स्टॉर्म-वाटर ड्रेन में बहाया जा रहा है। यह प्रदूषण लोगों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है। आयुक्त ने कहा कि अधिकारी इस तरह के उल्लंघनों का निरीक्षण करेंगे और तत्काल कार्रवाई करेंगे।

इस आरक्षण के दायरे में सभी आएंगे सिर्फ एक समुदाय नहीं: रामलिंगा रेड्डी

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

कर्नाटक सरकार द्वारा सरकारी अनुबंधों में अल्पसंख्यकों के लिए 4 प्रतिशत आरक्षण को मंजूरी दिए जाने के बाद राज्य के मंत्री रामलिंगा रेड्डी ने सोमवार को कहा कि सभी 5 से 6 अल्पसंख्यक समुदाय इस आरक्षण के अंतर्गत आएंगे। रामलिंगा रेड्डी ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा, भाजपा हमेशा बकवास करती है। एससी/एसटी के लिए आरक्षण है। अब, हमने अल्पसंख्यकों को आरक्षण दिया है। 5 से 6 अल्पसंख्यक समुदाय हैं। सभी इस आरक्षण के अंतर्गत आएंगे, न कि केवल एक समुदाय। इससे पहले, भारतीय जनता पार्टी कर्नाटक के अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र ने कहा कि भाजपा कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति का विरोध करेगी।

विजयेंद्र ने संवाददाताओं को संबोधित करते हुए कहा भाजपा मुसलमानों के खिलाफ नहीं है, लेकिन हम कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति के

खिलाफ हैं। रविवार को मैं उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार को देख रहा था। उन्होंने बीजेपी को मुस्लिम समुदाय को बड़े पद देने की चुनौती दी थी। उन्होंने बीजेपी को मुस्लिम समुदाय को एमएलसी और राज्यसभा सांसद देने की चुनौती दी थी। मैं उन्हें याद दिलाना चाहता हूं कि यह बीजेपी ही है जिसने डॉ. अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति और नजमा हेपतुल्ला, जस्टिस एस. अब्दुल नजीर और मोहम्मद आरिफ खान को राज्यों का राज्यपाल नियुक्त किया था। उन्होंने कहा हम इस मुद्दे पर बहुत स्पष्ट हैं और हम निश्चित रूप से कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति का विरोध करेंगे। सरकारी ठेकों में 4 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रावधान कहां है? क्या यह संवैधानिक है? हम इस कदम का विरोध करने जा रहे हैं। कर्नाटक विधानसभा में विपक्ष के नेता आर अशोक ने आरोप लगाया कि कांग्रेस समाज को धार्मिक आधार पर बांट रही है। हालांकि बाबासाहेब अंबेडकर ने स्वयं कहा था कि धर्म के आधार पर आरक्षण देना संविधान की मंशा के पूरी तरह खिलाफ है, लेकिन सीएम सिद्धरामैया की अगुवाई वाली कांग्रेस सरकार मुसलमानों को ठेके के कामों में 4 फीसदी आरक्षण दे रही है। यह पार्टी की संविधान विरोधी मानसिकता का सबूत है। जिस तरह नेहरू और जिन्ना ने स्वार्थ के लिए भारत को बांटा, आज कर्नाटक में देशद्रोही सीएम सिद्धरामैया और डीसीएम डीके शिवकुमार समाज को धर्म के आधार पर बांटने पर तुले हैं।

क्यासनूर वन रोग के कारण महिला की मौत

चिकमगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

जिले में वायरल संक्रमण क्यासनूर वन रोग (केएफडी) के कारण 69 वर्षीय महिला की मौत हो गई। महिला चिकमगलूरु जिले के एन.आर. पुरा तालुक के कट्टिनमने की मूल निवासी है। जब वह अपने बेटे के घर मेलपाल गई थी, तब उसे तेज बुखार की शिकायत हुई। उसे 13 मार्च को कोप्पा के सरकारी अस्पताल ले जाया गया। उसके रक्त के नमूने की प्रयोगशाला जांच में केएफडी संक्रमण का पता चला। जिसके बाद उसे अस्पताल के केएफडी वार्ड में भर्ती कराया गया। जब उसकी हालत बिगड़ने लगी, तो डॉक्टरों ने उसे उडुपी जिले के मणिपाल अस्पताल में रेफर कर दिया। अस्पताल ले जाते समय 15 मार्च की रात को उसकी मौत हो गई। चिकमगलूरु के जिला स्वास्थ्य अधिकारी अश्वथ प्रभु ने बताया कि महिला को सह-रुग्णता की स्थिति थी। वह मधुमेह, उच्च रक्तचाप और

क्रोनिक किडनी रोग से पीड़ित थी। प्लेटलेट काउंट में गिरावट के कारण उनकी हालत बिगड़ गई। इस साल जनवरी से अब तक चिकमगलूरु जिले में केएफडी के 46 मामले सामने आए हैं। सभी मरीज ठीक हो गए हैं जबकि छह का इलाज चल रहा है। इस साल जिले में केएफडी के कारण यह पहली मौत थी। केएफडी एक वायरल संक्रमण है, जिसे बंदर बुखार के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि बंदर भी इससे संक्रमित हो जाते हैं। यह टिक्स के माध्यम से फैलता है। जो लोग आजीविका के लिए, मवेशियों को चराने या जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने के लिए वन क्षेत्रों में जाते हैं, वे संक्रमण के प्रति संवेदनशील होते हैं।

भाजपा की तीखी प्रतिक्रिया के बीच

सरकार ने निविदाओं में 4 प्रतिशत मुस्लिम कोटा का किया बचाव

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

कर्नाटक कांग्रेस सरकार ने भाजपा की कड़ी आलोचना के बावजूद सरकारी निविदाओं में मुसलमानों के लिए 4 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने के अपने फैसले का दृढ़ता से बचाव किया है। यहां पत्रकारों से वार्ता में उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने पुष्टि की कि राज्य सरकार आरक्षण को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने प्रस्ताव के विवरण को स्पष्ट किया। शिवकुमार ने बताया यह मंजूरी केवल 2 करोड़ रुपये तक के सरकारी अनुबंधों के लिए है। इस राशि से अधिक का कोई भी काम इस कोटे के तहत आवंटित नहीं किया जाएगा। हम किसी को भी उनके अधिकारों से वंचित नहीं कर रहे हैं। जब निर्णय के पीछे के तर्क के बारे में पूछा गया, तो शिवकुमार ने कहा क्या वे भी

आजीविका के हकदार नहीं हैं? उन्होंने आगे स्पष्ट किया कि आरक्षण केवल मुसलमानों के लिए नहीं है, बल्कि ईसाई, जैन, पारसी, सिख और अन्य सहित अन्य अल्पसंख्यकों और पिछड़े समुदायों के लिए भी है। उन्होंने यह भी बताया कि अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए अनुबंध आरक्षण प्रदान करने के लिए पहले भी इसी तरह के संशोधन किए गए थे। शिवकुमार ने भाजपा के इस आरोप का जवाब दिया कि आरक्षण एक वोट बैंक की रणनीति है, उन्होंने कहा वे लगातार हमारे बारे में सोच रहे होंगे। इससे हम और भी मजबूत हो जाते हैं। उनकी यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब भाजपा ने इस कदम की आलोचना की है और कांग्रेस पर एक खास समुदाय को खुश करने का आरोप लगाया है। घोषणा के अनुरूप, सरकार कर्नाटक सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता (केटीपीपी) अधिनियम, 1999 में संशोधन करने जा रही है, जिसके लिए मौजूदा बजट सत्र के दौरान एक विधेयक पेश किया जाएगा। एक अन्य महत्वपूर्ण मामले पर, शिवकुमार ने कचरा निपटान अनुबंधों को लेकर अधिकारियों को ब्लैकमेल करने वाले कुछ विधायकों के आरोपों को संबोधित किया। उन्होंने आलोचकों से जमीनी स्थिति को देखने का आग्रह करते हुए कहा जाओ और खुद देखो कि कचरा कहां जमा हो रहा है, और तुम समझ जाओगे।

शिवकुमार ने आगामी बृहत बेंगलूरु महानगर पालिका (बीबीएमपी) चुनावों के बारे में भी बात की, उन्होंने आत्मविश्वास से कहा निश्चित रूप से, हम तैयार हैं। हम इसे कब तक टालते रह सकते हैं? उन्होंने पुष्टि की कि शनिवार को संभावित बीबीएमपी उम्मीदवारों के लिए एक बैठक आयोजित की जाएगी, जिसके बाद सभी दलों के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा की जाएगी। तमिलनाडु में निर्वाचन क्षेत्र परिसीमन के खिलाफ एक बैठक में उनकी भागीदारी के बारे में पूछे जाने पर, शिवकुमार ने पुष्टि की कि वे मुख्यमंत्री सिद्धरामैया की जगह बैठक में भाग लेंगे। उन्होंने बताया मुख्यमंत्री और मुझे तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने आमंत्रित किया था। हालांकि, मुख्यमंत्री के घुटने के दर्द के कारण डॉक्टरों ने यात्रा न करने की सलाह दी है। मैं पार्टी और सरकार की ओर से बैठक में भाग लूंगा और पार्टी के रुख पर आलाकमान से चर्चा करूंगा।

व्यक्ति पर हमला करने के आरोप में चार गिरफ्तार

बेलगावी/शुभ लाभ ब्यूरो।

जिले में नैतिक पुलिसिंग के आरोप में सोमवार को चार लोगों को गिरफ्तार किया गया और फरार दो आरोपियों की तलाश की जा रही है।

यह घटना कुछ दिन पहले बेलगावी ग्रामीण पुलिस थाने के अधिकार क्षेत्र में हुई थी। जिले के सावगांव गांव के निवासी अला-उद्दीन पीरजादे ने शिकायत दर्ज कराई और गिरफ्तार किए गए लोगों की पहचान सतीश जाधव, सुमित, वीरेश और एक अन्य व्यक्ति के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार गांव के बाहरी इलाके में हिंदू समुदाय की एक लड़की से बात करने पर भीड़ ने अला-उद्दीन पर हमला कर दिया। उसकी पिटाई करने के बाद उसे धमकी दी गई कि अगर वह दोबारा लड़की से बात करता दिखा तो उसे अंजाम भुगतना होगा। बाद में अलाउद्दीन ने बेलगावी ग्रामीण पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराते हुए सुरक्षा की मांग की। भीड़ के हमले के बाद अलाउद्दीन फटे कपड़ों में पुलिस थाने गया और शिकायत दर्ज कराई। घटना के बारे में अभी और जानकारी सामने आनी बाकी है।

सरकारी निविदाओं में मुस्लिम कोटे के खिलाफ भाजपा ने राज्यव्यापी विरोध प्रदर्शन की तैयारी की

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

भाजपा ने कर्नाटक में विधानमंडल और राज्य स्तर पर कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार के सरकारी निविदाओं में मुसलमानों के लिए 4 प्रतिशत आरक्षण देने के फैसले का विरोध करते हुए विरोध प्रदर्शन की घोषणा की है। विधानसभा में मीडिया को संबोधित करते हुए विपक्ष के नेता आर अशोक ने इस कदम की आलोचना की और इसे 'मुस्लिम तुष्टिकरण' का कृत्य बताया, जो संवैधानिक प्रावधानों को कमजोर करता है।

उन्होंने तर्क दिया कि आरक्षण दलितों के उत्थान के लिए है और इसे धर्म के आधार पर नहीं बढ़ाया जाना चाहिए। अशोक ने आगे सरकार पर राजनीतिक लाभ के लिए दलितों से संवैधानिक अधिकारों को हटाने का आरोप लगाते हुए कहा हमारे संविधान में धर्म आधारित आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है।

यह निर्णय संवैधानिक मानदंडों का घोर उल्लंघन है। मुख्यमंत्री सिद्धरामैया की आलोचना करते हुए अशोक ने दावा किया कि उनकी सरकार ने लगातार एक विशेष समुदाय का पक्ष लिया है, उन्होंने टीपू जयंती की शुरूआत और अल्पसंख्यक समूहों के लिए बजट आवंटन जैसे पिछले उदाहरणों का हवाला दिया। उन्होंने कहा, अब 4 प्रतिशत आरक्षण देकर वे उनकी हर मांग को पूरा कर रहे हैं। हम सदन के अंदर और बाहर दोनों जगह इसका विरोध करेंगे। कर्नाटक सरकार ने न केवल कैबिनेट बैठक में आरक्षण को मंजूरी दी है, बल्कि विधानसभा में विधेयक पेश करने की तैयारी भी कर रही है। उन्होंने कहा, ''भाजपा इस कदम का कड़ा विरोध करेगी। उन्होंने पूछा अगर कांग्रेस मुसलमानों को खुश करने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है, तो अन्य समुदायों के वंचितों का क्या होगा?

सरकार के रवैये की निंदा करते हुए उन्होंने कहा अगर सरकारी ठेकों में 4 प्रतिशत कोटा दिया जा रहा है, तो क्या इसका मतलब यह है कि हिंदुओं में गरीब लोग अवसरों के हकदार नहीं हैं?

पांचवीं मंजिल से गिरकर 13 वर्षीय लड़के की मौत

मेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

मेंगलूरु में एक दिल दहला देने वाली घटना हुई, जब एक 13 वर्षीय लड़के की अपार्टमेंट बिल्डिंग की पांचवीं मंजिल से गिरकर दुखद मौत हो गई। यह घटना मैरीहिल इलाके के एक अपार्टमेंट में हुई, जिससे स्थानीय समुदाय में शोक की लहर दौड़ गई।

युवा पीड़ित की पहचान समरजीत भंडारी के रूप में हुई है, जो सुदेश भंडारी का बेटा है। स्थानीय निजी स्कूल में छठी कक्षा का छात्र समरजीत कथित तौर पर खिड़की के पास खेल रहा था या समय बिता रहा था, जब यह घातक दुर्घटना हुई। गिरने के कारण उसके सिर और गर्दन पर गंभीर चोटें आईं, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। आपातकालीन प्रतिक्रियाकर्ताओं ने समरजीत को तुरंत अस्पताल पहुंचाया, लेकिन मेडिकल टीम के बेहतरीन प्रयासों के बावजूद, उसने पहुंचने के कुछ समय बाद ही दम तोड़ दिया। इस दुखद घटना ने उसके परिवार और पड़ोसियों को गहरे सदमे और दुख में डाल दिया है। कावूर पुलिस ने एक अप्राकृतिक मौत का मामला दर्ज किया है।

छात्रों को गर्मियों के दौरान भोजन और पानी के बारे में अतिरिक्त सावधानी बरते अधिकारी: कुमारस्वामी

बेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

केंद्रीय भारी उद्योग एवं इस्पात मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी ने कहा कि उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे गर्मी के मौसम में छात्रों को दिए जाने वाले भोजन और पेयजल के बारे में अतिरिक्त सावधानी बरतें। एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने कहा मांड्या लोकसभा क्षेत्र के मालवल्ली तालुक के टी. कागेपुरा में एक निजी आवासीय स्कूल में दूषित

भोजन खाने से एक छात्र की मौत की घटना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे मुझे बहुत दुःख होता है। मैं प्रार्थना करता हूं कि मृत छात्र की आत्मा को शांति मिले। उन्होंने कहा कि ऐसी घटनाएं दोबारा नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्हें संबंधित अधिकारियों से घटना की जानकारी मिली है और उन्होंने उन्हें अस्पताल में इलाज करा रहे छात्रों को सर्वोत्तम उपचार उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं।

नेत्रवती नदी के पास खाई में गिरी कार

मेंगलूरु/शुभ लाभ ब्यूरो।

थोक्कोट्टु के नेत्रवती नदी के पास पांच युवकों को ले जा रही एक कार सड़क से उतरकर 15 फीट गहरी खाई में जा गिरी। यह दुर्घटना तब हुई जब तलापडी से मेंगलूरु की ओर जा रही कार राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक पुलिया के पास नियंत्रण खो बैठी और सड़क किनारे खाई में गिर गई। सौभाग्य से, सभी पांचों लोगों को मामूली चोटें आईं। मेंगलूरु दक्षिण यातायात पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और घटना की जांच कर रही है।

वक्फ संशोधन विधेयक के खिलाफ दिल्ली में प्रदर्शन

विरोध के बहाने नफरत फैलाने का कुचक्र : पाल

नई दिल्ली, 17 मार्च (एजेंसियां)। वक्फ संशोधन विधेयक के नाम पर एक बार फिर शाहीनबाग षडयंत्र दोहराने की तैयारी है। भारत को दूसरा बांग्लादेश बनाने के सुनियोजित कुचक्र के तहत यह घेरेबंदी की जा रही है। लोगों को लग रहा है कि वक्फ संशोधन विधेयक को लेकर विपक्षी पार्टियां सियासत कर रही हैं, जबकि असलियत यह है कि सियासत नहीं बल्कि साजिश हो रही है। वोट साधने और सत्ता साधने के लिए वक्फ बोर्ड का बहाना बनाया जा रहा है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड द्वारा किए गए विरोध पर जेपीसी के अध्यक्ष जगदंबिका पाल ने कहा कि मुस्लिम संगठन के इस रुख से विभाजन पैदा होगा और संसद में कानून बनाने के संवैधानिक अधिकार के समक्ष बाधाएं पैदा की जाएंगी।

जेपीसी अध्यक्ष ने खुलासा किया कि पर्सनल लॉ बोर्ड को सुझाव देने के लिए समिति के समक्ष बुलाया गया था और उनकी सभी चिंताओं का निराकरण किया गया था। मुस्लिम संगठन की चिंताओं को हमने अपनी रिपोर्ट में भी शामिल किया था। फिर अब ये जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन क्यों? तमाम संशोधनों के बाद हम एक बेहतर कानून बनने जा रहे हैं। इससे गरीबों, महिलाओं, विधवाओं और बच्चों को भी प्रस्तावित वक्फ कानून का लाभ मिलेगा। जगदंबिका पाल ने यह भी आरोप लगाया कि सारी चीजों को जानने और समझने के बाद भी अगर पर्सनल लॉ बोर्ड प्रदर्शन कर रहा है तो ये देश को नफरत की आग में झोंकने और संसद के कानून बनाने के अधिकार को चुनौती देने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसा करके मुस्लिम संगठन लोगों को भ्रमित करके उनके बीच मतभेद पैदा करने की साजिश रच रहा है। उसका ये कदम बिल्कुल भी लोकतांत्रिक नहीं है।

उल्लेखनीय है कि देशभर में व्यापक पैमाने पर वक्फ संशोधन विधेयक को लेकर विभिन्न मुस्लिम समुदायों और लोगों से चर्चा और सुझावों के बाद इसी साल जनवरी के आखिर में जेपीसी ने अपनी रिपोर्ट सौंपी थी। इसमें बताया गया था कि देशभर से वक्फ बिल में कुल 572 संशोधन सुझाए गए थे। इसमें से 14 संशोधनों को जेपीसी ने मंजूर किया था। जेपीसी अध्यक्ष ने एक बयान में बताया था कि कुल 44 संशोधनों पर विस्तार से चर्चा हुई थी। केंद्र सरकार वक्फ ब्रो्ड कानून में उचित बदलाव कर इस तरह के विवादों को हमेशा के लिए समाप्त करना चाहती है। बदलावों में वक्फ की कमेटी में उचित लोगों को जगह देकर वक्फ की संपत्तियों को उचित तरीके से देखभाल करना और इसका लाभ आम मुसलमानों तक पहुंचाना शामिल है।

मुस्लिम संगठन ऑल इंडिया पर्सनल लॉ बोर्ड ने प्रस्तावित वक्फ संशोधन विधेयक के खिलाफ आज दिल्ली के जंतर मंतर पर विरोध प्रदर्शन किया। विरोध प्रदर्शन में शामिल मुसलमानों ने इसे उनकी धार्मिक आजादी में सरकार का हस्तक्षेप बताया। मुसलमान नेताओं ने केंद्र सरकार से वक्फ संशोधन बिल वापस लेने की मांग की है। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि यदि सरकार इसे वापस नहीं लेती है तो वे पूरे देश में सीएए-एनआरसी जैसा विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। तो क्या एक बार फिर पूरे देश में शाहीन बाग जैसे धरने-प्रदर्शन देखने को मिल सकते हैं? प्रदर्शनकारियों ने इसी तरह के तेवर दिखाए हैं। भाजपा ने कहा है कि यह संसद की कानून बनाने की संवैधानिक शक्ति को संख्या बल के आधार पर दी जा रही चुनौती है। इसे किसी कीमत पर स्वीकार नहीं किया जाएगा।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि वक्फ बिल आम मुसलमानों के हित में है। लेकिन कुछ राजनीतिक दल जिस तरह से इस मुद्दे पर मुसलमानों को भरमाने की कोशिश कर रहे हैं, वह सही नहीं है। इन लोगों को मुसलमानों के मन से भ्रम दूर करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसके पहले सीएए-एनआरसी के मामले में भी मुसलमानों को भ्रमित किया गया था, जबकि इसमें किसी की नागरिकता छीनने जैसी कोई बात नहीं कही गई थी, लेकिन इसके बाद भी आम मुसलमानों को इस मुद्दे पर भ्रमित कर पूरे देश में विरोध प्रदर्शन किए गए। आज के बयान एक बार फिर उसी तरह का इशारा कर रहे हैं।

ऑल इंडिया मुस्लिम सिविल राइट्स के चेयरमैन मोहम्मद अदीब ने वक्फ बिल पास करने पर हश्र देख लेने की धमकी दी है। पूनावाला ने कहा कि यह सर तन से जुदा वाले अंदाज में वक्फ संशोधन बिल के चेयरमैन जगदंबिका पाल को दी गई धमकी है। उन्होंने कहा कि इस तरह की मानसिकता वाले लोगों पर कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए।

सोना तस्करी का मामला

रान्या राव की जमानत पर सुनवाई स्थगित

बेंगलुरु, 17 मार्च (एजेंसियां)। सोना तस्करी मामले में कन्नड़ अभिनेत्री रान्या राव की जमानत याचिका पर सत्र न्यायालय ने सुनवाई स्थगित कर दी है और डीआरआई को आपत्तियां दर्ज करने का समय दिया है। कन्नड़ अभिनेत्री रान्या राव कथित तौर पर हाई-प्रोफाइल गोल्ड स्मगलिंग केस में शामिल होने के कारण न्यायिक हिरासत में है। सत्र न्यायालय में आज 17 मार्च को उनकी जमानत याचिका पर सुनवाई हुई। न्यायालय ने मामले की सुनवाई 19 मार्च तक के लिए स्थगित कर दी है और डीआरआई के वकील को तब तक आपत्तियां दाखिल करने का निर्देश दिया है। आपत्तियां पेश होने के बाद आगे की कार्यवाही जारी रहेगी।

रान्या राव ने 14 मार्च को जमानत के लिए आवेदन किया था। हालांकि, आर्थिक अपराधों के लिए विशेष अदालत ने उन्हें जमानत देने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए कि उनके खिलाफ आरोप गंभीर हैं। न्यायाधीश विश्वनाथ सी गौदर की अध्यक्षता वाली अदालत ने इस बात पर सहमति जताई कि अभिनेत्री को न्यायिक हिरासत में रहना चाहिए। इसके बाद, उनकी कानूनी टीम ने उनकी जमानत के लिए सत्र न्यायालय का रुख किया। रान्या राव को 3 मार्च को बेंगलुरु अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से 12.56 करोड़ रुपये मूल्य के 14.2 किलोग्राम सोने के कब्जे के लिए गिरफ्तार किया गया था। वह दुबई से भारत आई थीं और उनपर एक हाई-प्रोफाइल सोने की तस्करी का हिस्सा होने का आरोप था। हिरासत के दौरान अभिनेत्री ने अपने खिलाफ लगे आरोपों को कबूल कर लिया। उन्होंने अधिकारियों को विस्तार से बताया कि कैसे उन्हें एक अज्ञात नंबर से कॉल आया और उन्हें दुबई से सोने की तस्करी करने के लिए कहा गया। उन्होंने आगे खुलासा किया कि उन्होंने यूट्यूब वीडियो से तस्करी की तरकीब सीखी।

15 मार्च को रान्या राव ने डीआरआई अधिकारियों द्वारा हिरासत में यातना दिए जाने का आरोप लगाया। परप्पना अग्रहारा सेंट्रल जेल से दायर याचिका में उन्होंने आरोप लगाया कि उनके साथ शारीरिक रूप से मारपीट की गई, उन्हें कई बार थप्पड़ मारे गए और उन्हें सोने और खाने के लिए भी नहीं दिया गया। इतना ही नहीं उन्हें दबाव में खाली दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के लिए भी मजबूर किया गया। अपनी याचिका में रान्या ने यह भी आरोप लगाया कि डीआरआई अधिकारियों ने धमकी दी कि अगर उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया तो वे उनके पिता की पहचान उजागर कर देंगे। रान्या पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) रामचंद्र राव की सौतेली बेटी हैं, जिन्हें कर्नाटक राज्य सरकार ने तत्काल प्रभाव से अनिवार्य छुट्टी पर भेज दिया था।

दिल्ली-एनसीआर से पकड़े गए सात बांग्लादेशी

नई दिल्ली, 17 मार्च (एजेंसियां)। पूर्वी जिला के स्पेशल स्टाफ ने अवैध रूप से दिल्ली-एनसीआर में रह रहे सात बांग्लादेशी नागरिकों को पकड़ा है।

सभी भारत-बांग्लादेश के बॉर्डर के नजदीक नदी में तैर कर भारत की सीमा में दाखिल हुए थे। सूचना मिलने के बाद पुलिस की टीम ने पहले कृष्णा नगर से एक आरोपी को दबोचा। बाद में इसकी निशानदेही पर लक्ष्मी नगर, लाजपत नगर, कृष्णा नगर, सीमापुरी के अलावा शालीमार गार्डन, गाजियाबाद से दबोचा है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान दिलावर खान, ब्यूटी बेगम, रफीकुल, तौहीद, मोहम्मद अजहर, जाकिर मलिक व 15 साल की एक नाबालिग लड़के के रूप में हुई है।

पुलिस ने इनके पकड़े जाने की सूचना एफआरआरओ को दे दी है। फिलहाल इनको डिटेंशन सेंटर भेज दिया गया है, जल्द ही उनको वापस इनके देश भेजने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। पुलिस पकड़े गए आरोपियों से पूछताछ कर मामले की छानबीन कर रही है। इस बात का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है कि इनका कोई और साथी तो यहां नहीं रह रहा। पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त अभिषेक धानिया ने बताया कि उनकी टीम भारत में अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों की पहचान उनके देश भेजने में जुटी हुई है। इसी कड़ी की जांच के दौरान टीम को पता चला कि कुछ बांग्लादेशी भारत में रह रहे हैं। सूचना के बाद अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त नित्या राधा कृष्णा के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया।

काफी प्रयासों के बाद 16 मार्च को टीम ने दिलावर खान नामक एक आरोपी को दबोचा। पूछताछ के दौरान आरोपी खुद को पश्चिम बंगाल का नागरिक बताने लगा। सख्ती से पूछताछ के बाद आरोपी दिलावर खान ने कबूल लिया कि वह बांग्लादेशी नागरिक है। बाद में उसकी निशानदेही पर छह अन्य नागरिकों को दिल्ली-एनसीआर से बरामद किया गया। पूछताछ के दौरान इन सभी ने बताया कि यह लोग सीमा पर मौजूद नदी पार करके भारत की सीमा में दाखिल हुए थे। यहां आने के बाद यह अलग-अलग दिशाओं में बिखर गए। इनको लगता था कि ऐसा करने से यह पहचाने नहीं जाएंगे। पुलिस पकड़े गए आरोपियों से पूछताछ कर मामले की छानबीन कर रही है।

बिहार में पुलिस के बाद अब एसएसबी जवानों पर हमला

नोट तस्करों के हमले में पांच जवान घायल

किशनगंज, 17 मार्च (एजेंसियां)। बिहार में कई जगह पुलिसकर्मियों पर हमले के बाद अब किशनगंज में एसएसबी जवानों पर हमला किया गया है, जिसमें पांच जवान गंभीर घायल हुए हैं। यही नहीं, स्थानीय लोगों ने हमले के बाद कुछ जवानों को बंधक भी बना लिया।

किशनगंज जिले के बेलवा गांव में सोमवार को एसएसबी (सशस्त्र सीमा बल) की टीम पर एक सनसनीखेज हमला हुआ। यह घटना उस समय हुई जब डडइ की 19वीं बटालियन की टीम करेंसी तस्करी की सूचना पर कार्रवाई करने पहुंची थी। तस्करों का पीछा कर जब जवानों ने उन्हें पकड़ने की कोशिश की, तभी वहां मौजूद स्थानीय लोगों ने जवानों को घेर लिया और उन पर हमला कर दिया। घटना के दौरान स्थानीय लोगों ने डडइ के पांच जवानों को बंधक बना लिया, जिससे स्थिति तनावपूर्ण हो गई। जवानों पर अपहरण का आरोप लगाकर ग्रामीणों ने हिंसक प्रतिक्रिया दी, जिससे पूरा इलाका अफरा-तफरी में बदल गया।

एसएसबी टीम को बेलवा इलाके में करेंसी तस्करी की गुप्त सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर जवानों ने कुछ संदिग्धों का पीछा करना शुरू किया और जब वे उन्हें पकड़ने में सफल होने लगे। उसी दौरान स्थानीय लोगों ने तस्करों के बचाव में जवानों को घेर लिया। ग्रामीणों ने अपहरण का आरोप लगाकर एसएसबी जवानों को निशाना बनाया और उन पर हमला बोल दिया। इस हमले में जवान राजेश सुधु, रामचंद्र कुमार, धर्मेंद्र कुमार, सुखदेव कुमार और राजेश साहनी गंभीर रूप से घायल हो गए। जवानों को बंधक बनाए जाने के बाद बड़ी मुश्किल से स्थिति को नियंत्रण में लिया गया। घायल जवानों को तत्काल अस्पताल ले जाया गया, जहां उनका इलाज जारी है।

घटना की सूचना मिलते ही प्रशासन ने मौके पर भारी संख्या में पुलिस बल की तैनाती कर दी है। इलाके में तनाव को देखते हुए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं ताकि स्थिति और न बिगड़े। वहीं, इस घटना पर एसडीपीओ गौतम कुमार ने कहा कि घटना बेहद गंभीर है और इसकी उच्चस्तरीय जांच की जा रही है। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों की पहचान की जा रही है और गिरफ्तारी के लिए छापामारी भी की जा रही है। उन्होंने बताया कि कोई भी दोषी बख्शा नहीं जाएगा।

यह बिहार में पुलिस और सुरक्षा बलों पर हो रहे हमलों की एक और कड़ी है, जो कानून व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करती है। एक तरफ एसएसबी जवान देश की सीमाओं और आंतरिक सुरक्षा को मजबूत बनाने में लगे हैं, वहीं दूसरी ओर ऐसे हमले उनकी सुरक्षा को भी खतरे में डाल रहे हैं। फिलहाल पूरे मामले की जांच जारी है और प्रशासन ने दोषियों पर कड़ी कार्रवाई का भरोसा दिलाया है।

कुपवाड़ा में जारी मुठभेड़ में एक आतंकी मारा गया

जम्मू, 17 मार्च (ब्यूरो)। उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के क्रुंभुरा, जचलदारा राजवार हंदवाड़ा में सोमवार को सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हुई, जिसमें एक आतंकवादी मारा गया। मुठभेड़ जारी है। इस बीच कुलगाम में सुरक्षाबलों ने एक आईईडी बरामद की है।

एक शीर्ष पुलिस अधिकारी ने बताया कि क्रुंभुरा, जचलदारा राजवार में जारी मुठभेड़ में अब तक एक आतंकवादी मारा गया है। इससे पहले, कुपवाड़ा जिले के क्रुंभुरा, जचलदारा राजवार हंदवाड़ा में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में विशेष खुफिया जानकारी के आधार पर सुरक्षा बलों द्वारा एक संयुक्त तलाशी अभियान शुरू किया गया था। उन्होंने कहा कि अभियान के दौरान छिपे हुए आतंकवादियों ने सुरक्षा बलों पर गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके बाद जवाबी कार्रवाई की गई और मुठभेड़ शुरू हो गई। अभियान अभी भी जारी है, और आगे के विवरण की प्रतीक्षा है।

अधिकारी ने बताया कि इलाके में दो से तीन आतंकी फंसे हो सकते हैं। भारी गोलीबारी हुई। इलाके को सील कर दिया गया है। अतिरिक्त बल तैनात किया गया है। वहीं, सुरक्षाबलों ने नागरिकों को घर के अंदर रहने और मुठभेड़ स्थल के आस-पास आवाजाही से बचने की सलाह दी है। मुठभेड़ के दौरान एक एके-47 राइफल और अन्य युद्ध सामग्री बरामद की गई है। अभी ऑपरेशन जारी है और सुरक्षा बलों द्वारा इलाके को घेर लिया गया है। इस मुठभेड़ में आतंकवादी के शव के अलावा और भी महत्वपूर्ण सामान बरामद होने की संभावना है। फिलहाल, और जानकारी का इंतजार किया जा रहा है। आतंकवादियों के खिलाफ ऑपरेशन को लेकर सुरक्षा बलों की सतर्कता जारी है और इलाके में किसी भी अन्य आतंकवादी के छिपे होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। याद रहे मार्च महीने में यह जम्मू-कश्मीर में पहली मुठभेड़ है. पिछले महीने जम्मू-कश्मीर में दो अलग-अलग आतंकी घटनाओं में एक पूर्व सैनिक और दो सैन्यकर्मियों की मौत हो गई थी.

इस बीच सोमवार को कुलगाम जिले के कैमोह इलाके में सुरक्षाबलों ने एक इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस का पता लगाया। एक शीर्ष पुलिस अधिकारी ने बताया कि कैमोह में पुलिस और सुरक्षाबलों की संयुक्त टीम ने एक आईईडी का पता लगाया। उन्होंने कहा कि जल्द ही बम निरोधक दस्ते की एक टीम को मौके पर बुलाया गया और आईईडी को निष्क्रिय करने के प्रयास जारी हैं। इस बीच, एहतियात के तौर पर सुरक्षाबलों ने इलाके की घेराबंदी कर दी है।

सोनमर्ग में खुशी का माहौल

दो महीने में आए 1.33 लाख से अधिक पर्यटक

जम्मू, 17 मार्च (एजेंसियां)। चाहे कश्मीर कम बर्फबारी और सूखे से जूझ रहा है पर सोनमर्ग के लिए यह खुशी का माहौल है कि इस साल के पहले दो महीनों में ही आने वाले पर्यटकों की संख्या 1.33 लाख को पार कर चुकी है। अधिकारियों ने इसकी पुष्टि की है कि मध्य कश्मीर के गंदरबल जिले में स्थित दर्शनीय हिल स्टेशन सोनमर्ग में 2025 के पहले दो महीनों के दौरान पर्यटकों की आमद में बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने बताया कि जनवरी से 10 मार्च तक कुल 1,33,854 टूरिस्टों ने इसके बर्फ से ढके परिदृश्यों का आनंद लिया, जो क्षेत्र के पर्यटन उद्योग के लिए सकारात्मक बदलाव का संकेत है। पर्यटन विभाग के अनुसार, अकेले जनवरी में 55,934 पर्यटक आए, जिनमें 1,114 विदेशी टूरिस्ट और इतनी ही संख्या में घरेलू पर्यटक शामिल थे। जबकि फरवरी में 57,186 पर्यटकों के साथ बढ़ोतरी का सिलसिला जारी रहा, जिसमें 2,019 अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक और 1,565 स्थानीय पर्यटक शामिल थे। 1 मार्च से 10 मार्च तक सोनमर्ग में अतिरिक्त 20,734 पर्यटक आए। इसकी तुलना में, पिछले साल सोनमर्ग में कुल मिलाकर लगभग 8 लाख पर्यटक आए थे

उद्योग जगत के हितधारक सोनमर्ग सुरंग की बदौलत आगंतुकों की संख्या में वृद्धि का श्रेय बेहतर पहुंच को देते हैं, जो पूरे सर्दियों में चालू रहती है। पहले, भारी बर्फबारी के कारण यह क्षेत्र तीन से चार महीने तक कटा रहता था, लेकिन नई सुरंग ने इस क्षेत्र को साल भर सुलभ बना दिया है। यह विकास होटल व्यवसायियों, ट्रैवल एजेंटों और स्थानीय व्यवसायों के लिए एक बड़ा बदलाव रहा है, जो अपनी आजीविका के लिए पर्यटन पर निर्भर हैं। पर्यटकों की बढ़ती आमद न केवल सोनमर्ग के लिए बल्कि कश्मीर में शीतकालीन पर्यटन के व्यापक पुनरुत्थान के लिए भी एक सकारात्मक संकेत है, एक प्रवृत्ति जिससे पूरी घाटी को लाभ होने की उम्मीद है।

शुभ लाभ
खबरें जो सोच बदल दे
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

डबल इंजन की सरकार ने सहारनपुर को दी नई पहचान : योगी

365 उद्यमियों को वितरित किया गया ऋण

सहारनपुर/लखनऊ, 17 मार्च (एजेंसियां)।

सहारनपुर के वुड कार्विंग को वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट के माध्यम से वैश्विक मान्यता मिल रही है। आज दुनिया में करीब एक हजार करोड़ की कीमत के वुड कार्विंग प्रोडेक्ट का एक्सपोर्ट हो रहा है। आज सहारनपुर का वुड कार्विंग दुनिया के मार्केट में पहुंच रहा है। सहारनपुर को दिल्ली और लखनऊ से जोड़ने के लिए कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है। जल्द ही सहारनपुर से दिल्ली का रास्ता मात्र पौने दो घंटे में पूरा किया जा सकेगा। यहां पर मां शाकुंभरी विश्वविद्यालय का निर्माण अंतिम दौर में है जबकि दस साल पहले यहां विश्वविद्यालय का निर्माण एक कल्पना थी। वहीं मां शाकुंभरी धाम का सुंदरीकरण किया जा रहा है। ऐसे में आने वाले श्रद्धालुओं को कोई परेशानी नहीं होगी। सहारनपुर में एक अलग ही ऊर्जा देखने को मिलती है। उस ऊर्जा के साथ जब डबल इंजन की सरकार जुड़ती है तो सहारनपुर को एक नई पहचान प्राप्त होती है। मुझे यहां के ऊर्जावान उद्यमी, युवाओं और अन्नदाता किसानों से बहुत कुछ जानने और सीखने का अवसर प्राप्त होता है। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को सहारनपुर में मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान (सीएम युवा) के तहत 365 उद्यमियों को ऋण

वितरण में कही।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कार्यक्रम के दौरान कई उद्यमियों को ऋण का चेक, ओडीओपी के तहत गुड कार्विंग प्रोडक्ट बनाने के टूल्स और प्रमाण पत्र प्रदान किये। इससे पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने युवा उद्यमियों द्वारा लगाए गए ओडीओपी प्रोडक्ट की प्रदर्शनी का अवलोकन किया। साथ ही उनके स्टॉल पर जाकर प्रोडक्ट की जानकारी हासिल की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कोई सरकार इसलिए नहीं बनायी जाती है कि वह भाई भतीजावाद करके लूट खसोट करे बल्कि इसलिए बनायी जाती है कि वह आपकी पहचान और उद्यमिता का सम्मान करने के साथ उसे आगे बढ़ाए। पूरे प्रदेश में होली की खुशियां उत्साह और उमंग के साथ मनायी गयी। वहीं सरकार ने यूपी पुलिस के 60,244 आरक्षी पदों का झटके में रिजल्ट निकाल करके युवाओं के सपनों को उड़ान दी है। इस रिजल्ट में सहारनपुर के भी बहुत सारे युवाओं ने अपनी जगह बनाई है। सीएम ने विधायकों से कहा कि वह पुलिस भर्ती परीक्षा में चयनित अभ्यर्थियों के ट्रेनिंग में जाने से पहले उनके साथ बैठक करें, इससे अन्य युवाओं को हौसला बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि वर्ष 1947 से 2017 के बीच उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग में केवल 10,000 महिलाएं ही कार्य करतीं थीं जबकि हमने एक ही भर्ती में 12,000 से अधिक बेटियों को भर्ती किया है। इससे पहले भी 1,56,000 भर्ती की गईं थीं। वहीं पिछली सरकारों में भाई भतीजा वाद के अलावा कुछ नहीं होता था। पिछले साढ़े सात वर्षों में 7 लाख से अधिक नौजवानों को सरकारी नौकरी दी गयी है। इन भर्तियों में कोई भाई भतीजा वाद, जातिवाद, क्षेत्र और भाषा का आरोप नहीं लगा सकता है। अब किसी एक गांव के लोग भर्ती नहीं होते हैं बल्कि प्रदेश के 75 के 75 जनपदों का युवा भर्ती हो रहा है। युवाओं के सपनों को पूरा करने के लिए मुख्यमंत्री अभ्युदय कोचिंग की व्यवस्था की गई है, जिसे आगे बढ़ाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि डबल इंजन की सरकार के लिए लोकहित और राष्ट्रहित सर्वोपरि है।

डबल इंजन की सरकार लोक हित और राष्ट्र हित को ध्यान में रख करके काम कर रही है। प्रयागराज में महाकुंभ में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगायी। इस दौरान प्रयागराज ही नहीं बल्कि आस-पास के जिलों के लोगों व्यापार कर करोड़ों रुपये कमाए। बुलंदशहर के एक परिवार के नौजवान ने फोटोग्राफी के माध्यम से लाखों रुपए कमाए। वह फोटो खींच कर तत्काल देता था। किसी ने दातुन तो किसी ने चाय बेचकर पैसे कमाए। वहीं कुछ लोग आस्था पर उंगली उठा रहे थे लेकिन खुद न चाहते हुए भी वो डुबकी लगाने के लिए मजबूर हो गए। महाकुंभ ने उत्तर प्रदेश को एक पहचान दी है। इतना बड़ा आयोजन केवल उत्तर प्रदेश ही कर सकता है। दुनिया में कोई और नहीं करा सकता है। संभल में पिछली सरकारों में होली पर कर्फ्यू लग जाता था, वहीं हमारी सरकार में धूमधाम से होली मनाई गई और शांतिपूर्ण तरीके से जुमे की नमाज भी हुई है। सीएम ने कहा कि अच्छा कार्य करने के लिए अच्छी नियत, सकारात्मक पहल और टीमवर्क चाहिए। वर्ष 2017 से पहले प्रदेश में कोई उद्योग लगाना नहीं चाहता था। उस दौरान कस्बे के कस्बे खाली हो गए थे, प्रदेश से व्यापारी भाग रहा था। बेटियां स्कूल पढ़ने के लिए दूर के रिश्तेदारों और हॉस्टल में रहने के लिए मजबूर थी। वहीं इन 8 वर्षों में बेटी, व्यापारी, आम नागरिक सभी सुरक्षित हैं जबकि माफिया और उनके गुर्गे असुरक्षित जरूर हुए हैं। आज प्रदेश देश में बड़ी अर्थव्यवस्था बन कर उभरा है।

सीएम ने कहा कि प्रदेश में नए उद्यमी तैयार किये जा रहे हैं। इसकी शुरुआत मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना के माध्यम से शुरू हो रही है।

इसके तहत पहले चरण में एक लाख युवाओं को बिना ब्याज का लोन दिया जा रहा है। अब तक 31,000 युवा उद्यमियों लोन वितरित की कार्रवाई आगे बढ़ चुकी है। सहारनपुर में आज मेडिकल कॉलेज और नर्सिंग कॉलेज बन रहे हैं। यहां बस स्टैंड, सिटी में जल भराव की समस्या का समाधान किया जा चुका है। सहारनपुर को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करने की कार्रवाई चल रही है। उन्होंने कहा कि एमएसएमई का बहुत बड़ा बेस उत्तर प्रदेश में है। उत्तर प्रदेश पहला राज्य है, जहां एमएसएमई यूनिट को सुरक्षा गारंटी दी जा रही है।

आपदा के दौरान उद्यमी के साथ कोई घटना या दुर्घटना होने पर पांच लाख रुपये का सुरक्षा बीमा प्रदान किया जा रहा है। सीएम ने कहा कि मुख्यमंत्री युवा उद्यमी केवल ऋण वितरण कार्यक्रम नहीं है बल्कि सरकार उद्यमियों के साहूकार और सूदखोर से मुक्त कराना चाहती है। सीएम ने कहा कि सहारनपुर में स्पोर्ट्स कॉलेज का निर्माण हो रहा है जबकि पिछली सरकारों ने अधूरा छोड़ दिया था। वहीं मेरठ में मेजर ध्यानचंद स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी का निर्माण किया जा रहा है, जिसे इसी सत्र में हम शुरू करने जा रहे हैं।

इस अवसर पर मंत्री सुनील शर्मा, मंत्री राकेश सचान, मंत्री बृजेश सिंह, मंत्री जसवंत सैनी, महापौर डॉ. अजय कुमार सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष मांगेराम चौधरी, विधान परिषद सदस्य श्रीचंद्र शर्मा, विधायक राजीव गुंबर, कीरत सिंह, मुकेश चौधरी, देवेंद्र निम, भाजपा जिलाध्यक्ष महेंद्र सिंह, महानगर अध्यक्ष शीतल विश्नोई आदि उपस्थित थे।

सीएम योगी ने किया मां शाकंभरी विश्वविद्यालय का निरीक्षण

लखनऊ, 17 मार्च (एजेंसियां)।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को मां शाकंभरी विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया। इस दौरान सीएम ने विश्वविद्यालय के निर्माण कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने निर्माणाधीन विश्वविद्यालय के मॉडल का भी अवलोकन किया। इस मौके पर जनप्रतिनिधि, जिला प्रशासन और विश्वविद्यालय के अधिकारी भी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विश्वविद्यालय के निरीक्षण के दौरान एडमिन ब्लॉक, लाइब्रेरी ब्लॉक, गर्ल्स हॉस्टल ब्लॉक, ब्वॉयज हॉस्टल ब्लॉक, वीसी रेजिडेन्स, फैसिलिटी सेंटर, कैंटीन, विद्युत सब-स्टेशन, पुलिस चौकी, हेल्थ सेंटर, बाउन्ड्री वॉल इत्यादि के निर्माण कार्यों की अद्यतन स्थिति की जानकारी प्राप्त की। मुख्यमंत्री ने निर्माण कार्यों की समीक्षा के दौरान कहा कि सरकार युवाओं के उज्ज्वल भविष्य एवं उनकी बेहतर शिक्षा के प्रति संवेदनशील है। उच्च शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के उन्नयन में मां शाकंभरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर बेहतर योगदान देगा। ऐसे में निर्माण कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार्य नहीं होगी। उन्होंने कार्यदायी संस्था को विश्वविद्यालय के निर्माण कार्यों को निर्धारित मानकों के अनुसार गुणवत्तापूर्ण ढंग से शीघ्रता से पूर्ण करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने निर्देशित किया कि सम्बन्धित फर्म विश्वविद्यालय के एडमिन ब्लॉक, एडमिनिस्ट्रेशन ब्लॉक, वीसी हाउस, बाउण्ड्री वॉल, सड़क व सीवर सहित समस्त वाह्य कार्यों का निर्माण प्राथमिकता के साथ पूर्ण करे। अतिरिक्त मैनपावर लगाकर निर्माण कार्यों में तेजी लाई जाए। धन की किसी भी प्रकार की समस्या नहीं आने दी जायेगी। मुख्यमंत्री ने निर्माण कार्य में प्रगति नहीं आने पर जिलाधिकारी को सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए।

कारगर साबित हो रहा यूपी का एंटी रोमियो स्क्वायड

24 हजार से अधिक अभियोग दर्ज, 32 हजार पर हुई कार्रवाई

लखनऊ, 17 मार्च (एजेंसियां)।

प्रदेश की बेटियों और महिलाओं की सुरक्षा को लेकर योगी सरकार की पहल और योजनाएं एक बार फिर विभिन्न राज्यों के लिए रोल मॉडल बनकर उभरी हैं। दिल्ली सरकार ने ईव टीजिंग और उत्पीड़न पर रोक लगाने के लिए योगी सरकार की एंटी रोमियो स्क्वायड की तर्ज पर शिष्टाचार स्क्वायड का गठन करने का फैसला लिया है। यह स्क्वायड यूपी के एंटी रोमियो स्क्वायड की तरह ही काम करेगा। बता दें कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मनचलों और शोहदों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के लिए प्रदेश में एंटी रोमियो स्क्वायड का गठन किया था।

डीजीपी प्रशांत कुमार ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप मनचलों और शोहदों के खिलाफ कार्रवाई के लिए एंटी रोमियो स्क्वायड का गठन किया गया था। इसके लिए प्रदेश के हर थाने में महिला और पुरुष पुलिसकर्मियों की अलग से तैनाती की गयी थी। इसमें शामिल पुलिसकर्मी को स्कूल, कॉलेज, मुख्य बाजारों, मंदिर, भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर गश्त कर बेटियों, महिलाओं से बातचीत कर उन्हें सुरक्षा के संबंध में जागरूक करना था। साथ ही मनचलों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करना था। डीजीपी ने बताया कि सीएम योगी के निर्देश पर प्रदेश भर में लगातार एंटी रोमियो स्क्वायड द्वारा अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत 22 मार्च 2017 से 5 फरवरी 2025 तक 1,08,85,450 स्थानों पर 4,00,58,562 व्यक्तियों को चेक किया गया है।

यूपी के सरकारी स्कूल देंगे निजी स्कूलों को टक्कर

ग्रेटर नोएडा में 1.30 करोड़ की लागत से बना स्मार्ट स्कूल

ग्रेटर नोएडा, 17 मार्च (एजेंसियां)।

योगी सरकार परिषदीय विद्यालयों को आधुनिक शिक्षा केंद्रों में बदलने की दिशा में तेजी से कार्य कर रही है। ऑपरेशन कायाकल्प योजना के तहत अब परिषदीय विद्यालय सिर्फ स्कूल नहीं, बल्कि अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त समावेशी शिक्षा केंद्र के रूप में विकसित हो रहे हैं। इसी कड़ी में ग्रेटर नोएडा के मथुरापुर में 1.30 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित हाईटेक विद्यालय का उद्घाटन 19 मार्च को किया जाएगा। इस ऐतिहासिक पहल का शुभारंभ प्रदेश के बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संदीप सिंह करेंगे।

योगी सरकार की प्राथमिकता केवल अधिक विद्यालय खोलना नहीं, बल्कि उनकी गुणवत्ता को

बेहतर बनाना है। आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने के उद्देश्य से स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल बोर्ड, प्रयोगशालाएं, समावेशी शिक्षा सुविधाएं और स्वच्छता व स्वास्थ्य प्रबंधन को विशेष रूप से शामिल किया गया है। वर्तमान में इस विद्यालय में 90 छात्र अध्ययनरत हैं, लेकिन सरकार का लक्ष्य आगामी सत्र में 150 से अधिक बच्चों का प्रवेश सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा है। योगी सरकार की इस पहल से अब सरकारी विद्यालय भी निजी स्कूलों की तरह उच्चस्तरीय सुविधाओं से लैस हो रहे हैं, जिससे छात्रों को समान अवसर मिल सकें।

इस नवनिर्मित विद्यालय में छात्रों की शिक्षा को आधुनिक और प्रभावी बनाने के लिए स्मार्ट क्लासरूम की सुविधा दी गई है, जहां प्रत्येक कक्षा में डिजिटल बोर्ड और स्मार्ट लर्निंग टूल्स लगाए गए हैं। शिक्षा के साथ-साथ स्वच्छता और स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखा गया है। छात्रों के लिए शुद्ध पेयजल की व्यवस्था आरओ और वाटर फिल्टर के माध्यम से की गई है, वहीं छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग शौचालय बनाए गए हैं, जिससे स्वच्छता और सुविधा दोनों सुनिश्चित हो सकें। विद्यालय में सुरक्षा के भी विशेष प्रबंध किए गए हैं।

आकस्मिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हर कक्षा में दो दरवाजे बनाए गए हैं, ताकि किसी भी आपात स्थिति में छात्रों को आसानी से निकाला जा सके। मिड-डे मील के लिए भी अलग से एक भवन तैयार किया गया है, जहां छात्र आराम से बैठकर भोजन कर सकेंगे। इसके अलावा, बच्चों के समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में खेलकूद और प्रयोगशाला की भी विशेष व्यवस्था की गई है, जिससे वे न सिर्फ शारीरिक रूप से सक्रिय रह सकें, बल्कि वैज्ञानिक प्रयोगों के माध्यम से व्यावहारिक शिक्षा भी प्राप्त कर सकें।

योगी सरकार समावेशी शिक्षा को प्राथमिकता देते हुए दिव्यांग छात्रों के लिए विशेष सुविधाएं विकसित कर रही है। इस विद्यालय को 'दिव्यांग अनुकूल विद्यालय' के रूप में विकसित किया गया है, जिससे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को बिना किसी बाधा के शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सके। विद्यालय परिसर में दिव्यांग छात्रों की सुगमता को सुनिश्चित करने के लिए रैंप और रेलिंग सहित विशेष सहायक उपकरण उपलब्ध कराए गए हैं। विद्यालय में विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की जा रही है, जो दिव्यांग छात्रों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रदान करेंगे। समावेशी शिक्षा की इस पहल से दिव्यांग छात्र बिना किसी भेदभाव के मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में शामिल हो सकेंगे और उन्हें आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलेगा।

योगी सरकार शिक्षा के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा दे रही है। इस विद्यालय का निर्माण 'ग्रीन स्कूल' मॉडल के अनुरूप किया गया है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और सतत विकास के सिद्धांतों को अपनाया गया है। विद्यालय निर्माण के दौरान यह सुनिश्चित किया गया कि किसी भी पेड़ को न काटा जाए, बल्कि इसके स्थान पर अधिक से अधिक पौधारोपण किया जाए। इससे विद्यालय परिसर हरा-भरा बना रहेगा और बच्चों को स्वच्छ व शुद्ध वातावरण में अध्ययन करने का अवसर मिलेगा।

लखनऊ सुपर जायंट्स की टीम से मिले सीएम योगी

जीत के लिए मुख्यमंत्री ने दी शुभकामनाएं

लखनऊ, 17 मार्च (एजेंसियां)।

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के रोमांचक मुकाबलों से पहले लखनऊ सुपर जायंट्स की टीम ने सोमवार को टीम ओनर संजीव गोयनका और कप्तान ऋषभ पंत के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने टीम के खिलाड़ियों, कोचिंग स्टाफ और प्रबंधन से जुड़े वरिष्ठ अधिकारियों को आगामी आईपीएल सीजन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि लखनऊ सुपर जायंट्स ने बीते वर्षों में शानदार प्रदर्शन किया है और यह टीम प्रतिभा, अनुशासन और खेल भावना का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस सीजन में भी सभी खिलाड़ी अपने खेल कौशल से आईपीएल ट्रॉफी जीतने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। मुख्यमंत्री ने टीम को संबोधित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश आज खेल के क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत कर रहा है। राज्य में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा कई अहम कदम उठाए गए हैं, जिससे प्रदेश के युवा खेल के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। उन्होंने खिलाड़ियों से कहा कि वे संघर्ष, अनुशासन और खेलभावना के साथ खेलें और युवाओं के लिए प्रेरणा बनें। उन्होंने विश्वास जताया कि लखनऊ सुपर जायंट्स इस बार आईपीएल में शानदार प्रदर्शन करेगी और फाइनल में जीत दर्ज करेगी। भेंट के दौरान एलएसजी टीम ने उत्तर प्रदेश में खेल संस्कृति के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की और कहा कि लगातार प्रयासों का ही परिणाम है कि आज उत्तर प्रदेश से बड़ी संख्या में खिलाड़ी विभिन्न राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं में बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं। इस मुलाकात में टीम के कप्तान ऋषभ पंत (कप्तान) आर्यन जुयाल, हिम्मत सिंह, अब्दुल समद, शाहबाज अहमद, युवराज चौधरी, एचआर सुहास, अर्शिन कुलकर्णी, आयुष बडोनी, सिद्धार्थ एम, दिग्वेश राठी, आकाश सिंह, प्रिंस यादव, मोहसिन खान, रवि विश्नोई, शार्दूल ठाकुर, शिवम मावी, डेविड मिलर, एडन मार्करम, मैथ्यू पॉल, निकोलस पूरन, शामर माल्वर्न की उपस्थिति रही। साथ ही कोचिंग स्टाफ से मेंटॉर ज़हीर खान, जस्टिन लैंगर, विजय दहिया, लांस क्लूजनर की मौजूदगी रही। मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान एलएसजी के सीओओ विनय चोपड़ा और टीम मैनेजर सौम्यदीप आदि की मौजूदगी भी रही।

संपादकीय

होली पर इतना तनाव क्यों

होली गुजर गई, लेकिन माहौल बेहद तनावपूर्ण रहा। हमने जिस भाव और रंगों में होली को देखा और खेला है, वे आज गायब रहे। रंगों के इंद्रधनुष थे, उल्लास और उमंग के भाव भी थे, लेकिन विभाजन और कड़वाहट भी थी। जब मस्जिदों को तिरपाल से ढका जा रहा था, तब मन स्तब्ध था। लगातार सवाल उठते रहे कि आखिर हम किस देश में रह रहे हैं? हमारी धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता और भाईचारा कहां गायब हो गए? मस्जिद को तिरपाल से क्यों ढका गया था? क्या होली के रंगों से भी कोई नापाक होता है? उप्र के 15 जिलों में तिरपालबाजी की गई। यह कोई सामान्य स्थिति नहीं थी? हमने तो ऐसा कभी नहीं देखा। होली के दिन तो रूठने वाले भी खुश हो जाते हैं। यह त्योहार ही सद्भाव, सौहार्द और उल्लास का है। बेशक 2020 के बाद कुछ मस्जिदों पर तिरपालें डाली जाती रही हैं, लेकिन उनमें न तो तनाव था, न नफरत, न सांप्रदायिक दंगों की साजिशें और न ही वे सुर्खियां बनीं। अदृश्यसैन्य बलों, पीएसी, पुलिस और सरकार के तनाव और सुरक्षा के फोकस उप्र के संभल जिले पर ही थे। गली-मुहल्लों में इतने जवान तैनात थे अथवा मार्च कर रहे थे कि आम आदमी के गुजरने की जगह ही बेहद संकरी थी। ऐसा लगता रहा मानो किसी आतंकी हमले की आशंका हो! साल भर में '52 जुमे (शुक्रवार) बनाम होली का एक जुमा' मुहावरा एक पुलिस अधिकारी ने उछाला और उप्र सरकार ने उसे नोटिस थमाने के बजाय होली का एजेंडा ही बना लिया। नेता उसी तर्ज पर बयान देने लगे। मंत्री संजय निषाद ने कहा कि जिन्हें रंगों से परहेज है, वे देश छोड़ कर पाकिस्तान चले जाएं। हरियाणा सरकार के मंत्री अनिल विज एक कदम और आगे बढ़ गए- 'हिंदुस्तान हिंदुओं के लिए ही है।' कइयों ने यह व्यंग्य भी कसा कि रंग न खेलने वाले अपने घरों में ही बंद रहें, बच्चों के साथ खुश रहें और नमाज भी घर में ही पढ़ लें। आखिर यह किस संविधान के अनुच्छेद या कानून की धारा में लिखा है? क्या यह देश किसी धर्म, समुदाय विशेष की बपौती है? सवाल यह भी है कि शुक्रवार को होली या किसी अन्य पर्व के साथ दूसरे समुदायों के त्योहार भी हो सकते थे! ऐसे तनाव हिंदुओं और जैन, सिखों, पारसी, ईसाई, बौद्धों के बीच कभी नहीं देखे गए। हिंदू और मुसलमान के दरमियान ही तनाव, नफरत क्यों होती है? 1964 में भी होली और रमजान का जुमा साथ-साथ मनाए गए थे। तनाव की न तो तिरपालें ढकी गईं और न ही कोई सांप्रदायिक दंगा हुआ। अब बेशक उप्र सरकार दावा कर रही है कि होली शांति से मनाई गई। कहीं, कुछ भी गलत या अनिष्ट नहीं हुआ, लेकिन उप्र के ही शाहजहांपुर, उन्नाव, बिजनौर, अलीगढ़, मुरादाबाद के अलावा लखनऊ और अयोध्या तक में तनावग्रस्त झड़पें क्यों हुईं? सवाल यह भी किया जाना चाहिए कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हर वक्त 'सनातन' और '80:20' की माला क्यों फेरते रहते हैं? यह भाजपा का वोट-मंत्र हो सकता है, लेकिन प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री तो सभी के होते हैं। उप्र ही नहीं, झारखंड के रांची, हजारीबाग, गिरिडीह, बिहार के पटना और मुंगेर, राजस्थान के सीकर और पंजाब के लुधियाना आदि में खूब पथराव किए गए, कांच की बोतलों से प्रहार किए गए, दुकानों और पुलिस वाहनों को फूंक दिया गया। मुंगेर में तो हत्या की होली खेली गई। आखिर इतना गुस्सा, इतनी नफरत, एक-दूसरे को मार देने की खुंदक क्यों थी? होली पर इन कुत्सित भावों और जानलेवा हमलों के मायने ही क्या है? यह पर्व देश के करीब 116 करोड़ हिंदुओं और करीब 21 करोड़ मुसलमानों की अग्निपरीक्षा थी, जिसमें समग्र रूप से सभी नाकाम रहे। होली तो मुगल बादशाह भी खेलते थे। याद करो अमीर खुसरो और बुल्ले शाह की कविताएं। तनाव की तिरपालें बेमानी थीं और विभाजक थीं।

रंगों के इंद्रधनुष थे, उल्लास और उमंग के भाव भी थे, लेकिन विभाजन और कड़वाहट भी थी। जब मस्जिदों को तिरपाल से ढका जा रहा था, तब मन स्तब्ध था। लगातार सवाल उठते रहे कि आखिर हम किस देश में रह रहे हैं? हमारी धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता और भाईचारा कहां गायब हो गए? मस्जिद को तिरपाल से क्यों ढका गया था? क्या होली के रंगों से भी कोई नापाक होता है? उप्र के 15 जिलों में तिरपालबाजी की गई। यह कोई सामान्य स्थिति नहीं थी? हमने तो ऐसा कभी नहीं देखा। होली के दिन तो रूठने वाले भी खुश हो जाते हैं। यह त्योहार ही सद्भाव, सौहार्द और उल्लास का है। बेशक 2020 के बाद कुछ मस्जिदों पर तिरपालें डाली जाती रही हैं, लेकिन उनमें न तो तनाव था, न नफरत, न सांप्रदायिक दंगों की साजिशें और न ही वे सुर्खियां बनीं। अदृश्यसैन्य बलों, पीएसी, पुलिस और सरकार के तनाव और सुरक्षा के फोकस उप्र के संभल जिले पर ही थे। गली-मुहल्लों में इतने जवान तैनात थे अथवा मार्च कर रहे थे कि आम आदमी के गुजरने की जगह ही बेहद संकरी थी। ऐसा लगता रहा मानो किसी आतंकी हमले की आशंका हो! साल भर में '52 जुमे (शुक्रवार) बनाम होली का एक जुमा' मुहावरा एक पुलिस अधिकारी ने उछाला और उप्र सरकार ने उसे नोटिस थमाने के बजाय होली का एजेंडा ही बना लिया। नेता उसी तर्ज पर बयान देने लगे। मंत्री संजय निषाद ने कहा कि जिन्हें रंगों से परहेज है, वे देश छोड़ कर पाकिस्तान चले जाएं।

भारत ने वर्ष 2024 में अमेरिका को लगभग 74,000 करोड़ रुपए की दवाईयों का निर्यात किया

ट्रंप प्रशासन के टैरिफ संबंधी निर्णयों से कैसे निपटे भारत

प्रह्लाद सबनानी

चीन, कनाडा एवं मेक्सिको से अमेरिका में होने वाले विभिन्न उत्पादों के आयात पर तो टैरिफ को बढ़ा भी दिया गया है। इसी प्रकार भारत के मामले में भी ट्रम्प प्रशासन का मानना है कि भारत, अमेरिका से आयातित कुछ उत्पादों पर 100 प्रतिशत तक का टैरिफ लगाता है अत: अमेरिका भी भारत से आयात किए जा रहे कुछ उत्पादों पर 100 प्रतिशत का टैरिफ लगाएगा।

ट्रंप प्रशासन अमेरिका में विभिन्न उत्पादों के हो रहे आयात पर टैरिफ की दरों को लगातार बढ़ाते जाने की घोषणा कर रहा है क्योंकि ट्रम्प प्रशासन के अनुसार इन देशों द्वारा अमेरिका से किए जा रहे विभिन्न उत्पादों के आयात पर ये देश अधिक मात्रा में टैरिफ लगाते हैं। चीन, कनाडा एवं मेक्सिको से अमेरिका में होने वाले विभिन्न उत्पादों के आयात पर तो टैरिफ को बढ़ा भी दिया गया है। इसी प्रकार भारत के मामले में भी ट्रम्प प्रशासन का मानना है कि भारत, अमेरिका से आयातित कुछ उत्पादों पर 100 प्रतिशत तक का टैरिफ लगाता है अतः अमेरिका भी भारत से आयात किए जा रहे कुछ उत्पादों पर 100 प्रतिशत का टैरिफ लगाएगा। इस संदर्भ में हालांकि केवल भारत का नाम नहीं लिया गया है बल्कि "टिट फोर टेट" एवं "रेसिप्रोकल" आधार पर कर लगाने की बात की जा रही है और यह समस्त देशों से अमेरिका में हो रहे आयात पर लागू किया जा सकता है एवं इसके लागू होने की दिनांक भी 2 अप्रेल 2025 तय कर दी गई है। इस प्रकार की नित नई घोषणाओं का असर अमेरिका सहित विभिन्न देशों के पूंजी (शेयर) बाजार पर स्पष्टतः दिखाई दे रहा है एवं शेयर बाजारों में डर का माहौल बन गया है। भारत ने वर्ष 2024 में अमेरिका को लगभग 74,000 करोड़ रुपए की दवाईयों का निर्यात किया है। 62,000 करोड़ रुपए के टेलिकॉम उपकरणों का निर्यात क्या है, 48,000 करोड़ रुपए के पर्ल एवं प्रेशस स्टोन का निर्यात किया है, 37,000 करोड़ रुपए के पेट्रोलीयम उत्पादों का निर्यात किया है, 30,000 करोड़ रुपए के स्वर्ण एवं प्रेशस मेटल का निर्यात किया है, 26,000 करोड़ रुपए की कपास का निर्यात किया है, 25,000 करोड़ रुपए के इस्पात एवं अल्यूमिनियम उत्पादों का निर्यात किया है, 23,000 करोड़ रुपए सूती कपड़े का निर्यात का किया है, 23,000 करोड़ रुपए की इलेक्ट्रिकल मशीनरी का निर्यात किया है एवं 22,000 करोड़ रुपए के समुद्रीय उत्पादों का निर्यात किया है। इस प्रकार, विदेशी व्यापार के मामले में अमेरिका, भारत का सबसे बड़ा साझीदार है। अमेरिका अपने देश में विभिन्न वस्तुओं के आयात पर टैरिफ लगा रहा है क्योंकि अमेरिका को ट्रम्प प्रशासन एक बार पुनः वैभवशाली बनाना चाहते हैं परंतु इसका अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर ही विपरीत प्रभाव होता हुआ दिखाई दे रहा है। अमेरिकी बैंकों

के बीच किए गए एक सर्वे में यह तथ्य उभरकर सामने आया है कि यदि अमेरिका में विभिन्न उत्पादों के आयात पर टैरिफ इसी प्रकार बढ़ाते जाते रहे तो अमेरिका में आर्थिक मंदी की सम्भावना बढ़कर 40 प्रतिशत के ऊपर पहुंच सकती है, जो हाल ही में जे पी मोर्गन द्वारा 31 प्रतिशत एवं गोल्डमैन सैचस 24 प्रतिशत बताई गई थी। इसके साथ ही, ट्रम्प प्रशासन के टैरिफ सम्बंधी निर्णयों की घोषणा में भी एकरूपता नहीं है। कभी किसी देश पर टैरिफ बढ़ाने के घोषणा की जा रही है तो कभी इसे वापिस ले लिया जा रहा है, तो कभी इसके लागू किए जाने के समय में परिवर्तन किया जा रहा है, तो कभी इसे लागू करने की अवधि बढ़ा दी जाती है। कुल मिलाकर, अमेरिकी पूंजी बाजार में सधे हुए निर्णय होते हुए दिखाई नहीं दे रहे हैं इससे पूंजी बाजार में निवेश करने वाले निवेशकों का आत्मविश्वास टूट रहा है। और, अंततः इस सबका असर भारत सहित अन्य देशों के पूंजी (शेयर) बाजार पर पड़ता हुआ भी दिखाई दे रहा है। हालांकि, ट्रम्प प्रशासन द्वारा टैरिफ को बढ़ाए जाने सम्बंधी लिए जा रहे निर्णयों का भारत के लिए स्वर्णिम अवसर भी बन सकता है। क्योंकि, भारतीय जब भी दबाव में आते हैं तब तब वे अपने लिए बेहतर उपलब्धियां हासिल कर लेते हैं। इतिहास इसका गवाह है, कोविड महामारी के खंडकाल में भी भारत ने दबाव में कई उपलब्धयां हासिल की थीं। भारत ने कोविड के खंडकाल में 100 से अधिक देशों को कोविड बीमारी से सम्बंधित दवाईयां एवं टीके निर्यात करने में सफलता हासिल की थी। विदेशी व्यापार के मामले में चीन, कनाडा एवं मेक्सिको अमेरिका के बहुत महत्वपूर्ण भागीदार हैं। वर्ष 2021-22 के आंकड़ों के अनुसार, उक्त तीनों देश लगभग 65,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का व्यापार प्रतिवर्ष अमेरिका के साथ करते हैं। इसके बावजूद अमेरिका ने उक्त तीनों के साथ व्यापार युद्ध प्रारम्भ कर दिया है। भारत के साथ अमेरिका का केवल 11,300 करोड़ अमेरिकी डॉलर का ही व्यापार था। अब ट्रम्प प्रशासन की अन्य देशों से यह अपेक्षा है कि वे अमेरिकी उत्पादों के आयात पर टैरिफ कम करे अथवा अमेरिका भी इन देशों से हो रहे विभिन्न उत्पादों पर उसी दर से टैरिफ वसूल करेगा, जिस दर पर ये देश अमेरिका से आयातित उत्पादों पर वसूलते हैं। यह सही है कि भारत अमेरिका से आयातित वस्तुओं पर अधिक टैरिफ लगाता है क्योंकि भारत अपने किसानों और व्यापारियों को बचाना चाहता है। भारत में कृषि क्षेत्र के उत्पादों पर 25 से 100 प्रतिशत तक आयात कर लगाया जाता है जबकि कृषि क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य उत्पादों पर कर की मात्रा बहुत कम हैं। भारत ने विनिर्माण एवं अन्य क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ा ली है परंतु कृषि क्षेत्र में अभी भी अपनी उत्पादकता बढ़ाना है। हाल ही के समय में भारत ने कई उत्पादों के आयात पर टैरिफ की दर घटाई भी है। भारत के साथ दूसरी समस्या यह भी है कि यदि भारत आयातित उत्पादों पर टैरिफ कम करता है तो भारत में इन उत्पादों के आयात बढ़ेंगे और भारत को अधिक अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता पड़ेगी इससे भारतीय रुपये का और अधिक अवमूल्यन होगा तथा भारत में मुद्रा स्फीति का दबाव बढ़ेगा। विदेशी निवेश भी कम होने लगेगा और अंततः भारत में बेरोजगारी बढ़ेगी। भारत में सप्लाई चैन पर दबाव भी बढ़ेगा। इन समस्त समस्याओं का हल है कि भारत अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते करे। परंतु, अन्य देश चाहते हैं कि द्विपक्षीय समझौतों में कृषि क्षेत्र को भी शामिल किया जाय, इसका रास्ता आपसी चर्चा में निकाला जा सकता है। अमेरिका एवं ब्रिटेन के साथ भी द्विपक्षीय व्यापार समझौते सम्पन्न करने की चर्चा तेज गति से चल रही है। हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान यह घोषणा की गई थी कि भारत और अमेरिका के बीच विदेशी व्यापार को 50,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर प्रतिवर्ष के स्तर पर लाए जाने के प्रयास किए जाएंगे। इस सम्बंध में भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर तेजी से काम चल रहा है। दूसरे, अब भारत को उद्योग एवं कृषि क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ानी होगी।

दृष्टि कोण

रंग, लोकगीत और परंपराओं का उत्सव

पुरानी रामपुर बुशैहर रियासत के दो सुप्रसिद्ध मेले, एक अंतरराष्ट्रीय लवी मेला तथा दूसरा जिला स्तरीय फाग मेला होता है। फाग मेला हिंदू त्योहार होली के एक दिन बाद शुरू होता है। यह मेला बुशैहर रियासत के पदम पैलेस में शुरू होता है। यहां होली वाले दिन तीन भाई देवता साहिब रचोली जाख, देवता साहब गसो तथा देवता साहिब बसाहुरू एक-दूसरे को होली लगाते पदम पैलेस पहुंचते हैं। तभी से फाग मेले का आगाज शुरू हो जाता है। बसाहरा देवता ब्रह्मा, महेश और विष्णु का रूप हैं। ऐसी मान्यता है कि पुराने समय में बुशैहर रियासत के साथ लगते चार क्षेत्र जिसमें प्रमुख शिमला, कुल्लू, किन्नौर तथा मंडी के सुकेत परगना के देवी-देवता तथा देवलू अपने-अपने वाद्य-यंत्रों के साथ अपने पारंपरिक वेशभूषा को जीवंत रखते हुए रामपुर बुशैहर में आगमन करते थे, जो बदस्तूर आज भी जारी है। आज भी इस रियासत के राज परिवार को अपना आशीर्वाद देने आते हैं। फाग मेले को मनाने की प्रथा द्वापर युग से चली आ रही है। बुशहर रियासत की राजधानी शोणितपुर हुआ करती थी। देवताओं के प्रति असीम प्यार एवं श्रद्धा पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री वीरभद्र सिंह का भी किसी से छुपा नहीं था। इस मेले का जब आगाज होता है तो राज परिवार का मुखिया या परिवार का अन्य वरिष्ठ सदस्य का यहां होना निश्चित होता है। अन्यथा कई बार देवता लोक रुष्ट होकर वापस भी चले जाते हैं। वैसे ऐसा बहुत कम हुआ है। कभी स्व. श्री वीरभद्र सिंह जी के निजी व्यस्तता के चलते यह परंपरा का निर्वहन राजपरिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा पहाड़ी नाटी के धुरे में चोंरें (याक के बाल का) को हिलाते हुए नृत्य को और भी लुभावन कर देता है। पुरानी परंपराओं का स्थान आधुनिकता ने ले लिया है। किसी समय फाग मेले में बुशहर रियासत के लोग अपनी पारंपारिक वेशभूषा में शिरकत कर नाटी का आनंद लेते थे। यहां नाटी आज भी लगती है, परंतु पुराने लोग ही अपनी पारंपरिक वेशभूषा में देखे जाते हैं, क्योंकि युवाओं को पारंपरिक वेशभूषा से शायद परहेज शुरू हो गया है। इसी प्रकार मेले में विशेष प्रकार के व्यंजन परोसे जाते थे। लोग गांव से पोलडु, बटुरु तथा अन्य व्यंजन लाते थे जिसका आधुनिकता में फास्ट फूड ने स्थान ले लिया है। बुशहर के मेलों में मौढ़ी का विशेष महत्व रहता था। मौढ़ी को चावल और गेहूं के दानों को भूनकर बनाया जाता है जिसमें चुली की गुठली, अखरोट, गरी, भांग का बगुडू तथा गुड़ मिलाकर तैयार किया जाता था। पुराने समय में फाग मेला आपसी मिलन का भी स्थान होता था। दूरदराज के दुर्गम क्षेत्रों से लोग पैदल चल कर मेले में आते थे। अपने एक साल से बिछुड़े रिश्तेदारों व मित्रों से मिल कर मौढ़ी का आदान-प्रदान करते थे। उनका मानना था कि मौढ़ी के आदान-प्रदान से आपसी भाईचारा बढ़ता है। ऐसी भी मान्यता है कि पुराने समय में फाग मेला में गर्मी शुरू होने के कारण जनजातीय और दुर्गम क्षेत्रों के लोग बर्फ लाकर राजदरबार में बेचा करते थे। हर साल तकरीबन 20 से ऊपर देवी-देवताओं को निमंत्रण भेजा जाता है। कई बार नगर परिषद तथा स्थानीय प्रशासन की इच्छाशक्ति से लोक संगीत संध्या का प्रावधान भी किया जाता है, जो निहत पारम्परिक बुशैहर की संस्कृति के अनुरूप होता है। ताकि डेविड कार्ड, क्रेडिट कार्ड, फ्री फायर, रील की एक्टिंग और मोबाइल फोन की आभासी दुनिया के अलावा यह भी पता चल सके कि वाद्य यन्त्रों की देव धुनों में भी संगीत पनपता है। देवते नचाते है, देव लोक नाचता है, किसी बन्द कमरे में मोबाइल कैद से बेहतर मेले में लोग अपनत्व होने का आनंद प्राप्त करते हैं। रामपुर बुशैहर का फाग मेला हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर का एक अनमोल हिस्सा है, जो परंपरा, भक्ति और लोकजीवन के रंगों को एक साथ समेटे हुए है। अपनी भव्यता, लोकनृत्य, पारंपरिक रीति-रिवाजों और आध्यात्मिकता के कारण क्षेत्र के सबसे महत्वपूर्ण उत्सवों में से एक माना जाता है। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोए हुए यह मेला बसंत ऋतु के आगमन और रंगों के त्योहार होली का उत्सव मनाने के लिए आयोजित किया जाता है। स्थानीय लोग पारंपरिक वेशभूषा में लोक नृत्य और संगीत प्रस्तुत करते हैं, जो क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करता है। यह मेला न केवल स्थानीय निवासियों के लिए, बल्कि पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है, जो हिमाचल प्रदेश की संस्कृति और परंपराओं का अनुभव करना चाहते हैं। रामपुर बुशैहर, जो कि सतलुज नदी के किनारे बसा एक ऐतिहासिक नगर है, अपने समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास के लिए प्रसिद्ध रहा है। यह स्थान प्राचीन समय से व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केंद्र रहा है, जहां तिब्बत, किन्नौर और अन्य पड़ोसी क्षेत्रों से व्यापारी आया करते थे। बुशैहर रियासत के शासकों ने इस क्षेत्र में कई परंपराओं को बढ़ावा दिया, जिनमें मेलों और त्योहारों का विशेष स्थान रहा है। फाग मेले की परंपरा भी इसी गौरवशाली अतीत से जुड़ी हुई है।

कुछ अलग

चाय की चुस्की

अंग्रेजों ने चर्चा के लिए स्कैंडल प्वाइंट बनाए या कॉफी हाउस में आपसी बातचीत का माहौल पैदा किया। इसमें दो राय नहीं कि चाय पर चर्चा की लंबाई पूरे देश को जीत सकती है। विषय कोई भी हो, चाय के सामने उबल सकता है। चाय बेझिझक, बेतकल्लुफ व बेकायदा हो सकती है, लेकिन कॉफी नहीं। एक दिन चाय व कॉफी के बीच भारतीयता व राष्ट्रीयता तक के सवाल उलझ गए। चाय ने चुस्की भरते ही कॉफी को घूर कर देखा और उलाहना देते हुए कहा, 'क्या तू भी ऐसे घूंट खींच सकती है। कॉफी ठहरी सभ्य और संभ्रांत, लिहाजा उसने सहज और तरल भाषा में जवाब दिया, 'मैं अंतिम घूंट को भी शांत रखना चाहती हूं, कभी पीने वाले पर दबाव नहीं डालती। इसलिए मेरे प्यालों में प्यास बची रहती है।' चाय वैसे तो खूब उबल कर आई थी, लेकिन कॉफी की शांति पर अंदर ही अंदर उबलने लगी। वैसे उबलने की संगत निभाती चाय ने अधिकांश भारतीयों को उबलने का कोई न कोई बहाना दिया है। यह इसलिए कि चाय का अपना कोई घर-बार तो है नहीं, जहां दिल किया वहीं उबलने लगी, पेड़ के नीचे या पहाड़ के ऊपर। दूसरी ओर कॉफी को हमेशा हाउस चाहिए, इसलिए पीने वाले मानते हैं कि कॉफी किसी सुलझी हुई गृहिणी की तरह शालीन और समर्पित है। एक समय में एक ही काम करती है, जबकि चाय पीने वाले एक साथ बहुत कुछ कर सकते हैं। चाय का क्या, जले भुने लोग पी लेते हैं और दबे-कुचले भी। यही वजह है कि जो देश चाय पीते हैं, उनके बाशिंदे कुछ भी कर सकते हैं। दरअसल किसी व्यक्ति की योग्यता चाय की प्याली बता सकती है। चाय न होती, तो लोग सात समुद्र पार न करते, बल्कि इमिग्रेशन की वजह भी यही है। अब अगर ट्रंप कुछ घुसपैठिया टाइप प्रवासी भारतीयों के खिलाफ दिखाई दे रहे हैं, तो वहां भी मसला मसाला चाय का है। ट्रंप ठहरे कॉफी पीने वाले, वह क्या जानें कि अदरक की चाय का स्वाद क्या होता है। हम हिंदोस्तानी चाय पीते-पीते बड़े-बड़े काम कर लेते हैं। हरियाणा के किसी गांव के किसी खोखे पर उबली चाय ने ही ये विमर्श पैदा किया होगा कि अमरीका जाने के लिए डंकी रूट पकडऩे का साहसी काम किया जाए। उधर गुजरात की चाय अगर देश की सत्ता जीत सकती है, तो अमरीका किस खेत की मूली। इसलिए जिसने चाय के ज्यादा घूंट पीये, विदेश चला गया। अब हमारे विदेश मंत्री को चाहिए कि वह अपने हाथों से एक-दो प्याली अदरक वाली चाय ट्रंप को पिला दें और फिर देखें सारी विदेश नीति कैसे बदल जाएगी। सारे देश को मिलजुल कर कोशिश यह करनी होगी कि ट्रंप से कॉफी छुड़वा कर चाय की प्याली थमा दी जाए। पिछले दिनों यह सर्वे हो गया कि भारतीय चुनावों में चाय की भूमिका क्यों बढ़ गई। दरअसल भाजपाइयों ने चाय केवल पी नहीं, बल्कि उसे पिलाया भी बड़े इत्मिनान से। कांग्रेस को कॉफी हाउस से बाहर निकलने की फुर्सत ही नहीं मिली। जिस दिन राहुल गांधी अपनी चाय को पीने लायक बना पाएंगे, पार्टी के आगे किसी की सत्ता नहीं बचेगी। देश चाय पर निवेश करता है। मजदूर से नौकरीपेशा तक, हर कोई चाय पर निवेश कर रहा है। चाय सरल है, इसीलिए इस देश के अधिकांश लोग इसके घूंट के साथ किसी भी बात पर यकीन कर लेते हैं। कॉफी पीने वाले यूं ही अर्बन नक्सल नहीं हुए, वे जो पी रहे हैं, उस तरह से देश महान नहीं बनता। दूसरी ओर चाय पीने वाले देश के लिए यकीन करते हुए इसे 'विश्व गुरु' मानते हैं। प्रयागराज के महाकुंभ पर यकीन न हो तो कॉफी पी लीजिए, वरना वहां हर पहुंचने वाले ने चाय के भरोसे तीर्थ यात्रा कर ली। कुछ न मिले तो चाय पी लीजिए, वरना मिजाज में इसे भर लीजिए।

देश दुनिया से

मजबूत घरेलू मांग की नई अहमियत

यकीनन इस समय जब अमरीकी राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रंप की टैरिफ मार से बचने के लिए दुनिया के देश अलग-अलग रणनीतियां अपना रहे हैं, ऐसे में ट्रंप के टैरिफ की मार से मुकाबला करने के लिए भारत की मजबूत घरेलू मांग भारत के लिए एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरकर दिखाई दे रही है। निश्चित रूप से इस समय देश के उपभोक्ता बाजारों में तेजी से बढ़ती खपत भारत के लिए ट्रंप के टैरिफ से जंग में मजबूत हथियार है। हाल ही में 27 फरवरी को डेलॉयट इंडिया और रिटेलर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आरएआई) के द्वारा जारी इंडियाज डिस्क्रेशनेरी स्पेंड इवॉल्यूशन रिपोर्ट के मुताबिक भारत का उपभोक्ता बाजार दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रहा है। भारत के उपभोक्ता बाजार में जो निजी खपत वर्ष 2013 में 87 लाख करोड़ रुपए मूल्य की थी, वह वर्ष 2024 में दोगुनी से भी अधिक 183 लाख करोड़ रुपए से ऊपर निकल गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2026 में भारत तेजी से बढ़ती खपत के कारण दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार बन जाएगा। निःसंदेह देश के उपभोक्ता बाजार को देश का मध्यम वर्ग नई आर्थिक ताकत दे रहा है। देश में आर्थिक सुधारों के साथ ऊंची विकास दर और शहरीकरण की ऊंची वृद्धि दर के बलबूते भारत में मध्यम वर्ग के लोगों की संख्या तेजी से बढ़ी है। हाल ही में प्रकाशित द राइज ऑफ मिडल क्लास इंडिया नामक डॉक्यूमेंट के मुताबिक भारत के मध्यम वर्ग के लोगों की संख्या तेजी से बढक़र 2020-21 में लगभग 43 करोड़ हो गई है और 2047 तक यह संख्या बढक़र 102 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। इस वर्ग को 5 लाख से 30 लाख रुपए की वार्षिक आय वाले परिवारों के रूप में परिभाषित किया गया है। रिसर्च फर्म कांतार की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 2030 तक सालाना 10 हजार डॉलर से अधिक आय वाले भारतीयों की संख्या तीन गुना हो जाएगी। यह 2024 में लगभग 6 करोड़ थी, जो 2030 तक 16.5 करोड़ होगी। निश्चित रूप से नए टैरिफ युद्ध की बढ़ती आशंकाओं के बीच भारत का मध्यम वर्ग भारतीय अर्थव्यवस्था की नई शक्ति बन गया है। भारत के मध्यम वर्ग की मुट्ठियों में बढ़ती क्रय शक्ति और जेन जी एवं मिलेनियल्स की आंखों में उपभोग और खुशहाली के जो सपने दिखाई दे रहे, उनके कारण जहां दुनिया के कई देश भारत से आर्थिक और कारोबारी संबंध बढ़ाने के लिए तत्पर हैं, वहीं दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियां अपने नामी ब्रांडों के साथ भारत के बहुआयामी उपभोक्ता बाजार में नई रणनीतियों के साथ दस्तक दे रही हैं। वैश्विक खुदरा सेवाओं से जुड़ी कंपनियां भारत में तेजी से पैर पसार रही हैं। प्रौद्योगिकी लेकर परिधान, सौंदर्य, फैशन और मनोरंजन क्षेत्र के दिग्गज ब्रांड अब भारत के बड़े महानगरों से होते हुए टियर-2 और टियर-3 शहरों की तरफ बढ़ चले हैं। यह कोई छोटी बात नहीं है कि तमाम वैश्विक चुनौतियों के बावजूद भारत घरेलू मांग की मजबूती से दुनिया में सबसे तेज गति से विकास करने वाली अर्थव्यवस्था बना हुआ है। पिछले 10 वर्षों में खपत बढऩे की दर सबसे अधिक भारत में ही रही है। चालू वित्त वर्ष 2024-25 की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 6.2 फीसदी रही है। भारत की यह विकास दर चीन, अमरीका, इंडोनेशिया, ब्राजील जैसे तमाम विकसित व विकासशील देशों की तुलना में अधिक है। उल्लेखनीय है कि हाल ही में 27 फरवरी को वल्ड बैंक ने अपनी 'ग्लोबल इकोनॉमिक प्रॉस्पेक्ट्स' रिपोर्ट में भारत की अर्थव्यवस्था को निवेश और खपत के मद्देनजर दुनिया की सबसे तेजी से बढऩे वाली बड़ी अर्थव्यवस्था बताया है। वल्ड बैंक के कंट्री डायरेक्टर ऑगस्टे तानो कोउमे ने कहा कि अगर कोई भारत के आर्थिक आंकड़ों से चिंतित है, तो हम कहना चाहेंगे कि चिंता न करें। भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक चमकता सितारा है। भारत सरकार की नीतियों से बढ़ती खपत और बढ़ते निवेश भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती दे रहे हैं। चूंकि घरेलू मांग और खपत भारत की शक्ति है, अतएव निश्चित रूप से एक अप्रैल 2025 से प्रभावी होने वाला वित्त वर्ष 2025-26 का बजट करदाताओं, निवेशकों तथा मध्यम वर्ग की खरीदी की क्षमता बढ़ाते हुए दिखाई दे रहा है। वित्तमंत्री के द्वारा टैक्स में कटौती और टैक्स ढांचे को आसान बनाकर खर्चों और सेविंग्स को बढ़ाने की कोशिश इस बजट में दिखाई दी है। वित्तमंत्री ने मजबूत वित्तीय मुट्ठी से आयकर के नए टैक्स रिजीम की व्यवस्थाओं के तहत करदाताओं को अभूतपूर्व राहतों से लाभान्वित किया गया है। नई टैक्स रिजीम के तहत आयकर स्लैब में बड़ा बदलाव है ताकि अधिक से अधिक करदाता इसे अपनाने के लिए प्रेरित हों। वित्तमंत्री ने नए बजट के तहत न्यू टैक्स रिजीम में टैक्स स्लैब में बदलाव और अतिरिक्त रिबेट की घोषणा की, जिसके तहत 12 लाख रुपए तक की आमदनी पर कोई इनकम टैक्स नहीं देना होगा। निश्चित रूप से इस बजट से सरकार लंबे समय से लंबित मध्यम वर्ग की आर्थिक वित्तीय शिकायतों का समाधान करते हुए आर्थिक वृद्धि की गति को फिर से तेज कर उपयुक्त कर राहत से एक अच्छा आर्थिक चक्र करने की डगर पर आगे बढ़ी हैं। निश्चित रूप से मध्यम वर्ग पर कर का बोझ कम करने से खपत बढ़ेगी। इससे जीएसटी संग्रह में वृद्धि होगी और कर योग्य आय वालों का आधार बढ़ेगा। निःसंदेह इस समय जब ट्रंप के टैरिफ वार की आशंका से दुनिया में बहुत तेजी के साथ आर्थिक और कारोबारी उठापटक चल रही है, तब दुनिया में होते इस बदलाव के मद्देनजर हमें भी भारत के आर्थिक और कारोबारी हितों को सबसे पहले और सबसे ऊपर रखना होगा। इस समय वैश्विक व्यापार नए सिरे से दोबारा स्थापित होने जा रहा है। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) अब मुख्य स्तम्भ के रूप में नहीं बचा है और सबसे पसंदीदा राष्ट्र (एमएफएन) के दर्जे के तहत गैर-भेदभावपूर्ण शुल्क खत्म हो रहे हैं। हर देश चाहता है कि उसके साथ विशेष व्यवहार किया जाए। हमें उसी रास्ते पर चलना होगा तथा देश की मजबूत घरेलू मांग और मध्यम वर्ग की चमकती हुई क्रय शक्ति का आधार बनाकर दुनिया के विभिन्न देशों के साथ आर्थिक और कारोबारी संबंधों को नई दिशा देना होगी। निःसंदेह ट्रंप की टैरिफ संबंधी नई चुनौतियों के बीच भारतीय नीति निर्माताओं के द्वारा ट्रंप प्रशासन की नीतियों से भारत पर होने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभावों का सतत मूल्यांकन करते हुए मजबूत घरेलू मांग की ताकत के आधार पर रणनीतिक रूप से आगे बढऩा होगा। चूंकि भारत जल्द ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है और 2047 तक विकसित भारत के लिए 7.8 फीसदी विकास दर पाने का लक्ष्य है, ऐसे में भारत को भारतीय बाजार में तेजी से खपत बढ़ाने की रणनीति के साथ अमरीका से टैरिफ मार के मुकाबले के लिए सुनियोजित रूप से आगे बढऩा होगा। तभी हम सफल होंगे।

आप का नजरिया

गोलियों के बीच बंबर सिंह

बिलासपुर का गुंडा कौन। एक सवाल जो मुड़-मुड़ कर बिलासपुर से पूछने लगा है कि हे भाई 'यह पूर्व विधायक बंबर ठाकुर पर आक्रमण क्यों हो रहे और इस बार तो गोली ने गहरे जख्मों से पूरे परिवेश को कलंकित किया।' कुछ तो है जो तेरी गली में डाकू आने लगे, वरना इसी राह से तो वो पुजारी जाता है। हो सकता है बंबर ठाकुर किसी सियासी आक्रोश का प्रतीक हो। उनके निजी मसलों में खोट हो, लेकिन कानून व्यवस्था के दर्पण अगर यूं टूटने लगे, तो हिमाचल का चेहरा न जाने कितना विकृत नजर आएगा। विडंबना यह कि होली के दिन अपराध की बारात निकल आई और पिचकारी से गोली निकल आई। यह पहला चित्र नहीं, इससे पूर्व भी युद्ध का मैदान सजा था। वहां कौन लड़ रहा है और हर बार यह बंबर सिंह ठाकुर ही क्यों मिल रहा है। यह कोई गुटीय संघर्ष है या सियासत का नायक अब यूं ही गोलियों के बीच मिलेगा। कम से कम इस गोली कांड ने सैकड़ों तोहमतें बटोर ली हैं और अब चर्चाओं के सदमे रोज मिलेंगे। चर्चाएं कयामत तक पहुंचने लगीं, तो कसूर कहने का नहीं आंखों देखी ने, नफरत के दीये देखे हैं। बिलासपुर की आंखों देखी अब गोलियों के इस षड्यंत्र से डरने लगी। पहले बीबीएन में गोलियों की गलियों से सियासत का प्रभुत्व नाचा और अब सियासत की दौलत में बिलासपुर का अमन चकनाचूर होने लगा है। अपराध नंगे पांव चलकर आ रहा है, लेकिन इसके बीच सियासी चरित्र, सियासी पहचान और सियासत के प्रभाव को हर दौर और हर रुतबे में समझना होगा। आखिर हिमाचल क्यों असामान्य दिखाई देने लगा है और क्यों अपने सामान्य व्यवहार से दूर रहने लगा है। क्या यहां भी सियासत अपने प्रोफेशन से धंधे तक पहुंच गई या तमाम धंधों ने सियासत को पूज लिया। वो रेत-वो बजरी, तेरे महलों ने तो दुकान खोल ली। वो शराब, वो शराबी, तेरे गल्ले ने उसकी जेब लूट ली। कहना न होगा कि हिमाचल में माफिया अब सिर पर चढक़र बोल रहा है। बहुत पहले पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने माफिया के प्रवेश को हर भूमिका में इंगित किया था। अब यह नई सज्जनता है, जिसके पीछे सारा दारोमदार चल रहा है। हिमाचल में जिंदगी के हर पहलू में अगर सियासत रहेगी, तो माफिया हर कदम पे अपना कदम गिनेगा। यह जारी है। देखते ही देखते यह प्रदेश अगर पहाड़ को काटने का हुनर सीख गया, नदी-नालों को छान कर व्यापार सीख गया या चिट्टे की खान में धंधा चला पाया, तो जुर्म की गलबहियों में आर्थिक अपराध बढ़ गए हैं। एक वक्त था जब खच्चरों पर राशन और रेत ढोया जाता था। आज खच्चर के आगे टैक्सी और जेसीबी खड़ी हो गई। यह आर्थिक क्रांति हो सकती है, लेकिन जब इनका संचालन समाज के साथ सियासत करने लगे, तो हर छतरी के नीचे असामान्य राजनीतिक प्रश्रय पैदा हो रहा है। कभी बिकते शराब के ठेके को देखना, कभी सडक़-इमारत के निर्माण से पहले ठेका हासिल करने का तरीका देखना। देखना विकास की उड़ती हुई धूल के नीचे और पीछे कौनसा सियासी पक्ष मजबूती से खड़ा है। इसलिए हिमाचल में राजनीति अब सीधी ठेकेदारी से जुड़ गई है। चाहे कोई भी सत्ता आए, हर विधायक के कुछ कार्यकर्ता ठेकेदार बन जाते हैं। पहले छोटे, फिर बड़े बन जाते हैं।

नेतन्याहू करेंगे शिन बेट प्रमुख रोनेन बार की छुट्टी

तेल अवीव, 17 मार्च (एजेंसियां)।

इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने शिन बेट सुरक्षा सेवा के प्रमुख रोनेन बार को हटाने का फैसला किया है। महीनों के तनाव के बाद उन्होंने रोनेन बार से मुलाकात की।

इस दौरान उन्हें सूचित किया कि वह इस सप्ताह सरकार के समक्ष उनके निष्कासन का प्रस्ताव रखेंगे। यह जानकारी प्रधानमंत्री नेतन्याहू के कार्यालय ने रविवार को दी। माना जाता है कि शिन बेट सुरक्षा सेवा के प्रमुख रोनेन बार को हटाने के लिए नेतन्याहू को सरकार में बहुमत का समर्थन प्राप्त है। इस बीच एक बयान में रोनेन बार ने कहा कि वह अपना पद छोड़ने से पहले कुछ जिम्मेदारियों को पूरा करने का इरादा रखते हैं।

उधर, नेतन्याहू ने रविवार को जारी वीडियो बयान में कहा कि बार के निरंतर अविश्वास के कारण यह निर्णय लिया गया। नेतन्याहू ने कहा कि गाजा में इजराइल के युद्ध लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बार को हटाना जरूरी होगा। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री ने अकसर शिनबेट की आलोचना की है। सुरक्षा चूक के लिए इसके अफसरों को दोषी ठहराया है। वह सात अक्टूबर, 2023 के हमास के हमले को बड़ी सुरक्षा चूक मानते हैं। इस हमले में 1,200 से अधिक लोग मारे गए थे।

शिन बेट ने माना है कि एजेंसी हमलों को रोकने के लिए अपने मिशन में विफल रही है। लेकिन वह यह भी मानते हैं कि सात अक्टूबर के हमले से पहले हमास कतर की आर्थिक मदद से समृद्ध था। उसे इजराइल सरकार का आशीर्वाद प्राप्त था। उल्लेखनीय है कि नेतन्याहू ने हमास के साथ अप्रत्यक्ष बातचीत में शामिल वार्ता दल से बार और मोसाद प्रमुख डेविड बार्निया को हटा दिया है। इस मामले में विपक्षी राजनेताओं ने नेतन्याहू की आलोचना की है। उन्होंने कहा है कि बार की बर्खास्तगी एक राजनीतिक रूप से प्रेरित कदम होगा।

न्यूज ब्रीफ

क्वेटा में जमीयत के नेता मुफ्ती अब्दुल बाकी की गोली मारकर हत्या, पाकिस्तान में लगातार हो रहे आतंकी हमले

क्वेटा। पाकिस्तान के क्वेटा में ताबड़तोड़ गोलियां बरसाकर अज्ञात हमलावरों ने जमीयत उलेमा-ए-

इस्लाम (जेयूआई) के एक वरिष्ठ नेता मुफ्ती अब्दुल बाकी नूरजई की हत्या कर दी। यह घटना क्वेटा एयरपोर्ट रोड पर होना बताई जा रही है। जानकारी अनुसार जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम के नेता मुफ्ती अब्दुल बाकी नूरजई पर क्वेटा एयरपोर्ट रोड पर अज्ञात हमलावरों ने जबरदस्त फायरिंग की। पुलिस ने बताया कि इस हमले में मुफ्ती अब्दुल बुरी तरह से जख्मी हो गए। घायलावस्था में उन्हें करीबी अस्पताल ले जाया गया। यहां अस्पताल के अधिकारियों ने उनकी मौत की पुष्टि करते हुए बताया कि गंभीर रूप से घायल होने की वजह से मुफ्ती अब्दुल ने दम तोड़ दिया है। सुरक्षाबलों ने अज्ञात हमलावरों के खिलाफ मामला दर्ज करते हुए हमले की जांच शुरू कर दी है। कहा जा रहा है कि हमलावरों की पहचान होने के साथ ही दोषियों को सख्त से सख्त सजा दी जाएगी। यहां बताते चलें कि पाकिस्तान में बीते कुछ महीनों में लगातार आतंकी हमले हुए हैं। इसी रविवार क्वेटा से ताफ्तान जा रहे सेना के काफिले पर आतंकी हमला हुआ, जिसमें अनेक सैनिकों की मौत हो गई जबकि कई सैनिक घायल हो गए। इस हमले की जिम्मेदारी बलूच लिबरेशन आर्मी ने ली और दावा किया कि हमले में 90 पाकिस्तानी सैनिकों की मौत हुई है। इससे पहले 11 मार्च को क्वेटा से पेशावर जा रही जाफर एक्सप्रेस को बीएलए के विद्रोहियों ने ही हाईजैक किया था। इस हमले में भी कई सैनिकों और यात्रियों की जान गई थी।

अमेरिका की वित्तपोषित समाचार एजेंसी को ट्रंप ने किया बंद

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आदेश केवल दुनिया के लिए पैनिक नहीं है बल्कि अमेरिका

भी इससे पीडित हो रहा है। ट्रंप ने सरकार द्वारा वित्तपोषित समाचार एजेंसी वॉयस ऑफ अमेरिका को बंद करने का आदेश दिया है। ट्रंप ने समाचार एजेंसी पर पक्षपाती होने का आरोप लगाया। व्हाइट हाउस के एक शीर्ष अधिकारी ने बताया कि वॉयस ऑफ अमेरिका वर्षों से देश के साथ तालमेल बिठाने में विफल रहा। यह कट्टरपंथी अमेरिका का प्रतिनिधित्व करता है और विभाजनकारी प्रोपेगेंडा को बढ़ावा दे रहा है। ट्रंप ने सात सरकारी कार्यालयों को बंद करने के कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए, जिसमें वॉयस ऑफ अमेरिका और रेडियो फ्री यूरोप/रेडियो लिबर्टी की मूल कंपनी यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फॉर ग्लोबल मीडिया भी शामिल है। ट्रंप प्रशासन के एक बयान के अनुसार, यह एजेंसी (वॉयस ऑफ अमेरिका) अमेरिकी करदाताओं पर बहुत बड़ा बोझ है। जिन अन्य सरकारी कार्यालयों को बंद किया गया है, उनमें फेडरल मीडिएशन एंड कॉन्सिलेशन सर्विस, यूएस एजेंसी फॉर ग्लोबल मीडिया, द वुडरो विल्सन इंटरनेशनल सेंटर फॉर स्कॉलर्स, द इंस्टीट्यूट ऑफ म्यूजियम एंड लाइब्रेरी सर्विस, यूएस इंटरएजेंसी काउंसिल ऑन होमलेसनेस, द कम्युनिटी डेवलेपमेंट फाइनेंशियल इंस्टीट्यूशंस फंड और माइनॉरिटी बिजनेस डेवलेपमेंट एजेंसी शामिल हैं।

राशन की जंग में भीड़ ने एक महिला को रौंद डाला

इस्लामाबाद। पहले ही महंगाई की मार झेल चुकी पाकिस्तान की जनता अब राशन के लिए भी जान दांव पर लगा रही है। कराची में राशन के लिए कतार में लगी एक महिला को भीड़ ने रौंद दिया। भगदड़ में अन्य लोगों के घायल होने की भी खबरें हैं। पाकिस्तानी रिपोर्ट के मुताबिक, घटना कराची के बाल्दिया टाउन की है। रविवार शाम रमजान के राशन वितरण के दौरान यहां भगदड़ मच गई थी, जिसमें एक महिला की मौत हो गई और दो लोग घायल हो गए थे। साउथ डीआईजी सैयद असद रजा ने बताया कि स्थानीय यूनियन काउंसिल ने पारदा पार्क में राशन वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया था। पुलिस अधिकारी ने बताया कि एक महिला की मौत हुई है, जिसकी पहचान नहीं हो की है। साथ ही घायलों को कराची के सरकारी अस्पताल में दाखिल कराया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, ईदी फाउंडेशन के प्रवक्ता की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि मृतक महिला की उम्र 22 साल थी।

अमेरिका में धरा रह गया कोर्ट का आदेश, वेनेजुएला गैंग के सैकड़ों लोगों को अल सल्वाडोर भेजा गया

वाशिंगटन, 17 मार्च (एजेंसियां)।

अमेरिका में ट्रंप प्रशासन ने अदालती आदेश की परवाह न करते हुए वेनेजुएला गैंग के सैकड़ों लोगों को निर्वासित कर विमान से अल सल्वाडोर भेज दिया। वाशिंगटन के एक संघीय न्यायाधीश ने शनिवार शाम सात बजे से कुछ पहले प्रशासन की निर्वासन प्रक्रिया पर अस्थाई रोक लगा थी। अगले दिन रविवार को विदेशमंत्री मार्को रुबियो ने घोषणा की कि गिरोह के सदस्य होने के आरोप में सैकड़ों वेनेजुएलावासियों को अमेरिका से अल सल्वाडोर भेजा गया है।

कोर्ट के फैसले के बावजूद ट्रंप प्रशासन ने इस मामले में विदेशी शत्रु अधिनियम की शक्तियों का प्रयोग किया। यह कानून द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी-अमेरिकियों की नजरबंदी में अपनी भूमिका के लिए जाना जाता है। वेनेजुएला सरकार ने कल एक बयान में कहा कि अधिनियम को लागू करने का प्रयास %फिर% से एक अपराध है। सीएनएन की खबर में स्पष्ट किया गया है कि ट्रंप प्रशासन ने अदालत के फैसले के बावजूद निष्कासन की गति बढ़ाने के लिए युद्धकालीन शक्तियों का इस्तेमाल किया। यह व्हाइट हाउस और न्यायपालिका के बीच नवीनतम नाटकीय टकराव है। संघीय न्यायाधीश ने शनिवार शाम प्रशासन के सदियों पुराने विदेशी शत्रु अधिनियम का उपयोग करने की क्षमता को अस्थायी रूप से अवरुद्ध कर दिया था। न्यायाधीश जेम्स बोसबर्ग ने मौखिक रूप से उन प्रवासियों में से कुछ को ले जाने वाले किसी भी विमान को वापस अमेरिका लौटने का आदेश दिया था। सुनवाई के दौरान जज जेम्स बोसबर्ग ने कहा, विशेष रूप से वादी की जानकारी को देखते हुए, जिसका सरकार ने खंडन नहीं किया है, कि उड़ानें सक्रिय रूप से रवाना हो रही हैं और रवाना होने की योजना बना रही हैं, मुझे नहीं लगता कि मैं अब और इंतजार कर सकता हूं। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने रविवार को कहा कि ट्रंप प्रशासन ने न्यायाधीश के आदेश का उल्लंघन नहीं किया, क्योंकि यह उन प्रवासियों के संयुक्त राज्य अमेरिका छोड़ने के बाद जारी किया गया था। अदालत के आदेश का कोई वैधानिक आधार नहीं था। उन्होंने कहा कि किसी एक शहर का एक न्यायाधीश अमेरिकी धरती से शारीरिक रूप से निष्कासित विदेशी आतंकवादियों से भरे विमानवाहक पोत की गतिविधियों को निर्देशित नहीं कर सकता। लेविट ने कहा कि राष्ट्रपति के निर्देश पर, होमलैंड सुरक्षा विभाग ने सप्ताहांत में वेनेजुएला के गिरोह ट्रेन डे अरागुआ के लगभग 300 सदस्यों को गिरफ्तार किया था। विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने निर्वासितों को कैद करने की पेशकश के लिए अल सल्वाडोर के राष्ट्रपति नायब बुकेले का आभार जताया है। बुकेले ने रविवार सुबह घोषणा की कि कथित ट्रेन डे अरागुआ सदस्य अल सल्वाडोर पहुंच गए हैं। उन्हें एक वर्ष की अवधि के लिए आतंकवाद निरोध केंद्र या सीईसीओटी में स्थानांतरित कर दिया गया है। उनकी पोस्ट में कुछ लोगों को हथकड़ी लगाकर बसों से उतारे जाने और उनके सिर मुंडवाए जाने का वीडियो शामिल है।

खैबर पख्तूनख्वा में हुए 5 आतंकी हमले, 3 सुरक्षाकर्मी हताहत

इस्लामाबाद, 17 मार्च (एजेंसियां)।

खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में पांच आतंकी हमलों में तीन सुरक्षाकर्मियों की मौत हो गई। देर रात पांच अलग-अलग आतंकवादी हमलों के बारे में पुलिस ने बताया कि पेशावर और करक जिलों में अलग-अलग जगहों पर हिंसा की घटनाएं हुईं। करक जिले के तख्त नुसरती व खुर्रम मुहम्मद थानों और कुर्रम में ऐसिक खुमारी गैस फील्ड में हुए आतंकवादी हमलों में 'फ्रंटियर कोर (एफसी) के एक जवान और पुलिस के एक अधिकारी की मौत हो गई।

वारदातों में कई सुरक्षाकर्मियों के घायल होने की भी सूचना है। करक के डीपीओ शाहबाज इलाही ने बताया कि आतंकियों ने भारी हथियारों का इस्तेमाल करते हुए खुर्रम थाने और तख्त नुसरती थाने पर हमले का प्रयास किया, लेकिन उनके मंसूबों को नाकाम कर दिया गया।

आतंकी शाकिर मारा गया

पाकिस्तान के आतंकी संगठन लश्कर-ए-इस्लाम का संस्थापक मुफ्ती मुनीर शाकिर शनिवार को एक बम धमाके में मारा गया, जबकि तीन अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि धमाका पेशावर के बाहरी क्षेत्र उरमुर में हुआ। इसे इंप्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) के जरिये अंजाम दिया गया। घायल शाकिर को लेडी रीडिंग अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। हमला शाकिर को निशाना बनाकर किया गया था।

चीन ने पाकिस्तान को सौंपी एक और पनडुब्बी

चीन ने पाकिस्तान को एक और अत्याधुनिक पनडुब्बी सौंपी है। इसमें उन्नत हथियार व सेंसर लगे हुए हैं। चीन पाकिस्तान की नौसैन्य ताकत बढ़ाकर अरब सागर व हिंद सागर में दबदबा बढ़ाना चाहता है। उसने हंगोर श्रेणी की पनडुब्बी को वुहान शहर में लॉन्च किया। इसी श्रेणी की एक पनडुब्बी पहले ही वह पाकिस्तान को दे चुका है।

मध्य और पूर्वी अमेरिका में तूफान का कहर, 39 लोगों की मौत

वाशिंगटन, 17 मार्च (एजेंसियां)।

मध्य और पूर्वी अमेरिका में तूफान ने कहर बरपाया है। अब तक कम से कम से 39 लोगों की मौत हो गई। बवंडर के बीच ओले गिरे हैं। कई जगह बारिश से भी भारी तबाही हुई है।

शनिवार को ट्यूपेलो में 5.12 इंच बारिश होने से दैनिक बारिश का रिकॉर्ड टूट गया। इससे पहले 15 मार्च, 1973 को 2.82 इंच बारिश हुई थी। बॉलिंग ग्रीन में भी शनिवार को 3.3 इंच बारिश के साथ दैनिक रिकॉर्ड टूट गया। 1922 में 15 मार्च को 2.25 इंच बारिश हुई थी। अलबामा, मिसिसिपी, मिसौरी, अर्कांसस और केंटकी, इंडियाना, साउथ कैरोलिना और पॉलडिंग काउंटी और जॉर्जिया बवंडर से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। कई जगह हवा की गति 89 मील प्रति घंटे रही।

नेपाल में सर्वदलीय सरकार बनाने की कवायद शुरू, माओवादी ने रखी शर्त-ओली को देना होगा इस्तीफा

काठमांडू, 17 मार्च (एजेंसियां)।

नेपाल में पूर्व राजा की बढ़ती सक्रियता और उनके समर्थकों के लगातार किए जा रहे प्रदर्शन के बीच संसद के बड़े राजनीतिक दलों के बीच गणतंत्र को मजबूत करने के उद्देश्य से सर्वदलीय सरकार बनाने की कवायद शुरू की गई। प्रमुख विपक्षी दल माओवादी पार्टी ने इसके लिए बड़ी शर्त रखी है। पार्टी ने कहा है कि पहले प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली का इस्तीफा देना होगा।

नेपाल में पूर्व राजा के समर्थन में हजारों लोग सड़क पर उतर कर राज संस्था की पुनर्स्थापना की मांग कर रहे हैं। देश के बड़े राजनीतिक दलों का मानना है कि नेपाली कांग्रेस, एमाले, माओवादी और मधेशवादी दलों को मिलकर सर्वदलीय सरकार का गठन कर गणतंत्र के मजबूत होने का संदेश दिया जाए।

माओवादी के सांसद और प्रचण्ड के करीबी रहे नेता शक्ति बस्नेत ने कहा कि राजा के षडयंत्र का सामना करने के लिए देश में लोकतंत्र, गणतंत्र और संघीयता की रक्षा के लिए तीनों प्रमुख दलों का एक साथ आना अनिवार्य हो गया है। बस्नेत ने बताया कि इन तीनों दलों के नेताओं के बीच संवाद भी शुरू हो चुका है।

बस्नेत ने कहा कि इस विशेष परिस्थिति में

सबसे बड़े दल नेपाली कांग्रेस के नेतृत्व में सरकार का गठन होना चाहिए। बस्नेत ने कहा कि इस परिस्थिति के लिए वर्तमान सरकार और वर्तमान गठबंधन जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि इसकी नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए प्रधानमंत्री ओली को अपने पद से इस्तीफा देना चाहिए ताकि राष्ट्रीय सहमति की सर्वदलीय सरकार के गठन का रास्ता खुल सके। माओवादी के इस प्रस्ताव पर नेपाली कांग्रेस का एक बड़ा तबका समर्थन कर रहा है। कांग्रेस पार्टी के प्रवक्ता डॉ प्रकाश शरण महत ने कहा कि सर्वदलीय सरकार गठन की बात अभी अनौपचारिक रूप से ही चल रही है लेकिन वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति में यह आवश्यक भी है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से लोकतंत्र को समाप्त कर देश के फिर से राजतंत्र के पक्ष में माहौल बनाया जा रहा है उससे सतर्क रहने की आवश्यकता है।

कांग्रेस और माओवादी की तरह सत्तारूढ़ दल एमाले के नेता इस समय देश में राजनीतिक चुनौती होने की बात स्वीकार तो कर रहे हैं पर प्रधानमंत्री के इस्तीफे की शर्त को मानने के लिए तैयार नहीं है। एमाले महासचिव शंकर पोखरेल ने कहा कि प्रधानमंत्री अपना कार्यकाल पूरा करेंगे। उसके बाद ही वो सत्ता हस्तांतरण करेंगे। राष्ट्रीय सहमति की सरकार गठन के प्रयास पर उन्होंने कहा कि माओवादी को अगर सत्ता में आना है तो ओली के नेतृत्व में ही आना चाहिए और उसके लिए बातचीत का दरवाजा खुला है।

इस्राइल में होली-पुरीम त्योहार की धूम, सांस्कृतिक समानताओं का जश्न

तेल अवीव। इस्राइल के जाफा पोर्ट पर तेल अवीव नगरपालिका के सहयोग से भारतीय मिशन ने एक कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें तीन हजार से अधिक इस्राइली और भारतीयों ने होली और यहूदी त्योहार पुरीम धूमधाम से मनाया। दोनों त्योहारों को मनाने के लिए आयोजित इंडिया एट जाफा पोर्ट समारोह में नृत्य, शास्त्रीय संगीत, भारतीय परिधान, मेंहदी, आभूषण और भारतीय व्यंजन सहित भारतीय संस्कृति का जीवंत चित्रण किया गया। बता दें कि होली और यहूदी त्योहार पुरीम हर साल एक ही दिन अथवा एक-दो दिन के अंतराल पर होते हैं। दोनों

त्योहारों में कई समानताएं भी हैं। भारतीय मिशन के उप प्रमुख राजीव बोडवाडे ने कहा, दोनों देश चंद्र कैलेंडर का पालन करते हैं। यह हमारे बीच सांस्कृतिक समानताओं के कई उदाहरणों में से एक है।

भारत ने वेस्टइंडीज को छह विकेट से हराकर जीता इंटरनेशनल मास्टर्स लीग के उद्घाटन संस्करण का खिताब

नई दिल्ली,17 मार्च (एजेंसियां)।

रायपुर में रविवार रात खेले गए इंटरनेशनल मास्टर्स लीग के उद्घाटन संस्करण के फाइनल में भारत ने वेस्टइंडीज को छह विकेट से हराकर खिताब अपने नाम कर लिया।

भारत के लिए अंबाती रायुडू ने 50 गेंदों में 74 रनों की शानदार पारी खेली और टीम को 149 रनों के लक्ष्य तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। उन्हें पहले सचिन तेंदुलकर और फिर गुरकीरत सिंह मान व युवराज सिंह का साथ मिला। रायुडू ने पूरे मैदान में बेहतरीन शॉट लगाए, जबकि तेंदुलकर ने स्ट्राइक रोटेट करते हुए एक शानदार अपर कट खेलकर छक्का जमाया। हालांकि, उनकी पारी ज्यादा लंबी नहीं चली और टीनो बेस्ट ने उन्हें एलबीडब्ल्यू आउट कर दिया। इसके बाद, रायुडू और गुरकीरत ने पारी को आगे बढ़ाया। हालांकि, भारत ने जल्दी-जल्दी तीन विकेट गंवाए, लेकिन युवराज सिंह और स्टुअर्ट बिन्नी ने 18वें ओवर में लक्ष्य हासिल कर टीम को जीत दिला दी। इससे पहले, वेस्टइंडीज के लिए ड्वेन स्मिथ ने 35 गेंदों में 45 रनों की तेजतर्रार पारी खेली, लेकिन उन्हें कप्तान ब्रायन लारा और विलियम पर्किन्स का अधिक सहयोग नहीं मिला। भारतीय स्पिनर शाहबाज नदीम ने बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए वेस्टइंडीज के बल्लेबाजों को रन बनाने में कठिनाई दी। लेंडल सिमंस ने 41 गेंदों में 57 रनों की संघर्षपूर्ण पारी खेली और टीम को 150 के करीब पहुंचाया, लेकिन यह स्कोर भारत को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं था।

न्यूज़ ब्रीफ

दक्षिण अफ्रीकी ऑलराउंडर कॉर्बिन बॉश को पीसीबी ने भेजा कानूनी नोटिस

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका के 30 वर्षीय ऑलराउंडर कॉर्बिन बॉश को पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने

अनुबंध उल्लंघन के मामले में कानूनी नोटिस भेजा है। बॉश ने पाकिस्तान सुपर लीग (पीसीएल) 2025 से अपना नाम वापस ले लिया था, जिसके बाद यह कदम उठाया। आईपीएल में चयन के बाद पीसीएल से हटे बॉश कॉर्बिन बॉश को आगामी आईपीएल 2025 के लिए मुंबई इंडियंस ने लिज़ाड विलियम्स की जगह टीम में शामिल किया है। लिज़ाड विलियम्स चोट के कारण टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। बॉश पहले पीसीएल 2025 में पेशावर ज़ल्मी के लिए खेल रहे थे, लेकिन आईपीएल में अवसर मिलने के बाद उन्होंने पीसीएल से नाम वापस ले लिया। पीसीबी का आधिकारिक बयान पीसीबी ने रविवार को जारी किए गए बयान में कहा, खिलाड़ी को उसके एजेंट के माध्यम से कानूनी नोटिस भेजा गया है और उससे अनुबंधित प्रतिबद्धताओं से पीछे हटने की वजह स्पष्ट करने के लिए कहा गया है। पीसीबी ने यह भी स्पष्ट किया कि बॉश के इस कदम से लीग पर क्या असर पड़ेगा, यह भी नोटिस में उल्लेख किया गया है। बोर्ड ने यह भी कहा कि पीसीबी निर्धारित समय के भीतर खिलाड़ी की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करेगा और फिलहाल इस मामले पर कोई और टिप्पणी नहीं करेगा। पीएसएल और आईपीएल की तारीखें गौरतलब है कि पीएसएल 2025 का आयोजन 11 अप्रैल से 25 मई तक होगा, जबकि आईपीएल 2025, 22 मार्च से 25 मई तक चलेगा। दोनों लीग के कार्यक्रम आपस में टकरा रहे हैं, जिससे कई खिलाड़ियों के चयन को लेकर विवाद की स्थिति बन रही है।

कोलकाता नाइट राइडर्स ने उमरान मलिक के स्थान पर चेतन सकारिया को किया साइन

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 सीजन से पहले कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने बाएं हाथ के तेज गेंदबाज चेतन सकारिया को उमरान मलिक के स्थान पर टीम में शामिल किया है। उमरान मलिक, जिन्हें गत चैंपियन टीम ने 75 लाख रुपये में खरीदा था, एक अज्ञात चोट के कारण पूरे सीजन से बाहर हो गए हैं। 27 वर्षीय चेतन सकारिया को केकेआर ने पिछले सीजन में भी टीम में शामिल किया था, लेकिन उन्हें एक भी मैच खेलने का मौका नहीं मिला था। इसके बाद, वह पिछले साल हुई मेगा नीलामी में नहीं बिक सके थे। हालांकि, अब उन्हें बतौर रिप्लेसमेंट खिलाड़ी 75 लाख रुपये में टीम में जगह मिली है। सकारिया ने आईपीएल में अब तक तीन सीजन (2021-23) में 19 मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 8.43 की इकॉनमी से 20 विकेट हासिल किए हैं। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत राजस्थान रॉयल्स के साथ की थी और 2022 में दिल्ली कैपिटल्स का हिस्सा बने थे। टी20 क्रिकेट में उनके नाम कुल 46 मैचों में 7.69 की बेहतरीन इकॉनमी से 65 विकेट दर्ज हैं।

सीएसके टीम के नेट गेंदबाज बने बिहार के मलय राज

मुम्बई। अब बिहार के भागलपुर का एक युवा क्रिकेटर आईपीएल में गेंदबाजी करता दिखेगा। मलय राज नाम के इस तेज गेंदबाज को चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) ने अपना नेट गेंदबाज बनाया है। ऐसे में अब मलय महेंद्र सिंह धोनी सहित सीएसके के सभी शीर्ष बल्लेबाजों को नेट अभ्यास में गेंदबाजी करते दिखेंगे। मलय का चयन अच्छी गेंदबाजी के कारण हुआ है। आईपीएल 2025 के प्री-सीजन कैंप के लिए बिहार क्रिकेट एसोसिएशन ने उन्हें अनापत्ति प्रमाण पत्र भी दे दिया है।मलय के साथ बिहार के ही जिशान और नजीर भी सीसएके के नेट गेंदबाजों के रूप में शामिल हैं। इन खिलाड़ियों के यात्रा और अन्य खर्च का वहन सीएसके उठाएगा। मलय ने मुश्ताक अली ट्रॉफी, विजय हजारे ट्रॉफी और रणजी ट्रॉफी में बिहार की ओर से खेला है। मलय पटना जिले की ओर से क्रिकेट खेलते हैं। मलय की इस शानदार उपलब्धि से उनके परिजन उत्साहित हैं।

युवाओं के लिए आगे बढ़ने का बड़ा अवसर है खेलो इंडिया पैरा गेम्स : नवदीप सिंह

नई दिल्ली,17 मार्च (एजेंसियां)।

पैरालिंपिक खेल 2024 में स्वर्ण पदक जीतने वाले भाला फेंक खिलाड़ी नवदीप सिंह का मानना है कि खेलो इंडिया पैरा गेम्स पैरा एथलीटों के निरंतर विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है, और यह देश में पैरा खेलों को बढ़ावा देने में सरकार की गहरी दिलचस्पी को दर्शाता है। खेलो इंडिया पैरा गेम्स (केआईपीजी 2025) का दूसरा संस्करण गुरुवार (20 मार्च) से शुरू होने वाला है। अर्जुन पुरस्कार विजेता एथलीट ने बताया कि कैसे यह टूर्नामेंट पैरा एथलीटों के लिए खेल इकोसिस्टम विकसित करने में मदद कर रहा है। नवदीप ने साई मीडिया से कहा, केआईपीजी 2025 वरिष्ठ एथलीटों के लिए एक-दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने का एक बेहतरीन मंच है। हम हर समय एक-दूसरे को प्रेरित भी करते हैं। यह हमें अपने प्रशिक्षण मॉड्यूल का परीक्षण करने और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं से पहले अपनी ताकत और कमजोरियों का अभ्यास करने में मदद करता है। हमें नवोदित एथलीटों से मिलने और प्रतियोगिताओं पर अलग-अलग विचारों और विचारों का आदान-प्रदान करने का भी मौका मिलता है।

उल्लेखनीय है की नई दिल्ली में तीन स्थानों – जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, इंदिरा गांधी स्टेडियम और डॉ. कर्णी सिंह शूटिंग रेंज – में सात दिवसीय टूर्नामेंट में 1200 से अधिक एथलीट भाग लेंगे।

खेलो इंडिया पैरा गेम्स का उद्घाटन संस्करण दिसंबर 2023 में हुआ और सफल साबित हुआ। केआईपीजी के पहले संस्करण में भाग लेने वाले कम से कम 25 एथलीट पेरिस में 2024 पैरालिंपिक के लिए भारत के 84 सदस्यीय दल में शामिल थे।

नवदीप सिंह ने केआईपीजी 2023 में भी भाग लिया था और रजत पदक जीता था। पेरिस में, उन्होंने एफ़41 श्रेणी में भाला फेंक में स्वर्ण पदक जीता। पैरा भाला फेंक खिलाड़ी ने बताया कि कैसे घरेलू स्तर के टूर्नामेंट देश में प्रतिभाओं को सामने लाने में मदद करते हैं और कई खेलों में भारत के लिए पैरा एथलीटों की एक पाइपलाइन बनाते हैं।

24 वर्षीय खिलाड़ी ने कहा, पेरिस पैरालिंपिक में भारत के प्रदर्शन के बाद पैरा खेलों में रुचि बढ़ रही है, जिसमें कई युवा खिलाड़ी शामिल हो रहे हैं। मुझे विश्वास है कि खेलो इंडिया पैरा गेम्स 2025 में भी कई नए एथलीट भाग लेंगे। मुझे उम्मीद है कि देश को नई प्रतिभाएं देखने को मिलेंगी, जिससे भविष्य की संभावनाओं को पहचानने में मदद मिलेगी।

नवदीप ने आगे कहा, घरेलू टूर्नामेंट पैरा एथलेटिक्स के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। हाल ही में संपन्न विश्व पैरा एथलेटिक्स ग्रैंड प्रिक्स 2025 में कई नए एथलीटों को भी शामिल किया गया और उन्हें अवसर मिले। केआईपीजी 2025 देश में प्रतिभाओं को सामने लाने में मदद करेगा।

केआईपीजी 2025 में छह खेलों में भाग लेने वाले एथलीटों की एक बेहतरीन लाइन-अप दिखाई देगी। इस सूची में पेरिस 2024 के स्वर्ण पदक विजेता हरविंदर सिंह (तीरंदाजी), धरमबीर (क्लब थ्रोअर) और प्रवीण कुमार (ऊंची कूद) शामिल हैं। चीन के हांग्जो में 2022 एशियाई पैरा खेलों के पदक विजेता भी प्रतिस्पर्धा करेंगे। टूर्नामेंट में भाग लेने वाले 50 से अधिक पैरा-एथलीट 2028 एलए ओलंपिक चक्र के लिए साई की टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) कोर ग्रुप का भी हिस्सा हैं।

सर्जियो गार्सिया गोल्फ खिताब जीतने के बाद टीम के साथियों के साथ जश्न मनाते हुए

सिंगापुर में स्पेन के सर्जियो गार्सिया गोल्फ खिताब जीतने के बाद टीम के साथियों के साथ जश्न मनाते हुए।

इंटर मियामी ने अटलांटा यूनाइटेड से लिया बदला, मेसी के गोल से 2-1 की हासिल की जीत

नई दिल्ली,17 मार्च (एजेंसियां)।

अर्जेंटीना के दिग्गज फुटबॉलर लियोनेल मेसी ने एक बार फिर शानदार प्रदर्शन किया, जिसकी बदौलत इंटर मियामी ने रविवार को मेजर लीग सॉकर (एमएलएस) के ईस्टर्न कॉन्फ्रेंस की तालिका में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया। इंटर मियामी ने अटलांटा यूनाइटेड को 2-1 से हराकर पिछले सत्र के प्लेऑफ़ में मिली हार का बदला ले लिया।

वेटरन हैती इंटरनेशनल फाफा पिको ने 89वें मिनट में हेडर के जरिए निर्णायक गोल दागा, जिससे मियामी ने इस सत्र में अपनी अजेय लय को बरकरार रखा।

अटलांटा ने की थी तेज़ शुरुआत

अटलांटा ने मैच की शुरुआत में ही इंटर मियामी पर दबाव बना दिया और 11वें मिनट में आइवरी कोस्ट के इमैनुएल लाटे लाथ ने गोल कर टीम को बढ़त दिलाई। यह गोल मिगुएल अल्मिरोन के एक शानदार पास से बना, जिसे ब्रूक्स लेनन ने क्रॉस में तब्दील किया और लाथ ने हेडर के जरिए गेंद को नेट में डाल दिया।

मेसी ने बराबरी का गोल किया

हालांकि, मियामी को बराबरी करने में ज्यादा समय नहीं लगा। 20वें मिनट में अटलांटा के पोलिश मिडफील्डर बार्टोज़ सिल्स्ज़ की गलती का फायदा उठाते हुए मेसी ने गेंद छीन ली। उन्होंने डिफेंडर डेरिक विलियम्स को छकाते हुए शानदार फिनिशिंग के साथ गेंद को गोलकीपर ब्रैड गुज़ान के ऊपर से नेट में डाल दिया।

पिको के हेडर से मियामी की जीत

दूसरे हाफ में मियामी ने कई मौके बनाए, लेकिन अटलांटा के अनुभवी गोलकीपर ब्रैड गुज़ान ने शानदार बचाव किया। 65वें मिनट में उन्होंने मेसी के एक शानदार शॉट को रोका। हालांकि, 89वें मिनट में मियामी को विजयी गोल मिल ही गया। पूर्व बार्सिलोना स्टार जोर्डी आल्बा ने दाईं ओर से एक सटीक क्रॉस दिया, जिसे फाफा पिको ने हेडर के जरिए नेट में डालकर अपनी टीम को जीत दिला दी।

अन्य एमएलएस मैचों के नतीजे

एमएलएस के अन्य मैचों में नैशविल एससी ने फिलाडेल्फिया यूनियन को 3-1 से हराया, जिससे ईस्टर्न कॉन्फ्रेंस की अंक तालिका में फिलाडेल्फिया दूसरे स्थान पर खिसक गया।

वहीं, वेस्टर्न कॉन्फ्रेंस में मौजूदा चैंपियन लॉस एंजेल्स गैलेक्सी ने पोर्टलैंड के खिलाफ 1-1 से ड्रॉ खेलकर इस सत्र का पहला अंक हासिल किया।

हॉकी इंडिया ने सीनियर पुरुष राष्ट्रीय कोचिंग कैंप के लिए 36 सदस्यीय संभावित कोर ग्रुप की घोषणा की

नई दिल्ली,17 मार्च (एजेंसियां)।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने शनिवार को नई दिल्ली में आयोजित हॉकी इंडिया वार्षिक पुरस्कार समारोह के बाद आज बेंगलुरु स्थित भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) में राष्ट्रीय कोचिंग कैंप में वापसी की। हॉकी इंडिया ने इस कैंप के लिए 36 खिलाड़ियों को बुलाया है, जो 28 मार्च तक चलेगा।

भारतीय टीम ने हाल ही में एफआईएच हॉकी प्रो लीग (पुरुष) 2024-25 में शानदार प्रदर्शन किया, जहां उसने अपने घरेलू मैदान पर खेले गए आठ मैचों में से पांच में जीत दर्ज की। भारत फिलहाल 15 अंकों के साथ अंक तालिका में तीसरे स्थान पर है, जबकि इंग्लैंड और बेल्जियम क्रमशः 16 अंकों के साथ पहले और दूसरे स्थान पर हैं।

कैंप को लेकर मुख्य कोच क्रेग फुल्टन ने कहा, खिलाड़ियों के लिए यह काफी व्यस्त सत्र रहा है, जिसमें लगातार प्रतियोगिताएं और उच्च स्तरीय मैच शामिल रहे। इस कैंप में हमारा फोकस फिटनेस और कंडीशनिंग पर रहेगा, साथ ही हालिया प्रदर्शन का विश्लेषण भी किया जाएगा। हमारा ध्यान प्रो लीग के अगले चरण के लिए टीम को तैयार करने पर रहेगा और मैं देखना चाहूंगा कि कुछ युवा खिलाड़ी अपनी प्रतिभा को कैसे साबित करते हैं।

संभावित कोर ग्रुपः

गोलकीपरः कृष्ण बहादुर पाठक, पवन, सूरज करकेरा, मोहित होन्नेनहल्लि शशिकुमार।

डिफेंडर्सः जर्मनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, सुमित, संजय, जुगराज सिंह, अमनदीप लकड़ा, नीलम संजीप, वरुण कुमार, यशदीप सिवाच।

मिडफील्डर्सः राजकुमार पाल, शमशेर सिंह, मनप्रीत सिंह, हार्दिक सिंह, विवेक सागर प्रसाद, नीलकांत शर्मा, मोइरांगथेम रबीचंद्र सिंह, मोहम्मद रहील मौसीन, विष्णुकांत सिंह, राजिंदर सिंह, पूवन्ना सीबी।

फॉरवर्ड्सः अभिषेक, सुखजीत सिंह, ललित कुमार उपाध्याय, गुरजंत सिंह, अंगद बीर सिंह, आदित्य अर्जुन लालगे, बॉबी सिंह धामी, सुदीप चिरमाको, सेल्वम कार्ति, शिलानंद लकड़ा, दिलप्रीत सिंह, उत्तम सिंह।

न्यूकैसल यूनाइटेड ने 70 साल बाद जीता घरेलू खिताब, लिवरपूल को 2-1 से हराकर जीता लीग कप

लंदन,17 मार्च (एजेंसियां)।

न्यूकैसल यूनाइटेड ने 70 वर्षों का घरेलू ट्रॉफी सूखा समाप्त करते हुए रविवार को वेम्बली स्टेडियम में लीग कप (जिसे काराबाओ कप भी कहा जाता है) के फाइनल में मौजूदा चैंपियन लिवरपूल को 2-1 से हरा दिया। डैन बर्न और अलेक्जेंडर इसाक के गोलों ने न्यूकैसल को ऐतिहासिक जीत दिलाई और जिओर्डी प्रशंसकों के लिए जश्न का माहौल बना दिया।

यह न्यूकैसल के लोकल हीरो डैन बर्न के लिए भी खास दिन रहा, जिन्होंने 45वें मिनट में दमदार हेडर के जरिए अपनी टीम को बढ़त दिलाई। न्यूकैसल के प्रशंसकों के जबरदस्त समर्थन के बीच टीम ने सात मिनट बाद ही दूसरा गोल दाग दिया, जब स्वीडिश स्ट्राइकर अलेक्जेंडर इसाक ने लिवरपूल के गोलकीपर काओइम्हिन केलहर को छकाते हुए गोल दागा।

हालांकि, प्रीमियर लीग के टॉप पर चल रही लिवरपूल ने स्टॉपेज टाइम में इटली के फेडेरिको चिएसा के गोल से वापसी की कोशिश की, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और जीत न्यूकैसल के नाम रही।

न्यूकैसल ने लिखी नई इतिहास गाथा

दो साल पहले न्यूकैसल को लीग कप फाइनल में मैनचेस्टर यूनाइटेड के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन इस बार उन्होंने अपनी किस्मत बदल दी। न्यूकैसल के कप्तान ब्रूनो गिमारेस ने ट्रॉफी उठाने से पहले कहा, यह जीत हमारे प्रशंसकों के लिए है। जब मैं यहां आया था, तो मैंने कहा था कि मैं इतिहास में अपना नाम दर्ज कराना चाहता हूं, और अब हम कह सकते हैं कि हम चैंपियन हैं। दूसरी ओर, लिवरपूल की टीम इस मैच में फीकी नजर आई और पेरिस सेंट-जर्मेन से चैंपियंस लीग में पेनल्टी शूटआउट में हारने के बाद पूरी तरह थकी हुई दिखी। लिवरपूल के स्टार खिलाड़ी मोहम्मद सालाह पहली बार 90 मिनट तक खेलने के बावजूद न तो कोई शॉट ले सके और न ही कोई मौका बना सके। लिवरपूल के मैनेजर अर्ने स्लॉट के लिए यह पहला वेम्बली फाइनल था, जिसे वह याद नहीं रखना चाहेंगे। उन्होंने स्वीकार किया, यह निराशाजनक प्रदर्शन था। न्यूकैसल ने वही किया जो वह चाहता था और उसने जीत डिजर्व की।

न्यूकैसल ने शुरू से ही दिखाया दबदबा

मैच की शुरुआत में न्यूकैसल अधिक आक्रामक नजर आया और सैंड्रो टोनाली ने पोस्ट के पास से एक तेज शॉट लगाया। लिवरपूल की टीम पहले हाफ को 0-0 से खत्म करने की कोशिश में थी, लेकिन 45वें मिनट में डैन बर्न ने कीरन ट्रिपियर के कॉर्नर पर शानदार हेडर लगाकर न्यूकैसल के प्रशंसकों को खुशी से झूमने पर मजबूर कर दिया। दूसरे हाफ की शुरुआत में ही न्यूकैसल ने फिर से दबाव बनाया और 52वें मिनट में जैकब मर्फी के हेडर को इसाक ने गोल में तब्दील कर दिया।

सर्राफा बाजार में मामूली गिरावट, सोना और चांदी की घटी कीमत

नई दिल्ली, 17 मार्च (एजेंसियां)।

घरेलू सर्राफा बाजार में लगातार दूसरे दिन मामूली गिरावट दर्ज की गई है। इस गिरावट के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 89,660 रुपये से लेकर 89,810 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है।

इसी तरह 22 कैरेट सोना 82,190 रुपये से लेकर 82,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। कीमत में कमजोरी आने के कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में चांदी भी 1,02,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है।

देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना 89,810 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 82,340 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 89,660 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 82,190 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 89,710 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 82,240 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना 89,660 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 82,190 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 89,660 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 82,190 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 89,810 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 82,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 89,710 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 82,240 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 89,810 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 82,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी सोना सस्ता हुआ है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना 89,660 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 82,190 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

न्यूज ब्रीफ

कच्चे तेल का आयात दिसंबर में 11 फीसदी घटा, रूस और सऊदी से कम हुई सप्लाई

नई दिल्ली। पिछले साल दिसंबर में भारत ने रूस, सऊदी अरब और कुवैत जैसे पश्चिमी एशियाई आपूर्तिकर्ताओं से कच्चे तेल की आयात में दर्जनों फीसदी की कमी देखी है। वाणिज्य विभाग के अनुसार रूस से कच्चे तेल की आयात में 18.48 फीसदी गिरावट आई है, जो दिसंबर 2023 के मुकाबले 3.92 अरब डॉलर कम है। साथ ही, सऊदी अरब और कुवैत से भी आयात में 43.1 और 38 फीसदी की कमी देखी गई है। दिसंबर से पहले रूस से कच्चे तेल की आवक नवंबर, अक्टूबर और सितंबर में क्रमशः 8 फीसदी, 53 फीसदी और 34.2 फीसदी बढ़ी। बड़ी घरेलू रिफाइनरीज में रखरखाव के काम के कारण योजनाबद्ध तरीके से बंदी की वजह से अगस्त में आयात घटा था। ब्रेंट क्रूड की कीमत दिसंबर 2023 की तुलना में दिसंबर 2024 में 4.57 डॉलर प्रति बैरल कम थी। रूस से कच्चे तेल के आयात में कमी न सिर्फ कम कीमत की वजह से है, बल्कि आंकड़ों से पता चलता है कि मात्रा के हिसाब से भी आयात में 12.3 फीसदी की गिरावट आई है। अंतरराष्ट्रीय विश्लेषकों ने पहले कहा था कि रूस में ज्यादा घरेलू मांग की वजह से तेल निर्यात घटा है क्योंकि रखरखाव का काम पूरा होने के बाद ज्यादातर रूस की रिफाइनरियां कामकाज शुरू कर रही हैं। हालांकि कीमत छूट में कमी की भी इसमें भूमिका हो सकती है। आयात के अन्य बड़े स्रोतों सऊदी अरब और कुवैत ने भी क्रमशः 43.1 फीसदी और 38 फीसदी कम तेल भेजा है। इन दो देशों से मात्रा के हिसाब से भी तेल आयात में क्रमशः 36.4 फीसदी और 33.6 फीसदी गिरावट आई है। दोनों देशों से कुल तेल निर्यात में गिरावट के कारण ऐसा हुआ।

रिलायंस जियो ने आईपीएल सीजन के लिए दिया बड़ा ऑफर, 90 दिन तक जमकर चलाएं हॉटस्टार

नई दिल्ली। रिलायंस जियो ने आईपीएल सीजन में क्रिकेट प्रेमियों के लिए एक बड़ा ऑफर पेश किया है। कंपनी ने कहा है कि जियो का सिम चलाने वाले ग्राहकों को 90 दिन तक हॉटस्टार देखने का मौका मिलेगा, बिना कोई अतिरिक्त पैसा खर्च किए। इसके साथ ही जियो ने जियोफाइबर और एयरफाइबर का भी निःशुल्क ट्रायल ऑफर दिया है। यह ऑफर 17 मार्च से 31 मार्च तक उपलब्ध होगा। इस ऑफर का लाभ उठाने के लिए ग्राहकों को 299 रुपये या इससे अधिक का रिचार्ज कराना होगा। निर्देशन और शर्तें लागू होंगी। जियोहॉटस्टार का पैक 22 मार्च से एक्टिवेट होगा और 90 दिनों के लिए लागू रहेगा। इस ऑफर की जानकारी के लिए ग्राहकों को आधिकारिक वेबसाइट पर जांच करनी चाहिए। ऑफर का लाभ उठाने के लिए मौजूदा जियो सिम यूजर को कम से कम 299 रुपये वाला रिचार्ज कराना होगा। वहीं नए जियो सिम ग्राहकों को भी 299 रुपये या उससे ज्यादा के प्लान वाला नया जियो सिम लेना होगा। जिन ग्राहकों ने 17 मार्च से पहले रिचार्ज करा लिया है, वे भी 100 रुपये का ऐड-ऑन पैक लेकर ऑफर का लाभ ले सकेंगे। प्लान के साथ 1.5 जीबी डाटा भी प्रतिदिन मिलेगा। जियो हॉटस्टार का पैक 22 मार्च से एक्टिवेट होगा, जो 90 दिनों के लिए लागू रहेगा।

अदाणी समूह का 2026 में 1.1 लाख करोड़ निवेश का लक्ष्य, ऊर्जा एवं बुनियादी ढांचा कारोबारों में खर्च करेगी यह राशि

नई दिल्ली। देश के शीर्ष उद्योग समूहों में शामिल अदाणी समूह ने वित्त वर्ष 2026 में 1.1 लाख करोड़ रुपये निवेश करने का लक्ष्य रखा है। समूह मुख्य रूप से अपने प्रमुख ऊर्जा एवं बुनियादी ढांचा कारोबारों में यह रकम लगाएगी। चालू वित्त वर्ष में समूह ने पूंजीगत व्यय पर लगभग 92,000 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। समूह के वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार अगले वित्त वर्ष में होने वाले कुल पूंजीगत व्यय में 60,000 करोड़ रुपये का इंतजाम आंतरिक स्रोतों से किया जाएगा और शेष रकम शेयर एवं बॉन्ड जारी कर जुटाई जाएगी। वित्त वर्ष 2025 में समूह दीर्घ अवधि के लिए उधार ली जाने वाली रकम पर ब्याज आदि में औसत खर्च 10.4 प्रतिशत से घटाकर 8.1 प्रतिशत करने में सफल रहा है। इससे समूह को सालाना 4,000 करोड़ रुपये बचत हुई है। समूह को उम्मीद है कि अगले कुछ वर्षों के दौरान उसे लागत इसी तरह कम रखने में कोई परेशानी पेश नहीं आएगी और नई उधारी पर पूंजी लागत 75 से 100 आधार अंक कम रह सकती है।

दूरसंचार विभाग ने लॉन्च किया 5जी हैकाथॉन, विजेता को मिलेंगे पांच लाख रुपए

नई दिल्ली, 17 मार्च (एजेंसियां)।

दूरसंचार विभाग (डीओटी) ने 5जी इनोवेशन हैकाथॉन 2025 की घोषणा की है। यह छह महीने तक चलेगा, जिसका उद्देश्य सामाजिक और औद्योगिक चुनौतियों के समाधान के लिए अभिनव 5जी-संचालित समाधानों के विकास में तेजी लाना है। यह छात्रों, स्टार्टअप और पेशेवरों के लिए खुली है। इसमें विजेता को 5 लाख रुपये तक का प्रथम पुरस्कार मिलेगा।

संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सोमवार को जारी बयान में बताया कि ये हैकथॉन एआई-संचालित नेटवर्क के रखरखाव, आईओटी-सक्षम समाधान, 5जी प्रसारण, कृषि, स्मार्ट स्वास्थ्य, औद्योगिक स्वचालन, गैर-स्थलीय नेटवर्क, डी2एम, वी2एक्स और क्वांटम संचार जैसे प्रमुख 5जी अनुप्रयोगों पर केंद्रित प्रस्ताव को आमंत्रित करता है। छात्रों, स्टार्टअप और पेशेवरों के लिए आयोजित यह कार्यक्रम मेंटरशिप, फंडिंग और 100 से अधिक 5जी यूज केस लैब्स तक पहुँच प्रदान करता है, जिससे प्रतिभागियों को दूरदर्शी विचारों को तकनीक में बदलने में मदद मिलती है। मंत्रालय के मुताबिक इसके लिए 15 मार्च से लेकर 15 अप्रैल 2025 तक प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाएंगे, 01 अक्टूबर 2025 को अंतिम विजेताओं की घोषणा की जाएगी और हर दो सप्ताह में प्रगति रिपोर्ट और एक केंद्रीकृत ट्रैकिंग डैशबोर्ड के माध्यम से कार्यक्रम के लक्ष्यों को पूरा किया जाएगा। इसके तहत प्रतिभागियों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए नेटवर्क स्लाइसिंग, सेवा की गुणवत्ता और कॉल-फ्लो परिदृश्यों जैसी 5जी सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। हैकथॉन प्रतिभागियों को अपने नवाचारों को अगले स्तर तक ले जाने में मदद करने के लिए कई तरह की सहायता प्रदान करता है। प्रतिभागियों को अपनी आईपी संपत्तियों के व्यावसायीकरण के लिए आईपीआर फाइलिंग में सहायता मिलेगी। संचार मंत्रालय के मुताबिक विजेताओं को प्रथम स्थान के लिए पांच लाख रुपये, उप-विजेता के लिए 3 लाख रुपये और दूसरे स्थान के लिए 1,50,000 रुपये के पुरस्कार मिलेंगे। इसके साथ ही सर्वश्रेष्ठ विचार और सबसे नवीन प्रोटोटाइप को 50-50 हजार रुपये के पुस्कार भी मिलेंगे। इसके अलावा 10 प्रयोगशालाओं को सर्वश्रेष्ठ 5जी यूज केस लैब्स के लिए प्रशंसा प्रमाण पत्र और सर्वश्रेष्ठ विचार के लिए एक प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा। इस कार्यक्रम का बजट 1.5 करोड़ रुपये है। इसका उद्देश्य 50 से अधिक स्केलेबल 5जी प्रोटोटाइप विकसित करना, 25 से अधिक पेटेंट तैयार करना, शिक्षा, उद्योग जगत और सरकार के बीच सहयोग को मजबूत करना और स्टार्टअप के लिए सहायता प्रदान करना है। 5जी इनोवेशन हैकाथॉन 2025 को सहयोग और नवाचार को बढ़ावा देकर 5जी तकनीक की परिवर्तनकारी क्षमता के उपयोग करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह हैकाथॉन, 5जी नवाचार में अग्रणी होने के भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

जनवरी के मुकाबले फरवरी में थोक महंगाई दर में 0.07 फीसदी बढ़कर 2.38 फीसदी हुई

नई दिल्ली। फरवरी में थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) पर आधारित थोक महंगाई दर बढ़कर 2.38 फीसदी पर पहुंच गई है। इससे पिछले महीने जनवरी में यह 2.31 फीसदी थी। फरवरी, 2025 में थोक महंगाई दर में वृद्धि मुख्य रूप से खाद्य उत्पादों, खाद्य वस्तुओं, अन्य विनिर्मित वस्तुओं, गैर-खाद्य वस्तुओं और कपड़ा आदि के मूल्यों में बढ़ोत्तरी के कारण है। पिछले महीने जनवरी में यह 2.31 फीसदी थी।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने सोमवार को जारी आंकड़ों में बताया कि विनिर्मित खाद्य उत्पादों की महंगाई फरवरी में बढ़कर 11.06 फीसदी हो गई, वनस्पति तेल में 33.59 फीसदी की वृद्धि हुई है, जबकि पेय पदार्थों की महंगाई इस दौरान मामूली रूप से बढ़कर 1.66 फीसदी हो गई। हालांकि, सब्जियों की कीमतों में नरमी आई और आलू की महंगाई 74.28 फीसदी से घटकर 27.54 फीसदी पर आ गई है। इसके अलावा ईंधन और बिजली श्रेणी की महंगाई में फरवरी में 0.71 फीसदी की गिरावट देखी गई, जबकि पिछले महीने जनवरी में इसमें 2.78 फीसदी की गिरावट आई थी। फरवरी महीने में खुदरा महंगाई दर दाल और सब्जियों के सस्ती होने की वजह से घटकर सात महीने के निचले स्तर 3.61 फीसदी पर आ गई है, जो जनवरी महीने में 4.31 फीसदी थी।

भारत से स्मार्टफोन निर्यात वर्ष 2024-25 में रिकॉर्ड स्तर पर

नई दिल्ली, 17 मार्च (एजेंसियां)।

भारत से तकनीकी उत्पादों की निर्यात में एक नया इतिहास रच दिया गया है, जैसे कि स्मार्टफोन निर्यात वित्त वर्ष 2024-25 के पहले 11 महीनों में 1.75 लाख करोड़ (21 अरब डॉलर) के साथ एक नया रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। इस आंकड़े से स्वतंत्र अनुमानों को भी मात देने वाले हैं।

वित्त वर्ष के अब तक के आंकड़ों के अनुसार, देश ने इस स्थिति को एक साफ संकेत के रूप में देखा है कि उत्पादन और निर्यात मोबाइल फोन क्षेत्र में तेजी से विकसित हो रहे हैं।

स्मार्टफोन निर्यात में एप्पल का महत्वपूर्ण योगदान भी बताया गया है, जिसमें आईफोन का योगदान लगभग 70 फीसदी रहा है। भारत सेल्युलर एंड इलेक्ट्रॉनिक्स एसोसिएशन के मुताबिक यह आंकड़ा पिछले वित्त वर्ष के पहले 11 महीनों से 54 फीसदी अधिक है। समृद्धि के माध्यम से देश ने पहचान बनाने के लिए नए दरवाजे खोल दिए हैं और उत्पादन के क्षेत्र में नए संभावित अवसरों का पूरा फायदा उठाने की प्रेरणा मिली है। वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में स्मार्टफोन निर्यात में एक और उच्च स्तर पर पहुंच गया है, जो वित्त वर्ष 24 की पहली तिमाही की तुलना में 30 फीसदी अधिक है। इस स्मार्टफोन क्षेत्र में नए आंकड़ों और रिकॉर्डों के साथ, भारत ने एक बेमिसाल कामयाबी दर्ज की है। इसमें अमेरिका और यूरोप के समृद्ध विकसित बाजारों के लिए उसकी मान्यता का प्रमाण मिला है। स्मार्टफोन उत्पादन और निर्यात में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका एक सफर की शुरुआत करती है, जो वित्त वर्ष 2024-25 में और भी अधिक उत्साह और मिलानबद्धता लाने के लिए पूरी तरह से तैयार है। देश ने इस स्थिति में अपने भविष्य के लिए एक मजबूत और विश्वसनीय प्रस्तावक प्रदर्शित किया है।

अमेरिका बना सबसे बड़ा खरीदार

प्रथम पृष्ठ का शेष...

ईसाई देश...

इस यात्रा के पीछे वास्तविक उद्देश्य रोहिंग्या संकट से संबंधित किसी हालिया या नए मुद्दे के बारे में कभी नहीं था। इसके बजाय, इस यात्रा का उद्देश्य बांग्लादेश और अराकान में मौजूदा अनिश्चित स्थिति का फायदा उठाना था, साथ ही भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में फिर से उग्रवाद के संकेत भी थे। संयुक्त राष्ट्र बांग्लादेश, म्यांमार और भारत के कुछ हिस्सों को सौंपकर एक ईसाई राज्य की स्थापना के लिए आधार तैयार करने के लिए मौजूदा स्थिति का अनुचित लाभ उठाने की कोशिश कर रहा है। यह प्रक्रिया पाकिस्तान की आईएसआई और उसके सशस्त्र बलों के अप्रत्यक्ष सहयोग से हो रही है। इस बीच, चीन, जो यूनुस शासन और जमात-ए-इस्लामी, हिफाजत-ए-इस्लाम और बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी जैसे इस्लामिस्ट भागीदारों के साथ अपने संबंधों को गहरा कर रहा है, बांग्लादेश और म्यांमार में ठिकाने स्थापित करने में संयुक्त राष्ट्र के असली एजेंडे से पूरी तरह अनजान है।इस बीच, वाशिंगटन, एक अलग ईसाई राज्य बनाने के खाके से पूरी तरह वाकिफ है, किसी भी नकारात्मक परिणाम के लिए दोषी ठहराए जाने से बचने के लिए संयुक्त राष्ट्र से खुद को सावधानीपूर्वक दूर कर रहा है, खासकर भारत के साथ अपने सैन्य गठबंधन को क्वाड के हिस्से के रूप में देखते हुए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित भारतीय अधिकारियों के प्रति सौहार्दपूर्ण दृष्टिकोण बनाए रखते हुए, अमेरिकी खुफिया समुदाय और यूएस कैपिटल के शीर्ष नीति निर्माता चुपचाप योजना का समर्थन कर रहे हैं। उनका मानना है कि अगर खाका सफल होता है, तो ईसाई राज्य संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए भारत और चीन दोनों पर दबाव डालने के लिए एक प्रभावी रणनीतिक उपकरण के रूप में काम करेगा, जबकि क्षेत्र और उससे आगे अमेरिकी प्रभुत्व को मजबूत करेगा।मुहम्मद यूनुस और संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के बीच हुई बैठक के बाद, जॉर्ज सोरोस और डीप स्टेट अब प्रमुख भारतीय राजनेताओं को शामिल करके अपनी साजिश का विस्तार कर रहे हैं। मध्य पूर्वी खुफिया एजेंसी के अनुसार, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता राहुल गांधी अपनी विदेश यात्राओं के दौरान सोरोस और संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों के साथ गुप्त बैठकें करने वाले हैं। कई भारतीय मीडिया आउटलेट बांग्लादेश और म्यांमार में संयुक्त राष्ट्र के ठिकानों के लिए सार्वजनिक समर्थन जुटाने में भी भूमिका निभाएंगे, यह सुझाव देकर कि ये ठिकाने बांग्लादेश और भारत दोनों से रोहिंग्याओं की वापसी की सुविधा प्रदान करेंगे।यह ध्यान देने योग्य है कि संयुक्त राष्ट्र (यूएन), जिसे मूल रूप से अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए स्थापित किया गया था, अपने गुप्त अभियानों के लिए लगातार उजागर हो रहा है, जिससे अमेरिकी डीप स्टेट और इस्लामिस्ट-जेहादी संस्थाओं के लिए एक भाड़े की सेना के रूप में इसकी भूमिका का पता चलता है। यूएन सरकारों को उखाड़ फेंकने और नामित आतंकवादी संगठनों सहित इस्लामिस्ट और जेहादी ताकतों को स्थापित करने में सीधे तौर पर शामिल रहा है। उदाहरण के लिए, गाजा में, यूएन आतंकवादी संगठनों हमास और फिलिस्तीनी इस्लामिक जेहाद के एक प्रमुख संरक्षक के रूप में कार्य करता है, जो यहूदियों और इजराइल राज्य के खिलाफ उनके हिंसक कार्यों को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करता है।सीरिया में, हयात तहरीर अल-शाम (एचटीएस), जिसे लेवेंट की मुक्ति के लिए संगठन के रूप में भी जाना जाता है, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के तहत एक नामित आतंकवादी समूह है। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने एचटीएस को एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में अपनाया है, यह कहते हुए कि समूह एक स्थिर और शांतिपूर्ण भविष्य के निर्माण के लिए एक ऐतिहासिक अवसर को जब्त कर सकता है। मई 2018 में, अमेरिकी विदेश विभाग ने एचटीएस को अपने पूर्ववर्ती, अल-कायदा से जुड़े जबात अल-नुसरा को एक विदेशी आतंकवादी संगठन (एफटीओ) के रूप में नामित करने में शामिल किया। एचटीएस सलाफी-जेहादी विचारधारा का पालन करता है। इसके बावजूद, एंटोनियो गुटेरेस को एचटीएस नेता अबू मोहम्मद अल-जुलानी (एक पूर्व अल-कायदा अमीर) को उदारवादी सरदार के रूप में मान्यता देने में कोई हिचकिचाहट नहीं है।गाजा, लीबिया और सीरिया में संयुक्त राष्ट्र की संदिग्ध भागीदारी ने पहले ही इसकी विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचाया है, लेकिन मानवाधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त वोल्कर टर्क द्वारा किए गए चौंकाने वाले खुलासे ने संगठन की गुप्त गतिविधियों को और उजागर कर दिया है, जिसमें शासन परिवर्तन अभियान भी शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र के अधिकारी कथित तौर पर वित्तीय लाभ के लिए अपने पदों का लाभ उठा रहे हैं, प्रभावी रूप से अमेरिकी डीप स्टेट और इस्लामिस्ट-जेहादी ताकतों के लिए भाड़े के सैनिकों के रूप में काम कर रहे हैं। 5 मार्च 2025 को बीबीसी के साक्षात्कार में, टर्क से गाजा, सूडान, यूक्रेन और अन्य संघर्ष-ग्रस्त क्षेत्रों में संकटों के बारे में सवाल किया गया था, विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार संघर्षों को हल करने में संयुक्त राष्ट्र की स्पष्ट अप्रभाविता के बारे में। जवाब में, टर्क ने कहा, मैं आपको पिछले साल बांग्लादेश का उदाहरण दे रहा हूं। जुलाई-अगस्त के दौरान, छात्रों द्वारा बड़े पैमाने पर प्रदर्शन किए गए थे। वे शेख हसीना के नेतृत्व वाली पिछली सरकार से तंग आ चुके थे; बड़े पैमाने पर दमन हो रहा था।टर्क ने आगे बताया, जब मुहम्मद यूनुस ने अंतरिम प्रशासन के नए मुख्य सलाहकार के रूप में कार्यभार संभाला, तो उन्होंने तुरंत मुझसे पूछा, क्या आप हमें स्थिति पर प्रकाश डालने और जो कुछ हो रहा था उसकी जांच करने के लिए एक तथ्य-खोज मिशन भेज सकते हैं? - जो हमने किया, और इससे वास्तव में मदद मिली। मैं पिछले साल बांग्लादेश गया था। छात्र हमारे स्टैंड लेने, हमारे बोलने और उनका समर्थन करने के लिए बहुत आभारी थे। टर्क ने स्वीकार किया कि संयुक्त राष्ट्र ने बांग्लादेश सशस्त्र बलों को सरकार विरोधी प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने से सक्रिय रूप से हतोत्साहित किया, जो वास्तव में अल-कायदा, आईएसआईएस, हिज्ब उत-तहरीर और हमास जैसे चरमपंथी समूहों के सदस्य थे।बांग्लादेश में 5 अगस्त को जेहादी तख्तापलट में सक्रिय भूमिका निभाने के बाद, संयुक्त राष्ट्र अब अपनी साजिश के सबसे खतरनाक चरण में प्रवेश कर चुका है। जॉर्ज सोरोस, जो बिडेन और क्लिंटन के लंबे समय से सहयोगी रहे मुहम्मद यूनुस के सक्रिय सहयोग से, संयुक्त राष्ट्र दक्षिण एशिया में एक अलग ईसाई राज्य स्थापित करने के लिए लंबे समय से चली आ रही योजना को लागू करने के लिए काम कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र, वैश्विक शक्तियों के साथ मिलकर, मानवीय प्रयासों के बहाने अपने गुप्त एजेंडे को आगे बढ़ा रहा है, बांग्लादेश, म्यांमार और भारत एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े हैं। अगर इस पर लगाम नहीं लगाई गई, तो एक अलग ईसाई राज्य स्थापित करने का यह कथित खाका क्षेत्र को अस्थिर कर सकता है, भू-राजनीतिक तनाव को बढ़ा सकता है और राष्ट्रीय संप्रभुता को कमजोर कर सकता है। प्रभावित सरकारों और व्यापक अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चुप्पी चिंताजनक सवाल उठाती है, क्या वे बहुत देर होने से पहले कार्रवाई करेंगे, या वे विदेशी हितों को दक्षिण एशिया में सीमाओं को फिर से निर्धारित करने की अनुमति देंगे? सतर्कता का समय अब है, क्योंकि इतिहास ने दिखाया है कि इस तरह के गुप्त अभियानों के सामने आत्मसंतुष्टि केवल अपरिवर्तनीय परिणामों की ओर ले जाती है।

मोदी की वजह...

लेक्स फ्रीडमैन के साथ पॉडकास्ट में भी पीएम मोदी ने इस विषय में बताया। उन्होंने कहा, रूस और यूक्रेन दोनों से ही मेरे घनिष्ठ संबंध हैं। मैं राष्ट्रपति पुतिन के साथ बैठकर कह सकता हूं कि यह युद्ध का दौर नहीं है, और मैं राष्ट्रपति जेलेंस्की से दोस्ताना तरीके से कह सकता हूं कि भाई, दुनिया में चाहे जितने लोग आपके साथ हों, समाधान कभी भी युद्ध के मैदान से नहीं निकलेगा।इन सबसे पहले हाल ही में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पीएम मोदी को धन्यवाद दिया है। राष्ट्रपति पुतिन ने यह रूस और यूक्रेन के बीच शांति लाने के प्रयास करने के लिए किया था। राष्ट्रपति पुतिन ने कहा था कि पीएम मोदी ने अपना काफी समय इस मुद्दे पर दिया है। उन्होंने कहा था कि पीएम मोदी ने यह प्रयास महान उद्देश्य के लिए किया है। गौरतलब है कि रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत जैसे कुछ ही देश थे जो दोनों युद्धरत देशों से बात कर रहे थे और जिनके दोनों से संबंध थे। भारत ने रूस और यूक्रेन, दोनों को इस दौरान सहायता भी भेजी थी।

हाथी और...

पीएम मोदी ने पॉडकास्ट के दौरान कहा था कि प्रतिस्पर्धा को संघर्ष में नहीं बदलना चाहिए और मतभेदों को विवाद में तब्दील नहीं होना चाहिए। उन्होंने ऐतिहासिक संदर्भ देते हुए कहा कि सदियों से भारत और चीन ने एक-दूसरे से सीखा है और वैश्विक भलाई में योगदान दिया है।पीएम मोदी ने कहा कि यदि आप हिस्टोरिकल रिकॉर्ड्स को देखें, तो भारत और चीन ने मिलकर वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक समय पर दोनों देशों का संयुक्त रूप से वैश्विक जीडीपी में 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सा था। हमारे संबंध सांस्कृतिक रूप से भी बहुत गहरे रहे हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि भारत और चीन के बीच कुछ मतभेद हैं लेकिन यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि वे विवाद में न बदलें। पीएम मोदी आतंकवाद को लेकर पॉडकास्ट पर भी बड़ा बयान दिया और कहा कि दुनिया में आतंकवाद को एक्सपोर्ट करने का काम भी चल रहा है।

हिंदी राष्ट्रीय...

भाषा नफरत के लिए नहीं है। यहां आंध्र प्रदेश में मातृभाषा तेलुगु है। हिंदी राष्ट्रीय भाषा है और अंतरराष्ट्रीय भाषा इंग्लिश है। सीएम नायडू ने कहा कि लोगों को अपनी मातृभाषा को बनाए रखते हुए काम के लिए कई भाषाएं सीखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी सीखने से दिल्ली में कम्युनिकेशन में मदद मिलेगी। जापान और जर्मनी जैसे देशों की यात्रा करने वाले लोगों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में उन भाषाओं को सीखने से उन्हें विदेश जाने में आसानी होगी।अब इस पूरे मामले पर गौर करें तो यह बहस एनईपी के इर्द-गिर्द घूमती हुई नजर आती है। इसके बारे में तमिलनाडु को डर है कि इससे राज्य में हिंदी थोपी जा सकती है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने चिंता जाहिर की है कि नीति क्षेत्रीय भाषाओं की तुलना में हिंदी को ज्यादा महत्व देती है। इसकी वजह से राज्य की भाषाई पहचान पर असर पड़ती है। हालांकि, केंद्र सरकार का तर्क है कि एनईपी बहुभाषावाद को बढ़ावा देती है और भाषा शिक्षा में लचीलापन देती है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस बात से इनकार किया है कि हिंदी थोपी जा रही है, उन्होंने कहा कि नीति के तहत राज्यों को अपनी भाषा चुनने की आजादी है।

वीएचपी नेता...

स्थित बांग्लादेश मेडिकल यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल में रविवार 16 मार्च को हिंदू प्रोफेसर डॉ. अनिंदिता दत्ता को भीड़ ने उनके ऑफिस में ही बंधक बना लिया। रेडियोलॉजी और इमेजिंग डिपार्टमेंट में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अनिंदिता यूनिवर्सिटी में ब्लॉक-एफ से ब्लॉक-बी जा रही थीं, तभी तीन लोगों ने उन्हें रोका और जबरन अपने साथ चलने को कहा। प्रोफेसर ने साथ जाने से मना किया तो उन्हें गिरफ्तार करने की धमकी दी गई, जिससे विवाद बढ़ गया। किसी तरह वह अपने विभाग लौट आईं, लेकिन इसके बाद भीड़ ने उनके ऑफिस को बाहर से बंद कर दिया।यूनिवर्सिटी के प्रॉक्टर शेख फरहाद ने बताया, प्रणगोपाल सर की बेटी यहीं काम करती हैं। उन्हें अंदर बंद कर दिया गया है। हम भी फंसे हुए हैं। फौज पहुंच चुकी है। फौज और पुलिस ने पहुंचकर उन्हें सुरक्षित बाहर निकाला और धनमंडी स्थित उनके घर छोड़ा। डॉ. अनिंदिता के पिता प्रण गोपाल दत्ता यूनिवर्सिटी के पूर्व वाइस-चांसलर और अवामी लीग के सांसद रह चुके हैं। इस घटना में शामिल एक व्यक्ति बीएनपी की छात्र इकाई छात्र दल के नेता का करीबी बताया जा रहा है।

आतंकवाद के...

इस बीच, भारत और न्यूजीलैंड के बीच सोमवार को नई दिल्ली में कई अहम समझौते हुए। इस दौरान दोनों देशों के प्रधानमंत्री मौजूद रहे। समझौते के बाद साझा बयान में बताया गया कि दोनों देशों ने रक्षा साझेदारी को मजबूत और संस्थागत बनाने का फैसला किया है। भारत और न्यूजीलैंड के बीच रक्षा उद्योगों में आपसी सहयोग का खाका तैयार किया जाएगा। पारस्परिक रूप से लाभकारी भारत-न्यूजीलैंड एफटीए पर बातचीत शुरू करने का निर्णय भी लिया गया है।प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, अवैध प्रवास के मुद्दे से निपटने के लिए भारत और न्यूजीलैंड के बीच आपस में एक समझौता तैयार करने के लिए काम किया जाएगा। साझा बयान में कहा गया कि चाहे 2019 का क्राइस्टचर्च हमला हो या 2008 का मुंबई हमला, आतंकवाद किसी भी रूप में अस्वीकार्य है। दोनों देशों ने कहा है कि आतंकवादी, अलगाववादी और कट्टरपंथी तत्वों के खिलाफ लड़ाई में सहयोग करना जारी रखेंगे।

गीता के...

मैं कृष्ण से अर्जुन को दिए गए उपदेशों को लगातार सीखती रहती हूं। यह मुझे शक्ति, शांति और सुकून देता है।तुलसी गबार्ड ने कहा, मुझे भारत से बहुत प्यार है। जब मैं यहां होती हूं तो मुझे हमेशा घर जैसा महसूस होता है। लोग बहुत स्वागत करने वाले और दयालु हैं। यहां खाना हमेशा स्वादिष्ट होता है। दाल मखनी और ताजा पनीर के साथ कुछ भी स्वादिष्ट होता है। अमेरिकी टैरिफ पर तुलसी गबार्ड ने कहा कि मैंने भारत सरकार के अधिकारियों से जो सुना है, वह यह है कि हमारे आर्थिक संबंधों को मजबूत करने की अधिक संभावना को देखने का अवसर है। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि वे इसे सकारात्मक दृष्टिकोण से देख रहे हैं, न कि केवल नकारात्मक दृष्टिकोण से।

चंद्रमा मंगल के नवपंचम योग से सिंह, कन्या सहित तीन राशियों को होगा बड़ा धन लाभ!

आज मंगलवार 18 मार्च के दिन चंद्रमा और मंगल का नवम पंचम योग बनने जा रहा है। दोनों एक दूसरे से नौवें और पांचवें भाव में रहकर गोचर करेंगे। जिससे चंद्रमा और मंगल मिलकर कई राशियों की किस्मत चमकाने वाले हैं। ऐसे में टैरो कार्ड्स की गणना बता रही है कि सिंह, कन्या और मीन राशि के लोगों के लिए दिन बहुत ही अच्छा रहने वाला है। इन के लोगों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

मेष : अधिकारियों से बात करते समय सतर्क रहें

टैरो कार्ड्स की गणना बता रही है कि मेष राशि के जातकों को अपने उच्च अधिकारियों से बात करते समय सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि आप अपनी ही बातों से फंस सकते हैं। कार्यक्षेत्र में मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे। मानसिक उतार-चढ़ाव बना रहेगा। धन संबंधी मामलों में समय अनुकूल नहीं है, इसलिए सतर्क रहें।

वृषभ : आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी

टैरो कार्ड्स बता रहे हैं कि वृष राशि के जातकों को विपरीत परिस्थितियों में प्रतिक्रिया देने से बचना चाहिए। मानसिक द्वंद्व बना रहेगा। नए प्रोजेक्ट में हाथ डालने से बचें, पुराने कार्यों को ही नियमित रूप से पूरा करने का प्रयास करें। सत्य के मार्ग पर चलने से ही सफलता प्राप्त होगी। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी।

मिथुन : आत्ममंथन का समय है

टैरो कार्ड्स बता रहे हैं कि मिथुन राशि के जातकों के लिए आत्ममंथन का समय है। अपनी पर्सनालिटी को निखारने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। मानसिक तनाव हो सकता है, लेकिन आज अध्यात्म से संतुष्टि मिलेगी। कार्यक्षेत्र में अड़चन बनी रहेंगी, और खर्चे कमाई से अधिक हो सकते हैं।

कर्क : उच्च अधिकारियों का पूरा समर्थन मिलेगा

टैरो कार्ड्स की गणना के अनुसार, कर्क राशि के जातकों को उच्च अधिकारियों का पूरा समर्थन मिलेगा। उच्च अधिकारियों के आदेशों की अनदेखी न करें, वरना मुश्किल में पड़ सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा, और सम्मान प्राप्ति की संभावना भी बनेगी।

सिंह : बेहतरीन दिन रहेगा

टैरो कार्ड्स की गणना के अनुसार, सिंह

राशि के जातकों के लिए बेहतरीन दिन है। व्यावसायिक दृष्टिकोण से आप अपने विचारों को मजबूती से रख पाएंगे। परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने के लिए जरूरी बातचीत करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी दिन शुभ रहेगा।

कन्या : पिता का पूरा सहयोग मिलेगा

कन्या राशि के जातकों को पिता का पूरा सहयोग मिलेगा। कामकाज के लिए यह बेहतरीन समय है, पुराने अधूरे कामों को पूरा करने के लिए प्रयासरत रहेंगे। ऑनलाइन ट्रेनिंग लेकर अपने कौशल को और निखार सकते हैं। आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा।

तुला : भ्रम की स्थिति रहेगी

तुला राशि के जातकों को नियमों की अनदेखी करना भारी पड़ सकता है। आज आपको फ्रॉड में फंसाया जा सकता है, इसलिए किसी पर भी विश्वास करने से बचें। अपने काम से काम रखें और दूसरों के मामलों में दखलअंदाजी से बचें। धन-संपत्ति के मामलों में भ्रम की स्थिति रहेगी।

वृश्चिक : धैर्य बनाए रखें

टैरो कार्ड्स बता रहे हैं कि वृश्चिक राशि के जातकों को आज अपने आसपास के लोगों से थोड़ा इरिटेशन हो सकता है। ग्राहकी को बनाए रखने के लिए धैर्य बनाए रखें। अपने विरोधियों के खिलाफ योजना बनाना आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है। आर्थिक मामलों में लोग वादा करके पैसे देने से मुकर सकते हैं।

धनु : अच्छा धन लाभ हो सकता है

धनु राशि के जातकों के लिए यह एक बेहतरीन दिन रहेगा। प्रतियोगिता में बने रहने के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेने होंगे। अधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न रहेगा। व्यावसायिक विस्तार और धन की प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। सेवा कार्यों से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा धन लाभ हो सकता है।

मकर : अपने प्रयासों का पूरा फल

मकर राशि के जातकों को बहुत मेहनत करने के बावजूद उनके प्रयासों का पूरा फल नहीं मिलेगा। चिंता न करें, यह एक अस्थायी स्थिति है, जल्द ही परिस्थितियां आपके पक्ष में होंगी। भावनात्मक उतार-चढ़ाव रहेगा। धन संबंधी मामलों में खर्चों के लिए दूसरों की मदद की आवश्यकता हो सकती है।

कुंभ : समय सामान्य रहेगा

कुंभ राशि के जातकों को अकेले ही कामों को पूरा करना पड़ सकता है, क्योंकि दूसरों का सहयोग कम मिलेगा। आर्थिक मामलों में स्थिति स्थिर रहेगी, कोई खास बदलाव नहीं होगा। एकांत में समय बिताकर नए विचारों और सृजन पर ध्यान केंद्रित करें। व्यावसायिक दृष्टिकोण से समय सामान्य रहेगा।

मीन : आज बेहतरीन दिन है

मीन राशि के जातकों के लिए आज बेहतरीन दिन है। आत्मविश्वास के साथ विपरीत परिस्थितियों में भी आप अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन करेंगे। बढ़ी हुई महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास करेंगे। व्यापारियों को अच्छी कमाई के संकेत मिल रहे हैं।

बुध, मीन राशि में अस्त, 10 दिन तक कुंभ समेत अन्य राशियों को सावधान रहने की जरूरत

बुध ग्रह ग्रह 17 मार्च को 7 बजकर 31 मिनट पर वक्री अवस्था से अस्त हो गया है। इसके बाद वह 10 दिन बाद 28 मार्च को इसी राशि में उदय भी हो जाएंगे। वैदिक ज्योतिष के अनुसार, जब कोई ग्रह अस्त हो जाता है वह कमजोर अवस्था में पहुंच जाता है और वह अपने सारी शक्तियां खो देता है, जिसकी वजह से ग्रह का शुभ प्रभाव नहीं मिल पाता है। मिथुन और कन्या राशि के स्वामी बुध नौकरी, कारोबार, बुद्धि, शिक्षा, तर्क आदि के कारक ग्रह हैं, ऐसे में जब बुध अस्त हो हैं तो एकाग्रता में कमी, याददाश्त का कमजोर होना, सीखने की क्षमता में कमी आना और नौकरी व कारोबार में परेशानी होने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। बुध ग्रह के मीन राशि में अस्त होने से मिथुन समेत कई राशियों को 10 दिन परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

बुध अस्त का मिथुन राशि पर प्रभाव

बुध ग्रह आपकी राशि से 10वें भाव में अस्त होने जा रहे हैं। इस दौरान रोजमर्रा के जीवन में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है और बने बनाए कार्यों में बाधा आ सकती है। इस अवधि में कोई भी अनैतिक कार्य करने से बचें अन्यथा अपना मान-सम्मान खो सकते हैं। अगर आप इस अवधि में नौकरी बदलने का विचार बना रहे हैं तो आप ज्यादा उम्मीद ना करें फिलहाल जहां हैं, वही रहें। वहीं व्यापारियों को कोई नई डील करने से बचना चाहिए अन्यथा हानि हो सकती है। लव लाइफ में धैर्य बनाए रखें और किसी भी तरह के विवाद या मतभेद से दूर रहें।

बुध अस्त का सिंह राशि पर प्रभाव

बुध ग्रह आपकी राशि से भाव में अस्त होने जा रहे हैं। इस दौरान धन की बचत कर पाने में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और धन कमाने में भी परेशानी हो सकती है। अगर आप नया बिजनस शुरू करना चाहते हैं तो इस अवधि यह फैसला टाल देने में ही भलाई नौकरी करने वालों को अधिकारियों का साथ कम मिलेगा और वे आपके काम से ज्यादा संतुष्ट नहीं दिखाई देंगे। जीवनसाथी के साथ किसी भी तरह के विवाद या बहसबाजी से दूर रहें अन्यथा पर्सनल लाइफ में कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इस अवधि में के स्वास्थ्य पर धन खर्च और भागदौड़ करनी पड़ सकती है।

बुध अस्त का तुला राशि पर प्रभाव

बुध ग्रह आपकी राशि से छठवें भाव में अस्त होने जा रहे हैं। इस दौरान पर्सनल लाइफ में कठिनाइयों का अनुभव हो सकता है और अचानक धन हानि की आशंका भी रही है, जिसकी वजह से आप हताश नजर आ सकते हैं। इस अवधि में बिजनस से जुड़ा कोई भी बड़ा निर्णय लेने से बचें अन्यथा और ज्यादा नुकसान हो सकता है। बुध ग्रह के अस्त होने से इस अवधि में आप ज्यादा बचत नहीं कर पाएंगे और औसत रूप ही पैसा कमाने की स्थिति में होंगे। संतान की किसी बात या व्यवहार से परेशानी हो सकती है और आपका जरूर काम भी अटक सकता है।

बुध अस्त का कुंभ राशि पर प्रभाव

बुध ग्रह आपकी राशि से दूसरे भाव में अस्त होने जा रहे हैं। इस दौरान आपकी बढ़ सकती हैं और कुछ अनचाही यात्रा भी करनी पड़ सकती है, जिसकी वजह से स्वास्थ्य संबंधी समस्या का सामना करना पड़ सकता है। बुध की अवस्था से आपके खर्चे बढ़ सकते हैं और कर्ज भी भी बढ़ सकता है। घर के किसी सदस्य पर काफी धन खर्च हो है और लव लाइफ में बेकार के विवाद या मतभेद का सामना करना पड़ सकता है। इस राशि के छात्रों की एकाग्रता में परेशानी हो सकती है और याद करने की क्षमता भी कमजोर हो सकती है।

छह कारणों से मनुष्य हो जाता है करोड़पति से कंगाल!

- नहाते समय पैर रगड़ने से शनि का दुष्प्रभाव होता है।
- ऊंची आवाज में बात करने से राहु का दुष्प्रभाव होता है।
- थाली में हाथ धोने से माता अन्नपूर्णा नाराज होती

धन - संपत्ति सदैव किसी एक ही व्यक्ति के पास नहीं रहती है। समय-समय पर हमारी आदतों और ग्रह दशाओं के आधार पर यह बदलती रहती है। हर व्यक्ति मेहनत करना चाहता है और मेहनत के साथ-साथ उसे किस्मत का साथ भी मिलना जरूरी होता है। लेकिन हम अक्सर दिनचर्या में कुछ ऐसी गलतियां कर लेता है जिनका उन्हें अंदाजा भी नहीं होता है। तुम गलतियों की वजह से उन्हें गरीबों का शिकार होना पड़ता है। आदतों की वजह से उनके घर में मां लक्ष्मी नाराज होकर चली जाती है और धन की हानि बीमारी परेशानी आदि उनके में स्थाई रूप से रह जाती।

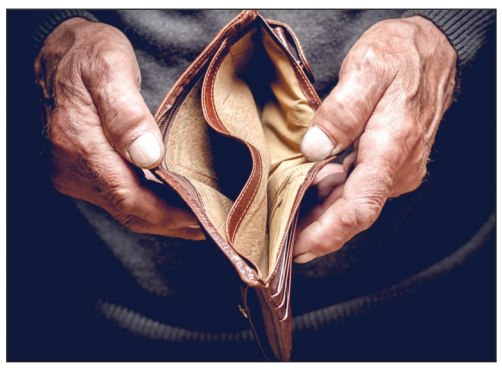

✻ अक्सर लोग नहाते समय अपने एक पैर से दूसरे पर को रगड़ने की गलती करते हैं। ऐसा करने से जन्म कुंडली में उपस्थित शनि खराब परिणाम देने शुरू कर देते हैं। इससे घनघोर गरीबी आती है।

✻ जो लोग तेज ऊंची आवाज में बात हैं या गुस्सा करते हैं उन पर राहु का दुष्प्रभाव पड़ता है ऐसे लोगों के लिए राहु खराब परिणाम देना शुरू कर देते हैं। इनके जीवन में अचानक धन की हानि चोट एक्सीडेंट आदि समस्याएं आती है।

✻ खाली बैठकर जो को दूसरे की चुगली करते हैं निंदा करते हैं करने से उनका चित्र खराब परिणाम देना शुरू कर देता है उनके जीवन में तरक्की रुक जाती है शरीर में पैरों में और नसों में दर्द आज की समस्या थी इसी वजह से बनती है। ऐसे लोगों के घुटने दर्द करने लगते हैं।

✻ घर में खाना खाने के बाद थाली में हाथ धोने से माता अन्नपूर्णा नाराज हो जाती है। जो लोग अपने हाथ थाली में धोते हैं उनके लिए धन की हानि का सामना करना पड़ता है।

✻ चलते समय यदि आपके जूते चप्पल ज्यादा आवाज करते हैं तो इससे मां लक्ष्मी नाराज हो जाती है और आपके से वह चली जाती है। जूते चप्पल का आवाज करना या खराब फटे हालत में होना घर में गरीबी का कारण बनता है।

✻ अक्सर लोग मंदिर से लौटते वक्त घंटी बजाकर वापस आते हैं ऐसा करने से उन्हें दोष लगता है। उनकी मनोकामना पूरी नहीं होती है। मंदिर में के समय की जीवन घंटा बजाया जाता है। पूजा पाठ इत्यादि करने के बाद लौटते समय घंटा नहीं बजाना चाहिए।

आज बना है चंद्राधियोग

वृषभ और तुला समेत पांच राशियों को मिलेगा करियर और कमाई में उन्नति का मौका

आज 18 मार्च को चैत्र कृष्ण चतुर्थी तिथि के संयोग में चंद्रमा का गोचर शुक्र की राशि तुला में हो रहा है। और दिन के स्वामी आज मंगल ग्रह होंगे जो मिथुन राशि में गोचर करते हुए चंद्रमा से नवम भाव में संचार करेंगे। इसके साथ ही आज चंद्रमा से अष्टम में गुरु के होने से चंद्राधि योग भी बनेगा। जो वृषभ, मिथुन, सिंह, तुला और मकर राशि के जातकों के लिए लाभदायक रहेगा। इन राशियों को आज भाग्य सरप्राइज दे सकता है और कोई मनोकामना पूरी होगी। साथ ही जानें आज मंगलवार के उपाय जिनसे दिन को और मंगलकारी बना सकते हैं।

वृषभ – वृषभ राशि वालों की मेहनत रंग लाएगी। सुबह से ही आप काम में जुट जाएंगे और इसका अच्छा परिणाम भी मिलेगा। इस सफलता से आपको बहुत खुशी होगी। घर-परिवार में शांति और खुशी का माहौल बना रहेगा। ससुराल पक्ष से भी सहयोग और फायदा मिलने के योग हैं।व्यापारियों के लिए भी आज का दिन मुनाफे वाला रहेगा। आपकी तरक्की देखकर आपके विरोधी जलन महसूस कर सकते हैं, इसलिए थोड़ा ध्यान रखें। आज आप भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च कर सकते हैं। अपने या परिवार के लिए कोई नई चीज खरीद सकते हैं। अपने जीवनसाथी को कोई उपहार देकर आप अपने रिश्ते में और प्यार बढ़ा सकते हैं। किसी करीबी रिश्तेदार से मिलने का भी मौका बन सकता है। यह मुलाकात आपके लिए सुखद रहेगी। कुल मिलाकर आज का दिन वृषभ राशि वालों के लिए बेहद शुभ और फलदायी रहेगा। इसलिए पूरे उत्साह के साथ दिन की शुरुआत करें और इसका पूरा लाभ उठाएं। योजनाबद्ध तरीके से काम करेंगे तो सफलता निश्चित मिलेगी। परिवार के साथ अच्छा समय बिताएं और रिश्तों को और मजबूत बनाएं।

वृषभ राशि के लोगों को आज हनुमानजी की पूजा करने से लाभ होगा। आपको मंदिर में जाकर हनुमानजी को बूंदी के लड्डू का भोग लगाना चाहिए।

मिथुन– मिथुन राशि के जातकों को भाग्य का पूरा सहयोग मिलेगा। वैवाहिक जीवन में खुशियां आएंगी। जीवनसाथी का पूरा साथ मिलेगा। लंबे समय से अटके हुए पारिवारिक काम पूरे होंगे। घर में मेहमान या दोस्तों के आने से खुशी का माहौल रहेगा। बच्चों के साथ अच्छा समय बीतेगा। सामाजिक क्षेत्र में आपकी सक्रियता बढ़ेगी। मान-सम्मान और प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। कारोबार में भी अच्छी स्थिति रहेगी। कमाई बढ़ेगी और खर्चों पर नियंत्रण रख पाएंगे। किसी मित्र से मदद मिलने से फायदा होगा। धार्मिक कार्यों से भी लाभ मिलेगा। घर में मेहमानों के आगमन से रौनक रहेगी। बच्चों के साथ बिताया गया समय सुखद रहेगा। सामाजिक कार्यों में आपकी भागीदारी बढ़ेगी। इससे आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। व्यापार में भी आपको सफलता मिलेगी। आपकी आय में वृद्धि होगी। आप अपने खर्चों को नियंत्रित रखने में सफल रहेंगे। किसी दोस्त से अप्रत्याशित मदद मिल सकती है, जिससे आपको फायदा होगा। धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों में भाग लेने से आपको मानसिक शांति मिलेगी।

मिथुन राशि के लोगों को आज मंदिर में जाकर 11 बार हनुमान चालीसा का पाठ करने से हर कार्य सरलता से पूर्ण होगा। आपका दिन शुभ होगा।

सिंह– सिंह राशि के जातकों का ध्यान सुख-सुविधाओं पर केंद्रित रहेगा। भाग्य उनका साथ देगा और उनकी इच्छाएं पूरी होंगी। सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सक्रिय लोगों को मान-सम्मान की

प्राप्ति होगी। यह उनके लिए एक अच्छा दिन साबित होगा। वे अपने अटके हुए कामों को पूरा करने में सफल रहेंगे। यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाएगा। फैशन, वस्त्र, आभूषण और रचनात्मक क्षेत्रों से जुड़े जातकों के लिए आज का दिन विशेष रूप से लाभदायक रहेगा। उन्हें नए अवसर मिल सकते हैं। उन्हें कोई कीमती उपहार भी मिल सकता है। यह उपहार उनके किसी करीबी से मिल सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में कन्या राशि के छात्र सजग रहेंगे। इसका सकारात्मक परिणाम उन्हें परीक्षाओं में मिलेगा। उनकी मेहनत रंग लाएगी। किसी पुराने परिचित से भी उन्हें मदद मिल सकती है। यह मदद उनके करियर को आगे बढ़ाने में सहायक होगी। किसी धार्मिक स्थान की यात्रा का भी योग बन रहा है। यह यात्रा उन्हें मानसिक शांति प्रदान करेगी। यह यात्रा परिवार के साथ भी हो सकती है। कुल मिलाकर सिंह राशि वालों के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा।

सिंह राशि के लोगों को आज 11 बेसन के लड्डू का भोग हनुमानजी को लगाने के बाद ये लड्डू छोटे बच्चों में बांट देना चाहिए।

तुला– तुला राशि के लोगों के लिए आज का दिन पारिवारिक जीवन में खुशियां लेकर आएगा। घर के लोग पूरा साथ देंगे। अगर आपका कोई पारिवारिक व्यवसाय है, तो उसमें भी परिवार का पूरा समर्थन प्राप्त होगा। आर्थिक रूप से भी आज का दिन आपके लिए लाभदायक रहेगा। हो सकता है आपको कहीं से अचानक धन लाभ हो। इसके अलावा, सामाजिक क्षेत्र में भी आपको मान-सम्मान मिलेगा। कुल मिलाकर, आज का दिन तुला राशि वालों के लिए हर तरह से शुभ और फलदायी रहने वाला है। परिवार से लेकर प्यार तक, और पैसों से लेकर मान-सम्मान तक, हर क्षेत्र में आपको सफलता मिलेगी। इसलिए, इस शुभ दिन का पूरा लाभ उठाएं और अपने सभी कामों को पूरे मन से करें। सोचिए, अगर अचानक धन लाभ हो जाए, तो उस पैसे से आप क्या करेंगे? शायद कोई नया फ़ोन लेंगे, या फिर परिवार के साथ कहीं घूमने जाएंगे। किराना व्यापारी सोच सकते हैं कि बढ़ी हुई कमाई से दुकान में नया सामान लाएंगे या ग्राहकों को कोई विशेष छूट देंगे। कुल मिलाकर, आज का दिन तुला राशि वालों के लिए खुशियों भरा रहेगा।

तुला राशि के लोगों को आज गाय को हरा चारा खिलाना चाहिए। आज गाय की सेवा करने से आपके सभी कार्य बिना किसी बाधा के पूर्ण होंगे।

मकर – मकर राशि वालों पर हनुमानजी की विशेष कृपा रहेगी। इससे उन्हें बहुत आनंद की प्राप्ति होगी। साथ ही, उनके मान-सम्मान और प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। घर में किसी मांगलिक कार्यक्रम, जैसे शादी या सगाई, का आयोजन हो सकता है। अगर परिवार में किसी सदस्य के विवाह की बात चल रही है तो वह सफलतापूर्वक संपन्न होगी। इससे घर में खुशी का माहौल छा जाएगा। व्यापारियों के लिए भी आज का दिन बहुत फायदेमंद रहेगा। मकर राशि के जो लोग बिजनस करते हैं, उन्हें अच्छा मुनाफा होगा। इसके अलावा, छोटे भाई-बहनों से भी मदद और सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। अपने जीवनसाथी के साथ खरीदारी करने का प्लान बना सकते हैं। भौतिक सुख-साधनों की प्राप्ति होगी, जिससे मन प्रसन्न रहेगा।

मकर राशि के लोगों को आज मंदिर में जाकर पीपल के पेड़ पर सरसों के तेल का दीपक जलाना चाहिए। आपको धन सम्मान के मामले में लाभ होगा। आपकी योजनाएं सफल होंगी।

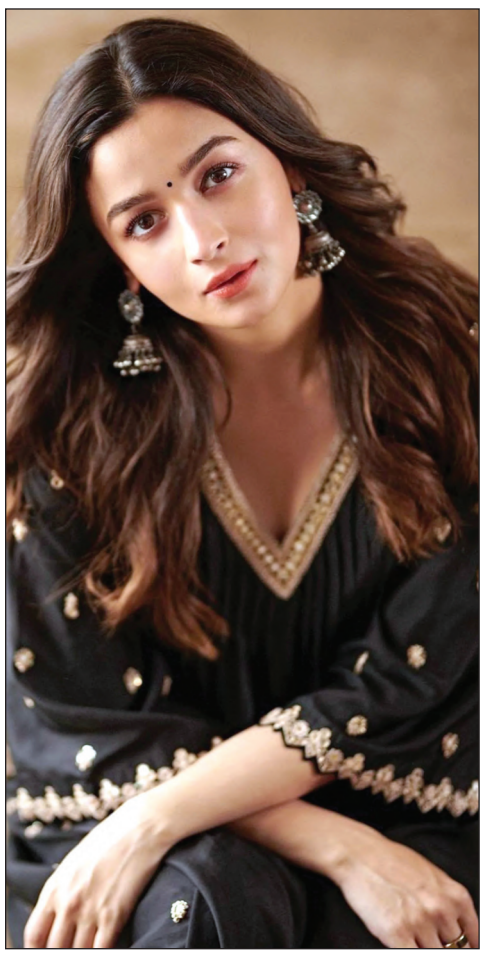

संघर्ष फिल्म में आलिया भट्ट ने निभाया था बेबी प्रीति जिंटा का रोल

प्रीति जिंटा की एक जबरदस्त हिट मूवी याद ही होगी आप को। इस मूवी का नाम था संघर्ष, जिसमें प्रीति जिंटा एक ऐसी पुलिस वाली बनती हैं, जो शुरू में डरी डरी रहती है लेकिन बाद में एक ब्रेव कॉप के रूप में उभरती है। इस फिल्म में एक बहुत ही क्यूट सी बच्ची ने प्रीति जिंटा के बचपन का किरदार अदा किया था। वो बच्ची लंदन में जन्मी लेकिन बॉलीवुड की रानी बन गई। अब अपनी एक्टिंग के जरिए वो लोगों के दिलों पर राज करती है। बॉलीवुड में वो 550 करोड़ रु। की मालकिन बन चुकी हैं। क्या आप जानते हैं वो एक्ट्रेस कौन है।

हम जिस एक्ट्रेस की आपसे बात कर रहे हैं, वो एक्ट्रेस हैं आलिया भट्ट, जो संघर्ष मूवी में दिखाई दी थीं। इस फिल्म में डरी सहमी सी दिखने की एक्टिंग करके आलिया भट्ट ने कम उम्र में ही दर्शकों के दिलों में जगह बना ली थी। आलिया भट्ट अपने एक इंटरव्यू में बता चुकी हैं कि वो यूके की नागरिकता भी रखती हैं। इसकी वजह है उनकी मम्मी सोनी राजदान। आलिया भट्ट ने बताया था कि उनका जन्म ही यूके में हुआ था। तीन महीने की उम्र में वो मुंबई आ गई थीं और तब से यहीं की हो कर रह गईं। स्टूडेंट ऑफ द ईयर में डेब्यू के बाद उन्होंने हाईवे, राजी, गंगूबाई काठियावाड़ी जैसी कई फिल्मों में काम किया।

आलिया भट्ट की नेटवर्थ करोड़ों की है। जीक्यू इंडिया के मुताबिक आलिया भट्ट की नेटवर्थ 550 करोड़ रुपए है। अपनी फिल्म्स, ब्रांड एंडोर्समेंट और एड शूट के जरिए आलिया भट्ट ये कमाई करती हैं। उनका खुद का प्रोडक्शन हाउस भी है, जिसका नाम है इंटरनल सनशाइन प्रोडक्शन। इसके अलावा बच्चों की क्लोदिंग लाइन भी वो चलाती हैं, जिसका नाम है एड ए मम्मा। स्टाइल क्रैकर्स, नायक, फूल।को और सुपरबॉटम्स जैसे कई ब्रांड्स में भी वो इन्वेस्ट कर चुकी हैं। कुछ रिपोर्ट्स में ये दावा भी किया गया है कि उनकी नेटवर्थ करीना कपूर से भी ज्यादा है।

राजकुमार राव की फिल्म मालिक में शामिल हुईं हुमा कुरैशी

अभिनेता राजकुमार राव को पिछली बार फिल्म विक्की विद्या का वो वाला वीडियो में देखा गया था, जिसमें उनके काम की खूब तारीफ हुई। हालांकि, यह बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुंह गिरी।अब राजकुमार जल्द ही फिल्म मालिक के जरिए दर्शकों का मनोरंजन करते हुए नजर आएंगे, जिसके निर्देशन की कमान पुलकित ने संभाली है।वह डेढ़ बीघा जमीन, बोस: डेड/अलाइव और भक्त जैसी फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं।अब मालिक में हुमा कुरैशी की एंट्री हो चुकी है।रिपोर्ट के अनुसार, मालिक की स्टार कास्ट में हुमा शामिल हो गई हैं। इस फिल्म में वह मेहमान (कैमियो) भूमिका निभाती नजर आएंगी।कहा जा रहा है कि राजकुमार की फिल्म में हुमा एक खास गाने पर डांस करती दिखाई देंगी। अपने हिस्से की शूटिंग उन्होंने 2024 में कर ली थी।बता दें कि साल 2022 में आई फिल्म मोनिका ओ माय डार्लिंग के बाद मालिक राजकुमार और हुमा के बीच दूसरा सहयोग है।यह एक गैंगस्टर ड्रामा फिल्म होगी, जिसमें राजकुमार एक खूंखार गैंगस्टर की भूमिका में दिखने वाले हैं। फिल्म में उनका अनदेखा अवतार देखने को मिलेगा।फिल्म का निर्माण कुमार तौरानी ने टिप्स फिल्म्स के बैनर तले किया जा रहा है। यह फिल्म 20 जून, 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देने को तैयार है।गौरतलब है कि इस एक्शन थ्रिलर फिल्म का पहला पोस्टर पिछले साल राजकुमार के 40वें जन्मदिन पर रिलीज किया गया था।

फिल्म कुली से श्रुति हासन का नया पोस्टर आउट

आगामी फिल्म 'कुली' के निर्माताओं ने फिल्म से श्रुति हासन का नया लुक जारी कर दिया है। प्रीति के रूप में श्रुति हासन का नया लुक गंभीर लेकिन प्रभावशाली अंदाज में सामने आया है। उनका किरदार गंभीर नजर आ रहा है।

निर्माताओं ने पहले एक आकर्षक पोस्टर के साथ श्रुति के किरदार को पेश किया था। फिल्म में रजनीकांत मुख्य भूमिका में हैं। 'कुली' के अलावा, श्रुति की हालिया रिलीज फिल्म 'द आई' ग्लोबल फिल्म फेस्टिवल में दिल जीत रही है। हाल ही में इस फिल्म का भारतीय प्रीमियर वेंच फिल्म फेस्टिवल में हुआ, जिसे काफी प्रशंसा मिली।

इससे पहले अभिनेत्री ने शेयर किया था कि वह ऐसी कहानियों की ओर आकर्षित होती हैं, जिसमें प्यार, खुद की खोज शामिल होती है। अभिनेत्री ने यह भी कहा कि 'द आई' ने उन्हें स्क्रीन पर इन सभी भावनाओं का सामना करने का मौका दिया। यह फिल्म ग्रीस के बैकग्राउंड पर आधारित है। प्रोजेक्ट पर विचार करते हुए श्रुति हासन ने बताया था, मैंने स्क्रिप्ट पढ़ी तो मुझे पता चला कि यह फिल्म तो मेरे लिए ही बनी है। मैं हमेशा ऐसी कहानियों की ओर आकर्षित होती रही हूं, जिसमें प्यार, आत्म-खोज का पुट हो और जो मेरे साथ गहराई से जुड़ती हैं। उन्होंने कहा, 'द आई' में प्रतिभाशाली महिला क्रिएटिव टीम के साथ काम करके मुझे शानदार अनुभव मिला। श्रुति हासन सोशल मीडिया पर एक्टिव रहती हैं और अक्सर एक से बढ़कर एक पोस्ट शेयर करती रहती हैं। इंस्टाग्राम स्टोरीज पर अपनी एक तस्वीर शेयर करते हुए उन्होंने बताया कि वह सुबह जल्दी उठने वाली व्यक्ति नहीं हैं।

10 करोड़ की फिल्म कोर्ट: स्टेट वर्सेज ए नोबडी ने तीन दिन में कमाए 24 करोड़

तेलुगु सिनेमा के मशहूर अभिनेता नानी ने हाल ही में अभिनेता प्रियदर्शी पुलिकोंडा की जमकर तारीफ की है। नानी ने प्रियदर्शी को तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री का 'नसीरुद्दीन शाह' तक कह दिया। नसीरुद्दीन शाह को उनकी एक्टिंग के लिए पहचाना जाता है। यह बयान नानी ने अपनी आगामी फिल्म 'कोर्ट: स्टेट वर्सेज ए नोबडी' के प्रमोशन के दौरान दिया, जिसमें प्रियदर्शी मुख्य भूमिका में हैं। नानी ने कहा, 'प्रियदर्शी में वह गहराई और प्रतिभा है, जो उन्हें खास बनाती है। जिस तरह नसीरुद्दीन शाह ने हिंदी सिनेमा में अपनी अलग पहचान बनाई, वैसे ही प्रियदर्शी तेलुगु सिनेमा में एक अनूठा मुकाम हासिल कर रहे हैं।' नानी इस फिल्म के प्रेजेंटर भी हैं। कोर्ट: स्टेट वर्सेज ए नोबडी' 14 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी और इसे समीक्षकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। फिल्म में प्रियदर्शी एक वकील की भूमिका में हैं, जो एक युवा जोड़े की रक्षा के लिए सिस्टम से लड़ता है। उनकी एक्टिंग की जमकर तारीफ हो रही है। प्रियदर्शी ने इस तारीफ पर खुशी जताते हुए कहा, 'नानी का यह कहना मेरे लिए सम्मान की बात है। मैं अपनी कला के जरिए दर्शकों तक पहुंचने की कोशिश कर रहा हू।'

'कोर्ट: स्टेट वर्सेज ए नोबडी' फिल्म राम जगदीश का डायरेक्टोरियल डेब्यू है। जबकि प्रियदर्शी पुलीकोंडा, हर्ष रोशन, श्रीदेवी, शिवाजी, पी साई कुमार, हर्षा वर्धान, रोहिणी, सुभालेखा सुधाकर, सुरभि प्रभावथि और राजशेखर अनिंगी लीड रोल में है। इस फिल्म का निर्माण प्रशांति टिपिरनेनी ने किया है। फिल्म को नानी ने प्रेजेंट किया है।

शुभांगी अत्रे ने कहा, फिल्म की शूटिंग और टीवी शो की शूटिंग में अंतर होता है

दर्शकों के पसंदीदा शो 'भाभीजी घर पर हैं' पर फिल्म बनने जा रही है। फिल्म में शो के मूल कलाकार ही मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। शो में 'अंगूरी भाभी' का किरदार निभाने वाली शुभांगी अत्रे इस फिल्म से बॉलीवुड में डेब्यू करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

शुभांगी ने कहा, मैं एक एक्टर और एक कलाकार हूं, और कोई फर्क नहीं पड़ता कि माध्यम क्या है, चाहे वह टीवी, फिल्में, ओटीटी या थिएटर हो, मैं पूरी लगन और अनुशासन के साथ अपना 100 प्रतिशत देने में विश्वास करती हूं। बेशक, 'भाभीजी घर पर हैं' पर अब एक फिल्म बनाई जा रही है, इसलिए काम काफी हद तक वैसा ही है जैसा हम टेलीविजन पर करते हैं। लेकिन फिर भी, एक अलग तरह की घबराहट और उत्साह होता है।

उन्होंने कबूल किया कि किसी फिल्म की शूटिंग करना टीवी शो की शूटिंग से बिल्कुल अलग होता है। शुभांगी ने कहा, भले ही मैं वर्षों से अंगूरी का किरदार निभा रही हूं, लेकिन फिल्म के लिए परफॉर्म करना अलग लगता है। हालांकि, मैं अपना सर्वश्रेष्ठ दे रही हूं और अपनी पूरी कोशिश कर रही हूं, जैसा कि मैं हमेशा करती हूं। मैं वाकई बहुत खुश हूं, लेकिन साथ ही, मैं थोड़ी नर्वस भी महसूस कर रही हूं। मैं बस अपने प्रशंसकों से ढेर सारा प्यार, आशीर्वाद और शुभकामनाएं चाहती हूं। उन्होंने कहा, सबसे पहले, हमारी फिल्म में कुछ नए कलाकार शामिल हुए हैं, इसलिए उनके साथ केमिस्ट्री बनाना एक नया अनुभव है। दूसरा, टीवी पर, हम अक्सर प्रदर्शन करते समय सुधार करते हैं, लेकिन एक फिल्म में, हमें बहुत सटीक होना पड़ता है। चूंकि एक फिल्म का रनटाइम 2 से 2.5 घंटे का होता है, इसलिए हम अनावश्यक संवाद नहीं जोड़ सकते हैं, जैसा कि हम कभी-कभी टीवी सीरियल शूटिंग में करते हैं। शुभांगी फिल्म में एक्शन सीक्वेंस भी करती नजर आएंगी। उन्होंने बताया, यह मेरे लिए कुछ नया है और मैं वास्तव में उत्सुक हूं कि स्क्रीन पर कैसे दिखाई देंगे। उन्होंने बताया कि यह न केवल उनके लिए बल्कि उनके माता-पिता के लिए भी एक सपना सच होने जैसा है।उन्होंने कहा, मेरे पिता इस समय कैंसर से जूझ रहे हैं, लेकिन वे इस प्रोजेक्ट को लेकर बहुत खुश हैं। मेरे माता-पिता दोनों ने मुझे अपना आशीर्वाद दिया है और आज जब मैंने अपने पिता से बात की, तो उन्होंने मुझसे कहा कि एक बार फिल्म रिलीज हो जाए, तो हम सब इसे देखने के लिए एक साथ थिएटर जाएंगे। यह विचार ही मुझे भावुक कर देता है।

फिल्म गांधारी की शूटिंग खत्म, तापसी ने पढ़ा संघर्ष से संतोष का पाठ

अभिनेत्री तापसी पन्नू ने 'गांधारी' की शूटिंग पूरी कर ली है। सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर कर तापसी ने प्रशंसकों को यह जानकारी दी। अभिनेत्री ने बताया कि फिल्म बेहद खास है और वह जल्द ही खास और एकदम अलग हटकर नए अंदाज में दर्शकों के सामने आने के लिए तैयार हैं।

तापसी ने इंस्टाग्राम पर अपनी अपकमिंग फिल्म 'गांधारी' के सेट से कुल चार तस्वीरें शेयर की। पहली तस्वीर में वह आंखों पर पट्टी बांधकर बच्चों के साथ खेलती नजर आईं। वहीं, दूसरी तस्वीर में वह सह-अभिनेता इश्वाक सिंह, लेखिका कनिका ढिल्लों और निर्देशक देवाशीष मखीजा के साथ पोज देती दिखीं। तापसी ने एक चॉकलेट केक की तस्वीर भी शेयर की, जिस पर 'गांधारी इट्स ए रैप' लिखा था।

तस्वीरों को शेयर करते हुए तापसी ने कैप्शन में 'गांधारी' को फिल्माने के अपने अनुभव को उतारा और इसे धैर्य, दृढ़ संकल्प और सकारात्मकता से भरपूर यात्रा के रूप में वर्णित किया। उन्होंने फिल्म को लेकर अपने जज्बात शेयर करते हुए लिखा, अगर मानव शरीर के लिए कोई एनओएस (नॉन-ओवरसैंपलिंग यानि एक प्रकार का डिजिटल-टू-एनालॉग कन्वर्टर) मोड है, तो मैंने इसे इस फिल्म में अनुभव किया है। अगर धैर्य और दृढ़ संकल्प के फ्यूल पर चलने वाली कोई चीज है, तो मैंने इसे इस फिल्म में देखा है। अगर टीम के साथ किसी लक्ष्य को पूरा करने जैसी कोई चीज है, तो इसे भी मैंने इस फिल्म में महसूस किया है।

अभिनेत्री ने चुनौतियों पर भी बात की और लिखा कि संघर्ष से ही संतोष मिलता है। उन्होंने लिखा, हर बार जब मैं कुछ अलग और चुनौतियों से भरे काम करने के बारे में सोचती हूं, तो भूल जाती हूं कि इसकी कीमत भी चुकानी होगी। जैसे बर्नआउट, लेकिन कुछ चोट आपको संतोष का एहसास कराती हैं। पूरी टीम ने फिल्म के लिए शानदार काम किया है और अपना सब कुछ दिया है। इसे जल्द ही आपके सामने लेकर आ रही हूं, 'गांधारी'। बता दें, तापसी पन्नू 'गांधारी' में खूब एक्शन करती नजर आएंगी। फिल्म निर्माता-लेखिका कनिका ढिल्लों ने हाल ही में बताया कि तापसी में एक अलग तरह की फुर्ती है, वह एक्शन फिल्म के लिए परफेक्ट हैं। कनिका ने एक्शन सीन्स को बेहतरीन तरीके से निभाने के लिए तापसी की सराहना की। 'गांधारी' में तापसी पन्नू मिशन पर निकली एक ऐसी मां के किरदार में दिखेंगी, जो साहसी है। कथा पिक्चर्स के बैनर तले 'गांधारी' का निर्माण हुआ है। फिल्म का निर्देशन देव-ाशीष मखीजा ने किया है।

आज का राशिफल

मेष – चू,चे,चो,ला,लि,लू,ले,लो,अ

आज भगवती की उपासना करके दिन का आरंभ करें दिन अच्छा रहेगा ऑफिस में आपको सहकर्मियों का सहयोग मिल सकता है. आपके काम समय पर पूरे होंगे. आपके सकारात्मक विचार किसी व्यक्ति को प्रभावित कर सकते हैं. आपकी मदद दूसरों के लिये फायदेमंद हो सकती है. अपने कठिन विषयों को समझने के लिये किसी की मदद ले सकते हैं. घर के किसी काम में जीवनसाथी की मदद भी ले सकते हैं. रिश्ते बेहतर रहेंगे. छात्रों के लिए समय फेरबदल करने वाला हैं।

वृषभ – इ,उ,ए,ओ,वा,वि,वु,वे,वो

आज फिजूलखर्ची से बचें पुराना निवेश आकस्मिक लाभ देगा. इसके परिणामवश आप अपने व्यवसाय सम्बंधित समस्याओं को हल करने में पहल और अधिक रुचि ले सकते हैं। साझेदारी से आपके लिए कुछ बेहतरीन प्रोत्साहन मिल सकते हैं, जो आपकी वित्तीय स्थिति को काफी मजबूत कर सकते हैं. बच्चे जो भी कार्य करेंगे, चाहे पढ़ाई हो अथवा कोई भी अतिरिक्त गतिविधि वे हर जगह प्रशंसा अर्जित कर पाएंगे. परिवार के सदस्य का स्वास्थ्य आपको परेशान कर सकता हैं।

मिथुन – क,कि,कृ,घ,ड़,छ,के,को,ह

आप का व्यक्तित्व लोगों के लिए प्रेरणादायक रहेगा व्यापारी वर्ग और नौकरी वालों के लिए आज का दिन लाभदायी रहेगा. दिनचर्या में थोड़ा सा बदलाव भी आपको करना होगा. इससे आपकी समस्याएं सुलझ सकती हैं. कोई रचनात्मक काम भी आपके दिमाग आएगा या आपको दिया जा सकता है. उच्च अधिकारियों की मधुर सम्बन्ध रखे पदोन्नति होगी

कर्क – ही,हु,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो

आज भविष्य के लिए परिवार के साथ अहम समझौता करेंगे . आपको अपने करियर का कोई बड़ा फैसला लेना पड़ सकता है. ध्यान रहे जो भी करें, सोच-समझ कर करें. अगर आप नौकरी कर रहे हैं, तो अचानक से आपको किसी काम के लिये बाहर भेजा जा सकता है. काम की वजह से आप परिवार को पूरा समय नहीं दे पायेंगे, लेकिन परिवार का साथ बना रहेगा. आपको अपना काम समय पर पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए. किसी नये बिजनेस की शुरुआत के लिये पैसा उधार लेना पड़ सकता है.कन्या को मिष्ठान का सेवन कराए कार्य सिद्धि होगी।

सिंह – म,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे

आप आप को पुण्य कर्म करना चाहिए जिसके लिए आपकी सामाजिक लोकप्रियता बढ़ेगी. आपका पारिवारिक-जीवन आनंदित रहेगा और आप मानसिक रूप से शांत रहेंगे. आप दूसरों के लिए मददगार होंगे और लोग इसके लिए आपका बहुत सम्मान करेंगे. आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा और आपको सहकर्मियों से पूर्ण सहयोग और समर्थन प्राप्त होगा. आप नया कारखाना चालू कर सकते हैं आर्थिक लाभ होगा ।

कन्या – टो,प,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो

आज भविष्य के लिए आप निवेश की योजना बनाएंगे आपकी आर्थिक योजना को बल मिलेगा. पारिवारिक प्रतिष्ठा व मान-सम्मान में वृद्धि होगी. अचानक मिली कोई अच्छी ख़बर आपका उत्साह बढ़ा देगी. परिवार के लोगों के साथ इसे बांटना आपको उल्लास से भर देगा. एक-दूसरे का नजरिया समझकर व्यक्तिगत समस्याएँ सुलझाएँ. काम का दबाव रहेगा. लेकिन जीवनसाथी की सहयोग से आप हर तनाव से दूर होंगे. अपने व्यवहार मे खुलापन रखें रिश्तों मे टकराव से बचेंगे।

तुला – र,री,रू,रे,रो,ता,ति,तू,ते

सबसे पहले परिवार की जरुरतों को पूरा करना चाहिए जिससे घर का वातावरण खुशनुमा बना रहेगा. छोटे बच्चों को कोई बड़ा सरप्राइज भी मिल सकता है. कुछ लोग आपके किसी काम में मदद के लिये आगे आ सकते हैं. पैसों को लेकर आपकी चिंता दूर हो सकती है. आप किसी काम को नये सिरे से शुरू करने के बारे में विचार कर सकते हैं. सेहत को लेकर थोड़ा ध्यान रखने की जरूरत है. जरूरत से ज्यादा खाना आपको परेशानी में डाल सकता है. बच्चों को शाम के समय मंदिर लेकर जाए अच्छे संस्कार आंएगे।

वृश्चिक – तो,न,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू

कोई पुरानी सरकारी लेनदेन की फाईल वापस बाहर निकल सकती हैं आप मुश्किल मे आ सकते हैं वरिष्ठ नागरिकों को किसी भी प्रकार की भावनात्मक भागीदारी और लंबी यात्रा से बचना चाहिए. परिवार के सदस्यों के मध्य अशांति आप के लिए चिंता का विषय हो सकती है. सरकार या उच्च अधिकारियों से अच्छे समर्थन की उम्मीद न करें. शरीर के जोडों मे तकलीफ बनेगी ।

धनु – ये,यो,भ,भी,भू,धा,फा,ढा,भे

आज आप को दिया हुआ टारगेट जल्दी ही पूरा करेंगे आज आपको चिंतामुक्त होकर अपने क़रीबी दोस्तों और परिवार के बीच ख़ुशी के लम्हे तलाशने की जरूरत है. जीवनसाथी के साथ उलझे किसी मामले को प्यार से सुलझा लिए जाने की संभावना है. उच्च अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे. किसी प्रिय व्यक्ति से मिलने का सुख मिलेगा. आज बच्चों को सावधानी से रखें मौसमी बीमारियां परेशान कर सकती हैं. सर्दी ज़ुकाम जैसी समस्याए बनेगी।

मकर – भो,ज,जी,खि,खू,खे,खो,ग,गि

आप शिक्षा के क्षेत्र से जुडे हुए हैं तो प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से आपको आफर आ सकता हैं किसी जरूरी चीज को खरीदने में आपके पैसे खर्च हो सकते हैं. इस राशि के जो लेखक हैं, आपको किसी संस्था के द्वारा सम्मानित भी किया जा सकता है. माता-पिता का आशीर्वाद आपको मंजिल तक पहुंचाने में मदद कर सकता है. आपको किसी काम में पड़ोसियां का भी सहयोग मिल सकता है. बच्चे आपसे अपनी कोई बात शेयर कर सकते हैं. आपको उनकी बात ध्यान से सुननी चाहिए. लक्ष्मी जी का कनेर के पुष्प से पूजन करें आध्यात्मिक लाभ होगा ।

कुम्भ – गु,गे,गो,सा,सी,सू,से,सो,द

आज किसी मित्र का सहयोग मिल सकता हैं आप को सफलता पानी हो तो व्यावसायिक मोर्चे पर कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है. वरिष्ठों को खुश करना मुश्किल हो सकता है. इस अवधि के दौरान कड़ी मेहनत और विनम्र सफलता की कुंजी है. कयासों के लिए समय ठीक नहीं है. आपको पारिवारिक जीवन मे अशांति का सामना करना पड सकता है. आप को संयमित रहने की जरूरत हैं।

मीन – दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची

आज सामाजिक सेवा से आप को . यश और कीर्ति भी मिलेगी परिवार का वातावरण आनंदपूर्ण रहेगा. व्यर्थ की भागदौड़ से पारिवार में अशांति छा सकती है. किसी सौदे का सामना करने जा रहे लोग अपने डर पर काबू करने में सफल होंगे. मित्रों का काम में सहयोग मिलेगा. पीठ मे तकलीफ बन सकती हैं सेहत का ख्याल रखें. अधिक महनत करने से बचना चाहिए।

सोमवार का पंचांग

दिनांक : 18 मार्च 2025, मंगलवार
विक्रम संवत : 2081
मास : चैत्र,कृष्ण पक्ष
तिथि : चतुर्थी रात्रि 10:12 तक
नक्षत्र : स्वाति सायं 05:52 तक
योग : व्याघात सायं 04:42 तक
करण : बव प्रातः 08:52 तक
चन्द्रराशि : तुला
सूर्योदय : 06:21, सूर्यास्त 06:26 (हैदराबाद)
सूर्योदय : 06:25, सूर्यास्त 06:30 (बैंगलोर)
सूर्योदय : 06:17 , सूर्यास्त 06:22 (तिरुपति)
सूर्योदय : 06:13 , सूर्यास्त 06:18 (विजयवाडा)

शुभ चौघड़िया

चल : 09:00 से 10:30
लाभ : 10:30 से 12:00
अमृत : 12:00 से 01:30
राहुकाल : सायं 03:00 से 04:30
दिशाशूल : उत्तर दिशा
उपाय : गुड खाकर यात्रा का आरंभ करें
दिन विशेष : खरमास चालू है

* पाण्डित्य विषय में सम्पर्क करें *
पं.चिदम्बर मिश्र (टिल्लू महाराज)
हमारे यहाँ पाण्डित्य पूर्ण यज्ञ अनुष्ठान, भागवत कथा एवं मूल पारायण, वास्तुशान्ति, गृहप्रवेश,शतचंडी, विवाह, कुंडली मिलान, नवग्रह शान्ति, ज्योतिष सम्बन्धी शंका समाधान किए जाते हैं
फक्कड़ का मन्दिर, रिकाबगंज, हैदराबाद, (तेलंगाना)
9246159232, 9866165126
chidamber011@gmail.com

भारत मंडपम की तर्ज पर बनेगा राजस्थान मंडपम

भजनलाल ने अधिकारियों के साथ की चर्चा

जयपुर,17 मार्च (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था को 350 बिलियन डॉलर बनाने के लक्ष्य की पूर्ति के लिए राज्य सरकार औद्योगिक, पर्यटन एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रोत्साहन के लिए कृतसंकल्पित होकर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि राजस्थान मंडपम के माध्यम से व्यापारिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध करवायी जाएगी, ताकि प्रदेश बड़े-बड़े आयोजनों के लिए पहली पसंद बनने के साथ ही यहां कॉन्फ्रेंस टूरिज्म को बढ़ावा मिल सके।

शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर जयपुर में प्रस्तावित राजस्थान मण्डपम की कार्ययोजना के संबंध में आयोजित उच्चस्तरीय बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राजस्थान मंडपम में हॉलिस्टिक अप्रोच के साथ आवश्यक व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं की पुख्ता कार्ययोजना बनाई जाए ताकि यहां पर छोटे से लेकर बड़े प्रकार के आयोजन सुगमता से हो सके।

शर्मा ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'विकास के साथ विरासत भी' के संकल्प को ही आधार मानते हुए राजस्थान मण्डपम में प्रदेश के हैरिटेज के साथ हाईटेक सुविधाएं विकसित की जाए, जिससे यह स्थल सांस्कृतिक और व्यावसायिक आयोजनों के साथ ही स्थानीय कला, संस्कृति और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख आकर्षण केन्द्र भी हो एवं यह प्रदेश के लिए गर्व का विषय भी बन सके। बैठक में उन्होंने विकसित होने वाले कन्वेंशन सेन्टर, एक्जीबिशन सेन्टर, मीटिंग हॉल एवं आगन्तुकों के लिए पार्किंग सुविधाओं को विकसित किए जाने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। बैठक में राजस्थान मंडपम के निर्माण की प्रस्तावित कार्ययोजना के बारे में प्रस्तुतीकरण भी दिया गया। इस दौरान अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल, प्रमुख शासन सचिव उद्योग अजिताभ शर्मा, प्रमुख सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) आलोक गुप्ता व रीको के वरिष्ठ अधिकारी सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने ली अधिकारियों की बैठक

विभिन्न योजनाओं की समीक्षा कर दिए जरूरी दिशा-निर्देश

जयपुर,17 मार्च (एजेंसियां)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव कुलदीप रांका ने सोमवार को सामाजिक न्याय, विशेष योग्यजन निदेशालय, बाल अधिकारिता और अनुजा निगम के अधिकारियों के साथ बैठक कर प्रदेश भर में संचालित विभिन्न योजनाओं की समीक्षा करते हुए जरूरी दिशा-निर्देश दिए।

रांका ने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के मुख्यालय अम्बेडकर भवन में हुई बैठक में बजट घोषणा वर्ष 2024-25 एवं 2025-26 के क्रियान्वयन की समीक्षा करते हुए कहा कि अधिकारीगण बजट घोषणाओं को प्राथमिकता पर लेते हुए उन्हें पूर्ण करने में जुट जाएं। उन्होंने कहा कि बजट घोषणाओं की तय समयावधि में धरातल पर उतरने से ही आमजन को लाभ मिल सकता है।

रांका ने बैठक में 30 मार्च को राजस्थान दिवस के मौके पर होने वाले कार्यक्रमों के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश जारी किए गए। उन्होंने उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) योजना, मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना, नशामुक्त भारत अभियान, स्वयं सिद्धा आश्रम, कामकाजी महिला छात्रावास, वृद्धाश्रम तथा मुख्यमंत्री पुनर्वास गृहों की प्रगति की समीक्षा कर योजनाओं का अधिकाधिक प्रचार प्रसार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य वंचित तबके को समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है। अधिकारी स्वप्रेरणा और संवेदनशीलता के साथ योजनाओं के क्रियान्वयन में लग जाएंगे तो जरूरतमंदों को जल्द लाभ मिल सकेगा।

मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से दिया कुमारी ने की मुलाकात

राजस्थान पर्यटन स्थलों के संरक्षण एवं संवर्धन से जुड़े बिंदुओं पर हुई चर्चा

जयपुर,17 मार्च (एजेंसियां)। केंद्रीय पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के साथ उनके नई दिल्ली स्थित कार्यालय में सोमवार को उपमुख्यमंत्री एवं पर्यटन मंत्री दिया कुमारी ने भेंट कर राजस्थान पर्यटन विकास, पर्यटन स्थलों के संरक्षण एवं संवर्धन से जुड़े कई बिंदुओं पर चर्चा की, जिनको केंद्रीय पर्यटन मंत्री ने पूरी सकारात्मकता से सुना और चर्चा के बिंदुओं को अमली जामा पहनाने का आश्वासन भी देने के साथ महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत से मुलाकात कर पर्यटन विभाग के अधिकारियों के साथ हुई मीटिंग के बिंदुओं को समाहित करते हुए, राजस्थान में पर्यटन के विकास, नए आयाम तलाशने, सीमावर्ती इलाकों में पर्यटन को बढ़ावा देने, ट्राइबल टूरिज्म और रूरल टूरिज्म को लेकर चर्चा की। साथ ही राजस्थान में माइस सेंटर्स के विकास को लेकर भी बातचीत हुई।

उपमुख्यमंत्री ने प्रदेश के पर्यटन को बढ़ाने के साथ ही शेखावाटी इलाके में हवेलियों के संरक्षण एवं पर्यटन की अपार संभावनाओं पर भी चर्चा की। राजस्थान में पर्यटन की विभिन्न मांगों को लेकर उपमुख्यमंत्री ने केंद्रीय पर्यटन मंत्री को पत्र भी सौंपा।

राजस्थान प्रशासनिक और लेखा सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों ने की राज्यपाल से मुलाकात

जयपुर,17 मार्च (एजेंसियां)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा है कि प्रशासनिक और लेखा सेवा में राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए अधिकारी पूर्ण पारदर्शिता की कार्य की संस्कृति का विकास करें। उन्होंने समय के साथ जीवन प्रबंधन को जोड़ते हुए नैतिक मूल्यों के लिए कार्य करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि राजकीय सेवा में आने के बाद अधिकारियों को यह चाहिए कि वे जन कल्याण से जुड़े कार्यों और विकास योजनाओं का प्रभावी रूप में क्रियान्वयन करें।

बागडे सोमवार को राजभवन में राजस्थान प्रशासनिक और लेखा सेवा के वर्ष 2024 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे। राजभवन में अतिरिक्त मुख्य सचिव और हरिश्चन्द्र माथुर राज्य लोक प्रशासन संस्थान की महानिदेशक श्रेया गुहा की पहल पर इन अधिकारियों की राज्यपाल से मुलाकात हुई। इस दौरान

राज्यपाल ने प्रशिक्षु अधिकारियों के कार्य और प्रशिक्षण के बारे में जानकारी ली तथा कहा कि राज्य और देश के विकास में वे भविष्य में सार्थक भूमिका निभाएं। उन्होंने लोकसभा के पहले अध्यक्ष रहे गणेश वासुदेव मावलंकर का उदाहरण देते हुए कहा कि संसदीय परम्पराओं और मर्यादाओं के साथ लोक प्रशासन की देश में उन्होंने नींव रखी। उन्होंने आचार्य चाणक्य और अन्य महापुरुषों का संदर्भ देते हुए कहा कि राजकीय सेवा में ईमानदारी और राजकीय हित को प्रमुखता देते हुए कार्य किया जाए। उन्होंने कहा कि जीवन में भोजन के साथ हर स्तर पर व्यवस्थित नियोजन और प्रबंधन यदि आप करते हैं, तभी पदस्थापित पद पर अपने आपको प्रभावी रूप में साबित कर पाएंगे।राज्यपाल के सचिव डॉ. पृथ्वीराज ने अधिकारियों से पूर्ण निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ काम करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सकारात्मक सोच जरूरी है। अधिकारी राजकीय हित में अपनी पूर्ण क्षमता के साथ काम करें। आरंभ में हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशासन संस्थान की अतिरिक्त महानिदेशक श्रीमती शैली कृष्णा ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा और लेखा सेवा के प्रशिक्षु 107 अधिकारियों के प्रशिक्षण और ओटीएस की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

हरियाणा सरकार ने किया 2.5 लाख करोड़ से ज्यादा का बजट पेश

महिला सशक्तिकरण के लिए 'लाडो लक्ष्मी योजना'

चंडीगढ़,17 मार्च (एजेंसियां)। हरियाणा सरकार ने 2025-26 के लिए 2.5 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया है, जो पिछले साल के 1 लाख 80 हजार 313 करोड़ रुपये से 13.70 प्रतिशत अधिक है। प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सैनी ने यह बजट विधानसभा में पेश करते हुए राज्य के आर्थिक विकास और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा की।

बजट पेश करते हुए मुख्यमंत्री ने राज्य की आर्थिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि राज्य की प्रति व्यक्ति आय 3 लाख 53 हजार 182 रुपये हो गई है, जो 2014-15 में 1 लाख 47 हजार 382 रुपये थी।

मुख्यमंत्री नायब सैनी ने बजट के दौरान एक बड़ी घोषणा करते हुए हरियाणा की महिलाओं के लिए 'लाडो लक्ष्मी योजना' की शुरुआत की। इस योजना के तहत हर महीने महिलाओं को 2,100 रुपये की वित्तीय सहायता

दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि इस योजना के लिए प्रारंभ में 5,000 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया गया है। अगर इस योजना को बढ़ावा देने के लिए और अधिक धन की आवश्यकता पड़ी, तो सरकार उसका भी प्रबंध करेगी। सरकार इसके लिए मापदंड तैयार कर रही है और इस मुद्दे पर बजट चर्चा के दौरान और अधिक जानकारी दी जाएगी।

मुख्यमंत्री नायब सैनी ने यह भी कहा कि विधायक शकुंतला खटक ने सुझाव दिया था कि सभी महिलाओं को इस योजना में शामिल किया जाए, लेकिन उनका कहना था कि विधायकों को वेतन मिलता है, तो उन्हें इस योजना का लाभ लेने की जरूरत नहीं है। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि सरकार इस योजना के तहत महिलाओं की अधिकतम संख्या को कवर करने का प्रयास करेगी।

सत्ता पक्ष ने मुख्यमंत्री के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए मेज थपथपाई। वहीं, विपक्ष के नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने एक हल्के-फुल्के अंदाज में कहा कि मंत्री अरविंद शर्मा जलेबी लेकर आए हैं और वह अपने हाथ से विधायक रामकुमार गौतम को जरूर खिलाएं।

मुख्यमंत्री नायब सैनी ने लगभग ढाई घंटे तक बजट पेश किया। बजट के दौरान उन्होंने राज्य के विकास कार्यों, स्वास्थ्य, शिक्षा, और महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाओं की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि राज्य सरकार का लक्ष्य आने वाले वर्षों में हरियाणा को आर्थिक रूप से समृद्ध राज्य बनाना है।

राज्यपाल को हरियाणा लोक सेवा आयोग ने 58 वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की

चंडीगढ़,17 मार्च (एजेंसियां)। हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय से आज राजभवन में हरियाणा लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष आलोक वर्मा के नेतृत्व में आयोग के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 323 की अनुपालना में राज्यपाल को वर्ष 2023-2024 की 58वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उन्होंने राज्यपाल को 58वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि रिपोर्ट में आयोग द्वारा किए गए कार्यों का विस्तृत विवरण दर्शाया गया है। उन्होंने राज्यपाल को रिपोर्ट के कुछ मुख्य बिंदुओं से अवगत करवाते हुए बताया कि आयोग ने वर्ष 2023-24 में विभिन्न पदों के लिए कुल 50 विज्ञापन जारी किए। आयोग ने वर्ष 2023-24 में रिकार्ड भर्ती कर कुल 1831 उम्मीदवारों को ग्रुप-ए और बी के पदों पर चयन करते हुए अनुशंसा सरकार को भेजी गई। आयोग ने इसके लिए वर्ष भर में 23 छटनी परीक्षाएं, 25 विषय ज्ञान परीक्षाएं व 62 साक्षात्कार आयोजित किए हैं।

आयोग के सचिव मुकेश कुमार आहुजा ने बताया कि आयोग का मुख्य कार्य सरकार की मांग के अनुसार ग्रुप-ए और बी के विभिन्न पदों के लिए उम्मीदवारों का चयन/भर्ती करना है। इसके अतिरिक्त आयोग सरकार को हरियाणा सिविल सेवाएं (दण्ड एवं अपील) नियम-2016 के अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाही के मामलों व विभिन्न विभागों के सेवा नियम बनाने व उनमें संशोधन करने के मामलों में भी अपना परामर्श देता है। इन सभी मामलों का विवरण भी वार्षिक रिपोर्ट में शामिल है।

भारतीय सेना देश की रीढ़ है : बंडारू दत्तात्रेय

चंडीगढ़,17 मार्च (एजेंसियां)। हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने राष्ट्र के प्रति अनुकरणीय सेवा के लिए भारतीय सेना और पूर्व सैनिकों की सराहना करते हुए कहा कि हमारी सेना देश की रीढ़ की हड्डी है, जो अटूट समर्पण के साथ इसकी संप्रभुता और अखंडता की रक्षा करती है।

राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय आज सोमवार को राजभवन में आयोजित सैनिकों, पूर्व सैनिकों और वीर नारियों के साथ संवाद कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। दत्तात्रेय ने कहा कि सशस्त्र बल रक्षा के क्षेत्र में अपनी भूमिका से परे, आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने, आपदा राहत में सहायता करने और दूरदराज के क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास में योगदान देकर राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अवसर पर लद्दाख के उपराज्यपाल

ब्रिगेडियर (डॉ) बीडी मिश्रा (सेवानिवृत्त) और उनकी पत्नी श्रीमती नीलम मिश्रा भी मौजूद रही।

राज्यपाल ने कहा कि वीरता और प्रतिबद्धता के साथ सेवा करने वाले पूर्व सैनिक विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व, युवाओं को सलाह देने और कल्याणकारी पहलों का समर्थन करके समाज में योगदान देना जारी रखते हैं। उन्होंने कहा कि उनका बलिदान और दृढ़ता पीढ़ियों को प्रेरित करती है, देशभक्ति और निस्वार्थ सेवा की भावना को दर्शाती है जो राष्ट्र के ताने-बाने को मजबूत करती है। उन्होंने कहा कि हमारे सशस्त्र बलों में राष्ट्रवाद की भावना बहुत प्रेरणादायक है।

राज्यपाल दत्तात्रेय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में भारत का रक्षा क्षेत्र तेजी से आत्मनिर्भर बन रहा है। केंद्र सरकार ने वन रैंक-वन पेंशन को लागू कर सैनिकों व पूर्व सैनिकों का सम्मान बढ़ाया है। राज्यपाल ने केंद्र सरकार की अग्निवीर योजना के लाभों पर भी प्रकाश डाला।

लद्दाख के उपराज्यपाल ब्रिगेडियर (डॉ) बीडी मिश्रा (सेवानिवृत्त) ने भी ओआरओपी योजना को लागू करने की प्रतिबद्धता को पूर्ण करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सराहना की, जो जवानों के लिए वरदान साबित हुई है। एक सेवारत सैन्य अधिकारी के रूप में अपने अनुभव साझा करते हुए, एलजी ब्रिगेडियर (डॉ) बीडी मिश्रा ने कहा कि हमने कभी अपने बारे में नहीं सोचा, बल्कि राष्ट्र और तिरंगे के बारे में सोचा। हमने सभी बाधाओं और चुनौतियों के खिलाफ अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। उन्होंने सैनिकों और पूर्व सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा कि आपने युद्ध लड़े हैं, आप बहादुर हैं। आइए हम अपने साथी नागरिकों के लिए कुछ करें। समाज को कुछ देने के लिए केवल थोड़ा सा प्रयास करना पड़ता है, जिसके लिए हमें परिस्थितियों को समझने की जरूरत है।

इस अवसर पर अपने अनुभव साझा करने वाले जवानों और वीर नारियों में कमलजीत कौर शेखों, कर्नल ओम कक्कड़ और ब्रिगेडियर दिलबाग सिंह शामिल थे। इस अवसर पर उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों में हरियाणा के राज्यपाल के सचिव अतुल द्विवेदी, हरियाणा के राज्यपाल के एडीसी स्क्वाड्रन लीडर मोहन कृष्ण पी, एलजी लद्दाख के एडीसी अब्बास, एलजी लद्दाख के संपर्क अधिकारी और लेफ्टिनेंट कर्नल बीके दास शामिल रहे।

शुभ लाभ DAILY
खबरें जो सोच बदल दे
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

राबड़ी देवी ने नीतीश सरकार पर बोला हमला

बिहार में दो दिनों में 22 हत्याएं हुईं

पटना (एजेंसियां)।

होली की छुट्टियों के बाद फिर से बिहार विधानमंडल का बजट सत्र शुरू हो रहा है। आज प्रश्न-ोत्तर काल में अरुण शंकर प्रसाद, हरि भूषण ठाकुर बचौल और सुधांशु शेखर से प्राप्त ध्यानाकर्षण सूचना पर पंचायती राज विभाग की ओर से वक्तव्य दिया जाएगा। इधर, विपक्ष राज्य में बढ़ते अपराध, पुलिसकर्मियों पर हमले, बीपीएससी 70वीं परीक्षा, कार्यपालक सहायक और रसोईया के वेतन के मुद्दे पर सरकार को घेरा।

विपक्ष के विधायकों ने विधानसभा सभा परिसर में नीतीश सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। इधर, सत्ता पक्ष के विधायक लालू प्रसाद यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव की होली पर किए गए

बयान और गतिविधियों को लेकर राष्ट्रीय जनता दल को घेरा। साथ ही बढ़ते अपराध पर लगाम लगाने के लिए योगी मॉडल लागू करने की बात कही।

बिहार में होली और रमजान के दौरान अपराधी घटनाओं को लेकर भाजपा विधायक हरिभूषण ठाकुर बचौल ने कहा कि बिहार में पूर्ण रूप से सुशासन की सरकार है और हर घटना पर सरकार और पुलिस प्रशासन की पूरी नजर है किसी भी स्थिति में अपराधी बक्शी नहीं जाएंगे। वहीं राजद विधायक मुकेश रौशन ने एनडीए सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि एनडीए सरकार में अपराधी बेखौफ हो चुके है। पहले आम लोगों को निशाना बनाते थे अब तो सीधे पुलिस की ही हत्या कर रहे हैं। सरकार अपराध पर अंकुश लगाने में नाकाम है।

विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष राबड़ी देवी ने नीतीश सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि बिहार में होली में दो दिन में 22 हत्याएं हुई हैं। इसे कहते हैं सुशासन की सरकार है। राज्य में बहन बेटियों के साथ दरिंदगी हो रही है। पुलिस पर लगातार हमले हो रहे हैं। दरोगा और सिपाही की हत्या हो रही है। जब सुरक्षा करने वाले की ही हत्या हो रही है तो आम लोगों का क्या होगा? उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि आज तो मंगलराज है। लेकिन, कथित जंगलराज में दरोगा-सिपाही मारे नहीं जाते थे।

जदयू का विपक्ष पर पलटवार

बिहार में कानून का राज एक दिन भी नहीं लगा कर्फ्यू

दरभंगा (एजेंसियां)।

बिहार में हाल ही में हुई पुलिसकर्मियों की हत्या को लेकर विपक्ष जहां नीतीश सरकार पर कानून-व्यवस्था को लेकर हमला बोल रहा है। वहीं, जदयू के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय झा ने विपक्ष पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि बिहार में कानून का राज है, यही वजह है कि बीते 20 वर्षों में एक दिन के लिए भी कर्फ्यू लगाने की नौबत नहीं आई है।

जानकारी के मुताबिक, संजय झा शनिवार को दरभंगा के मनोकामना मंदिर परिसर में एक हिंदी फिल्म की शूटिंग के उद्घाटन समारोह में पहुंचे थे। उन्होंने मीडिया से बातचीत में दरभंगा, अररिया और मुंगेर में पुलिसकर्मियों की हत्या पर दुख जताया, लेकिन साथ ही बिना किसी राजनीतिक दल का नाम लिए विपक्ष पर निशाना भी साधा। उन्होंने कहा कि घटनाएं कहीं भी हो सकती हैं, लेकिन फर्क यह है कि बिहार पुलिस तुरंत एक्शन में आती है। दोनों घटनाओं में आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है। आप लोग पत्रकार हैं, जरा यह भी देखिए कि वे गिरफ्तार कौन लोग हैं। इससे बहुत कुछ साफ हो जाएगा।

इस मौके पर संजय झा ने दरभंगा में हिंदी फिल्म की शूटिंग शुरू होने को एक ऐतिहासिक क्षण बताया। उन्होंने कहा कि मुंबई से कलाकार और निर्माता अब बिहार आकर फिल्में बना रहे हैं, यह इस बात का प्रमाण है कि बिहार की कानून-व्यवस्था पहले से कहीं बेहतर हुई है। उन्होंने कहा कि कभी लोग बिहार आने से डरते थे, लेकिन अब यहां फिल्मों की शूटिंग हो रही है। यह मिथिला क्षेत्र के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

उन्होंने यह भी कहा कि आने वाले समय में मिथिला में एक फिल्म सिटी की स्थापना की जाएगी, जिससे फिल्म उद्योग को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय युव-ाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। फिल्म शूटिंग से जुड़े लोगों के लिए सरकार द्वारा लाई गई योजनाओं का भी उन्होंने जिक्र किया और बताया कि सरकार इस क्षेत्र को लेकर गंभीर है।

फिल्म निर्माण से जुड़े लोगों ने भी दरभंगा में शूटिंग को लेकर खुशी जताई और कहा कि बिहार अब बदल रहा है। यहां संस्कृति, प्राकृतिक सौंदर्य और पारंपरिक विरासत का अनूठा संगम है। मिथिला की धरती पर फिल्म की पूरी शूटिंग की जाएगी। फिल्म की कहानी मनोरंजन से भरपूर है और दर्शकों को यह बेहद पसंद आएगी।

भीषण अग्निकांड में 12 से अधिक घर जलकर हुए खाक

15 लाख रुपये का नुकसान, चूल्हे की चिंगारी से लगी आग

मुज्जफरपुर (एजेंसियां)।

मुजफ्फरपुर जिले के मनियारी थाना क्षेत्र के विशुनपुर वार्ड 12 टोला में भीषण अग्निकांड की घटना सामने आई है। बताया जा रहा है कि खाना बनाने के दौरान चूल्हे से निकली चिंगारी ने विकराल रूप ले लिया, जिससे दर्जनों घर जलकर खाक हो गए।

इस अग्निकांड में 15 लाख रुपये से अधिक की संपत्ति का नुकसान हुआ है।

गांव में कई घरों में शादी की तैयारियां चल रही थीं, जिससे बड़ी मात्रा में कीमती सामान, गहने, अनाज और अन्य वस्तुएं भी जलकर राख हो गई। इस घटना के बाद पूरे गांव में कोहराम

मच गया और पीड़ित परिवारों में मायूसी छा गई है।

सूचना मिलते ही मौके पर पुलिस और अग्निशमन विभाग की टीम पहुंची। फायर ब्रिगेड कर्मी बिट्टू कुमार ने बताया कि तीन दमकल गाड़ियों की मदद से ग्रामीणों के सहयोग से आग पर दो घंटे में काबू पा लिया गया। गनीमत रही कि इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ।

अग्निकांड में कांति देवी, रेखा देवी, बिहारी राम, रणजीत राय, कृष्णा राम, रंजीत राम, महेश राम और मुकेश राम सहित कई परिवारों के घर जलकर खाक हो गए। प्रशासन की ओर से नुकसान का आकलन किया जा रहा है और पीड़ित परिवारों को सहायता देने की प्रक्रिया शुरू की गई है।

होली के बहाने घर में घुसे बदमाशों का परिवार पर टूटा कहर, पिता की पीट-पीट कर हत्या, बेटा गंभीर घायल

दरभंगा (एजेंसियां)।

मधुबनी जिले के खुटौना थाना क्षेत्र से एक हृदय विदारक और भयावह घटना सामने आई है, जिसने पूरे इलाके को दहशत में डाल दिया है। होली के त्योहार के दिन जिस घर में खुशियां मनाई जानी थीं, वहां लोहे की रॉड और धारदार हथियारों से लैस हमला-वरों ने कहर बरपा दिया। इस हमले में एक बुजुर्ग की पीट-पीट कर हत्या कर दी गई, जबकि उनका बेटा गंभीर रूप से घायल हो गया।

जानकारी के मुताबिक, यह सनसनीखेज घटना खुटौना थाना क्षेत्र के झांझपट्टी डोमन गांव की है। जहां शुक्रवार की देर शाम कुछ असामाजिक तत्वों ने घर में घुसकर हमला किया। घायल पुत्र रघुवीर साह ने थाने में दिए अपने

आवेदन में नौ लोगों को नामजद आरोपी बनाया है। पुलिस ने उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

पीड़ित रघुवीर साह का आरोप है कि हमलावर होली खेलने के बहाने उनके घर आए, लेकिन असल मकसद पुरानी रंजिश का बदला लेना था। उन्होंने बताया कि राजीव कुमार यादव, गणेश कुमार यादव, राजेश कुमार यादव, आशीष यादव, सुरेंद्र यादव, कारी यादव, बूढ़ानाथ यादव, राम पुकार साहू और प्रियेश गोहित सहित अन्य ने मिलकर उनके घर पर हमला किया।

उन्होंने बताया कि हमलावरों के पास लोहे की रॉड, लाठियां और धारदार हथियार थे। पहले रघुवीर साह पर हमला किया गया। जब उनके पिता सत्यनारायण साहू ने उन्हें बचाने की कोशिश की, तो हमलावरों ने उन पर भी ताबड़तोड़ वार किए, जिससे वे बुरी तरह घायल हो गए।

घायल पिता-पुत्र को तत्काल खुटौना प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) ले जाया गया। लेकिन डॉक्टरों ने गंभीर स्थिति देखते हुए दोनों को मधुबनी रेफर कर दिया। इलाज के दौरान शनिवार शाम को सत्यनारायण साहू ने दम तोड़ दिया। उनकी मौत से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

घटना के बाद से गांव में तनाव और दहशत का माहौल है। परिजन जहां शव से लिपट कर बिलख रहे हैं, वहीं स्थानीय लो-गों में खुटौना थाना पुलिस की निष्क्रियता को लेकर गुस्सा है। लोग थाना प्रभारी और सीएचसी के चिकित्सकों की भूमिका पर भी सवाल उठा रहे हैं।

हालात को देखते हुए पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस का कहना है कि आवेदन के आधार पर नामजद आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापामारी शुरू कर दी गई है। थानाध्यक्ष ने आश्वासन दिया है कि घटना में शामिल किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा।

वहीं, घायल रघुवीर साह ने न्याय की गुहार लगाई है और सभी आरोपियों को जल्द गिरफ्तार करने की मांग की है। परिजनों का कहना है कि अगर समय रहते प्रशासन ने कदम नहीं उठाया, तो स्थिति और बिगड़ सकती है।

सदर अस्पताल में अव्यवस्था से मरीज परेशान

खगड़िया (एजेंसियां)।

खगड़िया सदर अस्पताल जिले का सबसे बड़ा अस्पताल होने के बावजूद अव्यवस्था का शिकार है। ओपीडी में डॉक्टरों की अनुप-स्थिति से मरीजों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सोमवार को भी यही स्थिति बनी रही ओपीडी के बाहर मरीजों की भीड़ जमा रही, लेकिन डॉक्टर नदारद थे। अव्यवस्था के बीच सुरक्षा गार्डों को मरीजों को धक्का देते देखा गया, जिससे स्थिति और बिगड़ गई। बछौता के 52 वर्षीय वृद्ध मरीज ने बताया कि वह करीब एक घंटे से डॉक्टर के इंतजार में खड़े हैं, लेकिन डॉक्टर बाहर घूमने चले गए हैं। रांको से आई एक महिला ने कहा कि ओपीडी के बाहर इतनी भीड़ है कि महिलाओं को आगे बढ़ने में भी दिक्कत हो रही है।

सदर अस्पताल में इमरजेंसी सेवा 24 घंटे उपलब्ध रहती है, जबकि ओपीडी सेवा सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक संचालित होती है। हालांकि, मरीजों का कहना है कि डॉक्टर अक्सर 10 बजे के बाद ही ओपीडी में पहुंचते हैं, जिससे मरीजों को लंबा इंतजार करना पड़ता है। इसके बावजूद अस्पताल प्रशासन लापरवाह डॉक्टरों के खिलाफ कोई ठोस कदम नहीं उठा रहा है।

रोजाना 700 से 800 मरीज इलाज के लिए अस्पताल पहुंचते हैं, लेकिन बैठने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने के कारण उन्हें फर्श पर बैठने को मजबूर होना पड़ता है।

अस्पताल प्रबंधन का कहना है कि मरीजों को कतार में लगाने के लिए सुरक्षा गार्डों को तैनात किया गया है, और यदि वे अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभा रहे हैं तो उनके खिलाफ कार्रवाई होगी। वहीं, ओपीडी में डॉक्टरों की देरी पर अस्पताल प्रबंधन ने इसे सिविल सर्जन के अधिकार क्षेत्र का मामला बताया।

लॉकअप में युवक की पिटाई का मामला पहुंचा मानवाधिकार आयोग, अब पुलिस से होगी पूछताछ

मुज्जफरपुर (एजेंसियां)।

मुजफ्फरपुर जिले के पानापुर ओपी में लॉकअप के अंदर युवक की बेरहमी से पिटाई का मामला अब मानवाधिकार आयोग तक पहुंच गया है।

पीड़ित परिवार ने अधिवक्ता एस. के. झा के माध्यम से बिहार राज्य मानवाधिकार आयोग (बीएचआरसी) और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचअ-ारसी) में दो अलग-अलग याचिकाएं दायर की हैं।

पुलिस ने पहले बाइक चोरी के आरोप में अमन कुमार नामक युवक को हिरासत में लिया था। जब उसके जीजा रौशन प्रताप सिंह उससे मिलने थाने पहुंचे, तो पुलिस ने उन्हें भी लॉकअप में डाल दिया और बेरहमी से पीटा।

पीड़ित परिवार ने आरोप लगाया कि पानापुर ओपी प्रभारी राजबल्लभ यादव ने अमन कुमार को छोड़ने के बदले एक लाख रुपये की मांग की। जब रौशन प्रताप सिंह ने इसका विरोध किया, तो उन्हें भी हाजत में बंद कर उनका मुंह, हाथ और पैर बाँधकर बेरहमी से मारपीट की गई।

पीड़ित परिवार का कहना है कि थाने से रिहा करने के लिए प्रभारी ने 1 लाख रुपये मांगे थे, जिसमें से 70 हजार रुपये लेने के बाद दोनों को छोड़ा गया। इसके अलावा, पुलिस ने रौशन प्रताप सिंह की अपाचे बाइक जब्त कर ली और उसे लौटाने के लिए 30 हजार रुपये की अतिरिक्त मांग कर रही है।

मारपीट में गंभीर रूप से घायल रौशन प्रताप सिंह को पहले प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, काँटी ले जाया गया, जहाँ से उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए एसकेएमसीएच, मुजफ्फरपुर रेफर कर दिया गया। फिलहाल उनका इलाज एसकेएमसीएच में चल रहा है, और उनकी हालत चिंताजनक बनी हुई है।

मानवाधिकार अधिवक्ता एस. के. झा ने इस मामले को मानवाधिकार उल्लंघन की गंभीर श्रेणी में रखते हुए उच्चस्तरीय जाँच की माँग की है।

उनके अनुसार, पुलिस किसी भी आरोपी से पूछताछ कर सकती है, लेकिन हिरासत में इस तरह की पिटाई न केवल मानवाधिकारों का हनन है, बल्कि यह जघन्य अपराध की श्रेणी में आता है। एनएचआरसी और बीएचआरसी ने इस मामले पर संज्ञान लिया है और जल्द ही पुलिस से पूरी रिपोर्ट तलब की जाएगी। पूर्व में भी मानवाधिकार आयोग ऐसे मामलों में पुलिस अधिकारियों को तलब कर चुका है। उम्मीद की जा रही है कि इस मामले में भी पीड़ित को न्याय मिलेगा।

पुलिस पर फिर हमला, मारपीट की सूचना पर पहुंची टीम से हथियार छीनने की कोशिश

मुजफ्फरपुर (एजेंसियां)।

बिहार में अपराधियों के हौसले बुलंद होते जा रहे हैं। गया, अररिया, मुंगेर, भागलपुर, मधुबनी और पटना के बाद अब सोनपुर में भी पुलिस टीम पर हमला किया गया है। इस घटना को लेकर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। घटना सोनपुर थाना क्षेत्र के जैतिया गांव की है, जहां दो पक्षों के बीच मारपीट की सूचना पर पुलिस जांच के लिए पहुंची थी। जांच के दौरान कुख्यात बदमाश और उसके गुर्गों ने पुलिस पर हमला कर दिया। हमलावरों ने पुलिसकर्मियों से हथियार छीनने की कोशिश की और विरोध करने पर उनके साथ मारपीट की, यहां तक कि उनकी वर्दी तक फाड़ दी। इस हमले में एएसआई विनय कुमार और दो सिपाही घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही सोनपुर थानाध्यक्ष राजनंदन भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस को देखते ही हमलावर भागने लगे, लेकिन पुलिस ने कार्रवाई करते हुए कुख्यात अपराधी मंटू गोप, उसके भाई बबलू राय और परवेजाबाद के राकेश कुमार उर्फ मनु को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अब इस मामले में शामिल अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी कर रही है।

घायल एएसआई विनय कुमार के बयान पर प्राथमिकी दर्ज की गई है। उन्होंने बताया कि शुक्रवार को पुलिस बल के साथ गौतम चौक के पास गश्त कर रहे थे, तभी जैतिया गांव में दो पक्षों के बीच मारपीट की सूचना मिली। जब पुलिस टीम मौके पर पहुंची और वाहन से उतरी, तो अचानक एक दर्जन से अधिक लोगों ने ईट-पत्थर और लाठी-डंडों से हमला कर दिया।

मकई के खेत में मिला युवती का शव

दरभंगा (एजेंसियां)।

समस्तीपुर जिले में उजियारपुर थाना क्षेत्र के चांद चौर गांव स्थित एक मकई के खेत से एक युवती का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई।

युवती की पहचान दलसिंह सराय थाना क्षेत्र के चक बहुउद्दीन गांव के संजीत दास की पत्नी आभा देवी 35 वर्ष के रूप में की गई है।

हालांकि, वह अपने मायके उजियारपुर थाना क्षेत्र के वाजिदपुर गांव में बूढ़ी मां के साथ रहती थी। आभा का पति प्रदेश में रहता है। उसके पिता भी घर पर नहीं हैं। घटना की सूचना पर उजियारपुर थाना के साथ ही एसपी के नेतृत्व में पुलिस की टीम मौके पर पहुंच कर छानबीन में जुट गई है। युवती को बेहरहमी तरीके से शरीर में कई जगहों पर चाकू गोद करवा गला रेत हत्या की गई है।

घटना के संबंध में बतलाया गया है कि महिला रविवार शाम घर से निकली थी। लेकिन रात भर घर नहीं लौटी। घर में बूढ़ी मां आसपास के लोगों को सूचना दी। गांव के लोग इधर-उधर खोजबीन कर ही रहे थे।

इसी दौरान मक्का के खेत में शव मिलने की जानकारी मिली। गांव के लोग जब मौके पर पहुंचे तो देखा कि यह आभा नामक युवती का शव है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक गोपाल अग्रवाल द्वारा श्री शेषसाई इंटरप्राइजेज प्लॉट नंबर. 98/1, को-ऑपरेटिव इंडस्टीयल एस्टेट, गांधी नगर, बालानगर के पास मेडचेल-मल्काजगिरि जिला. हैदराबाद 500037, तेलंगाना स्टेट से मुद्रित तथा प्लॉट नं. ए-23/5 तथा 6, दूसरा माला, ओपीआईई, बालानगर, हैदराबाद, मेडचल मलकाजगिरी जिला, तेलंगाना राज्य-500037 से प्रकाशित। आर. एन. आई रजिस्टर्ड नं. TELHIN/2019/78163, फोन नं. 040-29551811. E-mail : dailyshubhlabh@gmail.com